हिन्दुस्तान शताब्दी की ओर-2

हमारे प्रधानमंत्री हमारा विकास



आधुनिक भारत की निर्मिति की जो शुरुआत पंडित जवाहरलाल नेहरू ने की थी, उसे आगे बढ़ाते हुए देश के परवर्ती प्रधानमंत्रियों ने कई स्तरों पर अभूतपूर्व प्रयास किए और सफलता प्राप्त की। यहां हम याद कर रहे हैं कार्यकाल पूरा करने वाले प्रधानमंत्रियों की प्रमुख उपलब्धियों को

जवाहरलाल नेहरू

स्वतंत्रता उपरांत देश के लोकतांत्रिक स्वरूप को बनाए रखने की चुनौती संसदीय व्यवस्था पर थी। इसके लिए जरूरी था कि सरकार में स्थायित्व हो। देश के पहले प्रधानमंत्री के तौर पर पंडित जवाहरलाल नेहरू के रूप में देश को एक ओजस्वी नेता मिला, जिनकी देश की आजादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका रही। स्वतंत्रता पश्चात पंडित नेहरू के नेतृत्व में देश में अनेकानेक महत्वाकांक्षी परियोजनाओं की नींव रखी गई और उनमें से कई पंडित नेहरू के कार्यकाल में ही पूरी हुईं। दरअसल, पंडित नेहरू ने देश में विकास की जिस धारा को शुरू किया था, उसके अंतर्गत देश में ज्ञान-विज्ञान, साहित्य-संस्कृति व कला के जितने संस्थान अस्तित्व में आए, उतने उनके कार्यकाल के बाद नहीं देखे गए। हालांकि नेहरू समाजवादी सोच को तरजीह देते थे और देश की जनता के समग्र उत्थान के लिए सरकार की सबसे बड़ी भूमिका मानते थे।

इंदिरा गांधी

पंडित नेहरू के अवसान के बाद दो वर्ष का समय लाल बहादुर शास्त्री के नाम है। उनकी असामयिक मृत्यु के बाद इंदिरा गांधी ने प्रधानमंत्रित्व का पदभार संभाला। उनके शासनकाल में 1974 में पहली बार देश में परमाणु परीक्षण किया गया। पाकिस्तान के साथ 1971 के संघर्ष के बाद दोनों देशों के बीच 1972 में शिमला समझौता किया गया, जिसे आज तक पाकिस्तान के साथ शांति स्थापना के प्रयासों का मूलाधार माना जाता है। इंदिरा गांधी के शासनकाल में देश में तीन पंचवर्षीय योजनाएं भी अमल में लाई गई थीं। चूंकि पाकिस्तान के साथ 1965 की लड़ाई के बाद लंबे समय तक देश आर्थिक तंगी से गुजरा था, इसलिए 1970 के उनके 'गरीबी हटाओ' के नारे की गूंज पूरे देश में सुनाई दी। 1969 में बैंकों का राष्ट्रीयकरण इंदिरा गांधी के शासनकाल की एक बड़ी उपलब्धि थी।

राजीव गांधी

वर्ष 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या के बाद उनके पुत्र राजीव गांधी को आम चुनाव में भारी सफलता मिली। राजीव गांधी द्वारा पारित नीतियां नेहरूवादी समाजवाद से विपरीत मुक्त अर्थव्यवस्था के मार्ग पर चल निकली थीं। देश में आजादी के बाद से चल रहे 'लाइसेंस राज' पर इसी दौरान लगाम लगती दिखी और निजीकरण की आहट सुनाई देने लगी थी। राजीव गांधी ने ही दूरदर्शिता दिखाते हुए कम्युनिकेशन के क्षेत्र में देश को एकसूत्र में बांधने के प्रयास शुरू किए थे, जिसके नतीजे बाद में दिखाई दिए थे।

पी. वी. नरसिम्हा राव

1980 के दशक के उत्तरार्द्ध में गठबंधन सरकारों का दौर शुरू हुआ, जिस दौरान 1989 के आम चुनाव के बाद जनता दल की सरकार बनी और विश्वनाथ प्रताप सिंह प्रधानमंत्री पद पर आसीन हुए। यह सरकार करीब दो वर्ष चली और 1991 के आम चुनाव के बाद एक बार फिर कांग्रेस की सरकार बनी और पी. वी. नरसिम्हा राव प्रधानमंत्री नियुक्त हुए। नरसिम्हा राव को देश में 'आर्थिक उदारीकरण का पितामह' की संज्ञा दी जाती है। उनके शासनकाल में, वित्त मंत्री मनमोहन सिंह ने भारत के वैश्वीकरण की शुरुआत की। विदेशी टीवी चैनलों का आगमन, विदेशी पूंजी निवेश के आने के साथ पुरानी समाजवादी राजनीति अंततः विदा हो चुकी थी। पी. वी. नरसिम्हा राव की राजनीतिक सोच-समझ गहन थी और उन्होंने देश के आणविक और मिसाइल प्रोग्राम को भी गति दी थी।

अटल बिहारी वाजपेयी

अटल बिहारी वाजपेयी का प्रधानमंत्रित्व काल अनेक उतार-चढ़ावों से गुजरा। उन्होंने एक ओर यदि पोखरण परमाणु परीक्षण करके देश को एक बड़ी शक्ति के रूप में स्थापित करने की शुरुआत की, वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान से 'बस डिप्लोमेसी' के जरिए संबंध सुधारने की भी कवायद की। हालांकि इस प्रयास में उन्हें कारगिल युद्ध का सामना करना पड़ा था। 1999 के आम चुनाव के बाद वह कार्यकाल पूरा करने वाले पहले गैर-कांग्रेसी प्रधानमंत्री बने। राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजना, 'प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, व्यापार और निवेश के क्षेत्रों में इस दौरान काफी काम हुआ।

डॉ. मनमोहन सिंह

2004 के आम चुनाव के बाद यूपीए (कांग्रेस और अन्य दल) ने सत्ता संभाली और उसके दस वर्ष बाद तक डॉ. मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री रहे। डॉ. मनमोहन सिंह मूलतः राजनीतिज्ञ न होकर अर्थशास्त्री थे और देश में आर्थिक सुधारों का श्रेय उन्हीं को दिया जाता है। कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी द्वारा उन्हें प्रधानमंत्री पद के लिए चुना गया और उन्होंने विदेश व अर्थ नीति से जुड़े काम जारी रखे। राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (नरेगा) और सूचना का अधिकार जैसे कानून उन्हीं के शासनकाल में, बने। डॉ. सिंह के शासनकाल में तमाम छोटे-बड़े आर्थिक सुधार देखे गए और इसी दौरान संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ महत्वाकांक्षी परमाणु समझौता भी हुआ था। डॉ. सिंह ने रूस व इजराइल के साथ भी भारत के संबंधों को सशक्त करने के लिए बड़ी भूमिका निभाई।



शानदार 78 साल

समय के साथ एक सफरनामा



शशि शेखर
प्रधान संपादक

काल की अनंत यात्रा में अपने 'आज' को जीते हुए लोग अक्सर बहुत कुछ बिसरा बैठते हैं। हम भूल जाते हैं कि जिस लम्हे को हम जी रहे हैं, इसे मौजूदा स्वरूप तक पहुंचाने में समय ने बरसों जद्दोजहद की है। इसीलिए हम उस भविष्य के प्रति भी लापरवाह हो बैठते हैं, जो फिलवक्त आकार ले रहा होता है। 'हिन्दुस्तान' की पिछले 78 बरस की यात्रा को नापते-जोखते हमारे संपादकीय सहयोगी कई बार हक्का-बक्का रह गए। इस दौरान ऐसी तमाम घटनाएं घटीं, जिन्होंने दुनिया की शक्ल बदल दी।

समय की इस अनंत धारा में अगर 1936 को प्रस्थान बिंदु मान लिया जाए, तो हम पाएंगे कि उन दिनों आज का भारत शुरुआती आकृति ग्रहण कर रहा था। दुनिया पहले महायुद्ध के घाव सहला रही थी और इन रिसते जख्मों में ही दूसरी जंग के अंकुर फूट रहे थे। खुद भारत अनोखी कशमकश से गुजर रहा था। उपनिवेशवाद अवसान की ओर था और गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट-1935 के तहत देश में पहली बार चुनावों की मुनादी हो रही थी। राजतंत्र हकीकत था, पर लोकतंत्र दबे पांव हमारे पुरखों की जिंदगी में शामिल हो चुका था। क्या किसी ने सोचा था कि ग्यारह साल बाद हम आजाद हो जाएंगे? क्या किसी ने सोचा था कि हजारों साल तक खुद को 'जंबूद्वीप' मानने वाला यह राष्ट्र बिखर जाएगा? 14-15 अगस्त, 1947 की रात को आजादी अपने साथ अलगाव और अनंत कटुता का दौर भी लाएगी? भारत और पाकिस्तान दो सहोदरों की तरह गलबंहियां डालकर नहीं रहेंगे, बल्कि सौतेले भाइयों की तरह लड़ते-कटते रहेंगे?

आजादी के बाद हमारे लोकतंत्र के मजबूत ताने-बाने में तमाम बार छेद करने की कोशिश की गई। खालिस्तान, कश्मीर, उत्तर-पूर्व की बगावतें और फिर मजहब के नाम पर गाहे-बगाहे उठाया जाता विवाद इसके उदाहरण हैं। 'ऑपरेशन ब्ल्यू स्टार' और अयोध्या में बाबरी मस्जिद के ध्वंस के बाद ऐसा लगा कि हमारे देश की देह फिर से क्षत-विक्षत होने जा रही है, लेकिन इन घटनाओं पर समय जैसे-जैसे अपनी परतें जमाता जा रहा है, लोग उन्हें भूलते जा रहे हैं। हमारे लोकतंत्र की यही खूबी है कि हादसे वार तो करते हैं, पर हम उनसे पार पा जाने में हमेशा कामयाब होते हैं।

सरकारी नौकरियों और पढ़ाई में आरक्षण लागू होने पर भी लोगों में यही बोध जाग्रत हुआ तब लगा कि 'समाज' बंट जाएगा, पर नहीं। हम यहां भी अपनी एकजुटता कायम रखने में कामयाब रहे। इससे हज़ारों साल से दबे-कुचले लोगों को आगे आने का मौका मिला और जो इस व्यवस्था के लागू होने से खुद को वंचित महसूस करने लगे थे, उन्हें भी अपने लिए नई राहें खोलने का अवसर प्राप्त हुआ। आज अमेरिका के लोग इस बात से चमत्कृत हैं कि किस तरह भारत के युवा कंप्यूटरशास्त्रियों ने उनकी तरक्की में बेहतरीन योगदान दिया। समाजशास्त्रियों का एक तबका मानता है कि अगर इन लोगों को देश में सरकारी नौकरियां हासिल हो गई होतीं, तो वे अपनी अदम्य जिजीविषा को साबित करने से वंचित रह जाते।

हमारे जवानों को स्वतंत्रता से पहले अगर महायुद्ध लड़ने पड़े तो आजादी की रक्षा के लिए भी खून बहाना पड़ा। कारगिल को अगर पूरी लड़ाई मान लें, तो हमने चार युद्ध पाकिस्तान से और एक चीन से लड़ा। 1962 में लाल सेना से पराजय के बाद देश का मनोबल टूट गया था, मगर तीन साल के अंदर यानी 1965 में पाकिस्तान पर फतह पाकर भारत ने साबित किया कि हम बुलबुलों से बने देश नहीं हैं। 1971 की लड़ाई में 90 हजार से अधिक पाक सैनिकों व अधिकारियों का आत्मसमर्पण और बांग्लादेश का निर्माण हमारी सैन्यगाथा को उत्कर्ष पर ले आया। बाद में परमाणु बम का परीक्षण कर हमने साबित कर दिया कि हिन्दुस्तान अपनी सुरक्षा के प्रति उतना गाफिल नहीं है, जितना मान लिया जाता है। कई बार ऐसा भी हुआ, जब खतरा अंदर से महसूस हुआ। इंदिरा गांधी ने 1975 में जब आपातकाल लगाया, तो लगा कि लोकतंत्र हमेशा के लिए विदा हो गया। दो सालों में ही तय हो गया कि हमारी पर्वताकार जम्हूरियत इस तरह के भूचालों से कभी धूल-धूसरित नहीं हो सकती। हम उठे और फिर से चलने लगे।

भारत नाम का यह देश अपने अंदर जिजीविषा की अनंत ऊर्जा रखता है, इसलिए हमारी हस्ती मिटती नहीं और हम अपने अंतर्विरोधों से लड़ते हुए आगे बढ़ते रहते हैं। यहां यह भी कहना जरूरी है कि इतने बड़े और विविधता भरे देश में सवाल तो उठेंगे ही। जिस दिन ये उठने बंद हो जाएंगे, उस दिन मान लीजिएगा कि हमारी यात्रा पूरी हो गई। हम आगे भी अपने लिए प्रश्न खड़े करते रहेंगे और उनके उत्तर तलाशते रहेंगे।

यहां यह बताना जरूरी है कि 'हिन्दुस्तान' की 78 बरस की शानदार यात्रा किसी अखबार के प्रसार का लेखा-जोखा नहीं है। यह मानवता के इतिहास के सबसे घटना-प्रधान वक्त का रोजनामचा मात्र भी नहीं है। इस समाचारपत्र ने अगर खबरों के जरिये समाज को आईना दिखाया, तो अपनी गहरी संपादकीय दृष्टि से विचारों के तमाम वट-वृक्ष भी रोपे। जैसे किसी लोकतंत्र के लिए जागरूक नागरिक जरूरी हैं, वैसे ही देशवासियों की जागृति के लिए स्वतंत्र मीडिया आवश्यक है।

'हिन्दुस्तान' का प्रकाशन आंधियों-तूफानों से भरे वक्त में शुरू हुआ था। इस अखबार में सम्पादक बदले, पत्रकार आए-गए, पर अगर कुछ नहीं बदला तो वह अपने देश और देशवासियों का साथ नभाने का जज्बा। तय जानिए, यह हमेशा कायम रहेगा। इस विशेषांक के जरिए 'हिन्दुस्तान' ने देश-दुनिया के गुजरे 78 वर्षों की झांकी पेश की है। उम्मीद है, हम जब आठ दशक का सफ़र पूरा करेंगे, तब तक देश तरक्की के कुछ और पायदान पार कर चुका होगा।


हिन्दुस्तान
THE HINDUSTAN
हिन्दी का प्रमुख दैनिक पत्र
गान्धी जी बीमार : सरकार एक बार और हारी
महात्मा गांधी बीमार
सरकार की नौकरी


हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
सुधारों के लिए बड़े फैसले लेगी सरकार
दिल्ली-काठमांडू डीटीसी वॉल्वो सेवा 24 नवंबर से
मोदी के निमंत्रण पर 26 जनवरी को मुख्य अतिथि बनेंगे ओबामा
सौ करोड़ी क्लब की टॉप घातक



हिन्दुस्तान अपनी स्थापना से आज तक के सफर में देश-दुनिया की घटनाओं की निष्पक्ष तस्वीर पाठकों के सामने रखता रहा है और इसके प्रयासों में पाठकों की भी महती भूमिका रही है। आठ दशकों की यह यात्रा कैसी रही, अगले कुछ पन्ने इसी अविस्मरणीय यात्रा की यादें ताजा कर रहे हैं।

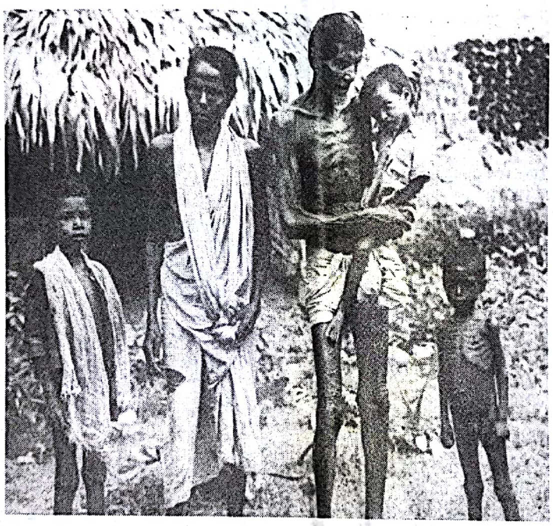
1936-45

देशभक्तों की ललकार, विश्वयुद्ध, अकाल और विज्ञान प्रौद्योगिकी की पहली आहटों से गूंज रहा था यह दशक। इस दशक में जहां एक ओर इंसान के कार्यों से मानवता शर्मसार हुई, वहीं उसके सुनहरे भविष्य की नींव भी रखी गई।

(1943 - 1944)

बंगाल का अकाल

एक अनुमान के अनुसार अंग्रेजी राज के दौरान वृहद बंगाल क्षेत्र (उड़ीसा, बिहार सहित) में पड़े भीषण अकाल के कारण करीब तीस लाख लोग मारे गए थे। एक अन्य अनुमान के अनुसार यह आंकड़ा 40 लाख बताया गया है। आमतौर पर इस अकाल का जिम्मा उस दौरान अनाज की कम पैदावार को दिया जाता है, लेकिन यह द्वितीय विश्व युद्ध का दौर था और अंग्रेजी सरकार की प्राथमिकता देश के पूर्व में जापानी सेना की मौजूदगी का मुकाबला करना था।



(1 सितंबर 1939 से 2 सितंबर 1945)

द्वितीय विश्वयुद्ध

द्वितीय विश्वयुद्ध में 70 देशों की सेनाएं शामिल हुईं। विश्व दो वर्गों में बंट गया – मित्र राष्ट्र और धुरी राष्ट्र। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय भारत पर अंग्रेजों का राज था, इसलिए आधिकारिक रूप से भारत ने भी नाजी जर्मनी के विरुद्ध 1939 में युद्ध की घोषणा की। 20 लाख से अधिक भारतीय सैनिक युद्ध के लिए भेजे गए। देसी रियासतों ने विशाल स्तर पर ब्रिटिश राज को धनराशि दी। छह वर्षों तक चले इस युद्ध में 30 देशों के 100 करोड़ से अधिक लोग सीधे तौर पर शामिल थे। नाजी जर्मनी द्वारा यातना शिविरों में यहूदियों का नरसंहार भी मानव जाति ने झेला, जिसमें एक अनुमान के अनुसार 1.1 करोड़ लोग मौत के घाट उतारे गए थे। तबाही का जो मंजर पूरी दुनिया ने देखा, उसे 'मानव इतिहास में अब तक के सबसे बड़े विध्वंस' की संज्ञा दी गई है।





(30 जनवरी, 1933)

जर्मनी में नाजी सरकार

जर्मनी में अडॉल्फ हिटलर की सरपरस्ती में नाजी सरकार अस्तित्व में आई। इसके साथ जर्मनी एक तानाशाही राज्य के तौर पर सामने आया। इस दौरान जर्मनी एक उग्र राष्ट्र के तौर पर उभरा, जहां यहूदियों का उत्पीड़न और वर्णवादी नीतियों का जोर था। बारह वर्ष चली नाजी सरकार का खात्मा द्वितीय विश्वयुद्ध के अंत के साथ हुआ।


हिन्दुस्तान
Hindustan

बम्बई पूना व अहमदाबाद में गोलीकाण्ड: लाठी चार्ज : सर्वत्र सामूहिक गिरफ्तारी

भारत छोड़ो : देश में चल रही आजादी की लहर भारत छोड़ो आंदोलन के समय अपने चरम पर थी। इस दौरान देश के शीर्षस्थ नेता भी जेलों में ठूंस दिए गए थे। उस दमन के खिलाफ 'हिन्दुस्तान' ने पुरजोर तरीके से आवाज बुलंद की।



लोकतंत्र

विविधता और असमानता के बीच

एक लोकतंत्र में नागरिक उत्तरदायित्वों के प्रति भारतीय जनमानस की सजगता को लेकर संदेह जताने वाले पूरी तरह गलत साबित हुए हैं। अगर भारत में लोकतंत्र विकास कर रहा है तो सिर्फ उस आम जनता के कारण। उसने सिर्फ इस आस में कि एक दिन इसकी बदौलत उसकी जिंदगी बदलेगी, इसके लिए अलग-अलग तरीकों से कई प्रयास किए हैं।



हर्ष मंदर
पूर्व आईएएस अधिकारी रहे हैं। फिलहाल सेंटर फॉर इक्विटी स्टडीज के डायरेक्टर। 'फ्रैक्चर्ड फ्रीडम : क्रॉनिकल्स फ्रॉम इंडियाज मार्जिन्स' और 'ऐश इन द बेली : इंडियाज अनफिनिश्ड बैटल अगेंस्ट हंगर' के लेखक।

भारत की आजादी से पहले और बाद में लोकतंत्र का अभ्यास सरस, आक्रामक और ऊर्जापूर्ण होने के साथ-साथ विवादित, संघर्षशील और कलंकित भी रहा। भारत में लोकतंत्र अपने आरंभिक काल से अब तक कायम है, यह बात कइयों को आश्चर्य में डालने वाली साबित होती है। एक देश, जहां करोड़ों लोग एक साथ मिल कर रहते हैं, जहां आधुनिक शिक्षा और संवाद के वितरण में असमानताएं हैं, जहां दुनिया के किसी भी अन्य देश से कहीं ज्यादा परंपराएं और सांस्कृतिक विविधता है, वहां का अटूट लोकतंत्र वाकई एक उपलब्धि माना जाएगा। वहीं भारत के लोकतंत्र की सबसे बड़ी समस्या यह है कि इसने दुनिया के सबसे असमान समाजों की कठोर जमीन में अपनी जड़ें जमाने की कोशिश की है। आधुनिक भारत में बहुत आसानी से पहले से चली आ रही जाति व्यवस्था और आधुनिक सोच का समागम होता चला गया। धीरे-धीरे ही सही इस तरह विशाल स्तर पर आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक असमानताओं को सही ठहराते मानकों का एक ढांचा विकसित हो गया।

औपनिवेशिक भारत में एक-सीमित राजनीतिक लोकतंत्र की झलक मिली, जिसमें वोट देने का अधिकार केवल पुरुषों तक सीमित था। स्वतंत्र भारत में लोकतंत्र का विस्तृत और विविधतापूर्ण विकास हुआ। उदाहरण के लिए नेहरू लोकतंत्र को आर्थिक और सामाजिक समानता के साथ ही देखते थे। उधर अंबेडकर इस बात पर चिंतित थे किं लोकतांत्रिक भारत में किस तरह दलितों की लंबे समय से दमित राजनीतिक आवाज और प्रभावों को अभिव्यक्ति मिले। वहीं गांधी ने भारतीय लोकतंत्र को ग्रामीण गणतंत्र के समतावादी संघ के तौर पर देखा। मार्क्सवादियों ने वर्ग-समानता और श्रमिक-किसान समन्वय के तौर पर इसका सपना संजोया। दूसरी ओर लोकतंत्र को लेकर हिंदू महासभा और मुस्लिम लीग के धर्म आधारित सिद्धांत पूर्णतया लोकतंत्र विरोधी थे। स्वतंत्रता के बाद इस बात पर एक विचार बना कि मतदान का अधिकार सभी के लिए हो।

अमर्त्य सेन ने सतर्क राजनीतिक विपक्ष, जन संगठनों और स्वतंत्र प्रेस को भारत में सक्रिय लोकतंत्र का श्रेय दिया है। इसके साथ ही उन्होंने भारत में विशाल स्तर के अकालों से बचाव का भी इसके लिए उल्लेख किया है। लेकिन यही वह लोकतंत्र है, जो भूख और कुपोषण की समस्याओं को मिटाने में असमर्थ साबित हुआ है। भारत का विकास मॉडल गहराती जाती असमानताओं का उदाहरण बन कर रह गया है, जहां एक ओर विश्वस्तरीय जीवन स्तर है तो दूसरी ओर 60 से 70 करोड़ लोग भूख, अस्वच्छता, कुपोषण, स्वास्थ्य सेवाओं के अभाव और असुरक्षित व अनिश्चित रोजगार की समस्याओं से दो-चार हो रहे हैं। प्राचीन भारत की भेदभावपूर्ण जाति व्यवस्था और उपनिवेश काल के धार्मिक वर्ग नए भारत के लोकतंत्र का मजाक उड़ाते हुए आज भी स्थापित हैं।

भारत की कक्षाएं विश्व में सबसे ज्यादा असमानतापूर्ण हैं। दलित बच्चों को पढ़ने और खाने के लिए अलग बैठाया जाता है। शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों को मुश्किल से दाखिला मिलता है और अध्यापन भारत के बहुत से स्कूलों में अभी भी अल्पविकसित अवस्था में है। अंबेडकर वाकई एक भविष्यदर्शी कहे जाएंगे। उन्होंने 1950 में कहा था कि हम विरोधाभासों से भरे जीवन में प्रवेश करने जा रहे हैं। राजनीति में हम समानता देखेंगे, लेकिन सामाजिक व आर्थिक क्षेत्र में असमानता होगी।

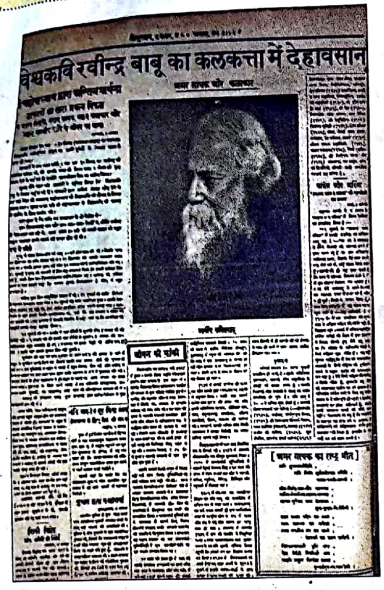
राजनीतिक और आधिकारिक तंत्र ने अपना औपनिवेशिक ढर्रा ही बनाए रखा है। शक्ति को अभिमान के साथ उपयोग किया जाता है। यही रवैया कॉरपोरेट जगत का भी है। लोकतंत्र को ग्रामीण भारत के सामंतवाद, जिसने भूमि सुधार को उलट कर रख दिया और नए भारत के प्रिय पूंजीवाद जनित भ्रष्टाचार ने और खोखला बना दिया है। राजनीति व्यवसाय के साथ मिल कर काम कर रही है और किसी व्यक्ति को बेहतर शिक्षा के कितने मौके मिलेंगे, यह जन्म से निर्धारित हो रहा है। इस तरह भारत की सामाजिक गति भी बाधित हो रही है।

भारत में कई ऐसे क्षेत्र हैं, जहां कई दशकों से लोकतंत्र लगभग नदारद है, जैसे कश्मीर और उत्तर-पूर्व। यहां सेनाओं का राज है। इन सबके बावजूद अगर हम भारत के लोकतंत्र का उत्सव मनाते हैं तो सिर्फ इसलिए, कि इसकी आम जनता अन्याय और दमन के खिलाफ लंबे समय से अपनी आंशिक स्वतंत्रता का उपयोग करके स्थितियों को बदलने के लिए मजबूर करती आ रही है। बंधुआ मजदूरी और हाथ से सफाई करने जैसे अमानवीय चलन को बंद कराने वाले श्रमिक सुरक्षा और जेंडर जस्टिस के कानून, जैसे कि सूचना का अधिकार और शासन की पारदर्शिता, शिक्षा, भोजन और रोजगार का अधिकार आदि ये सभी बहादुर, रचनात्मक और अहिंसक लोगों के आंदोलनों का नतीजा हैं।

सभी चुनावों में भारत के मतदान केंद्रों में लंबी पंक्तियों में वोट देने के लिए इंतजार करने वालों में महिलाएं, लाभ से वंचित जातियां, अल्पसंख्यक समुदाय, औपचारिक शिक्षा से हीन लोग हैं, जिन्होंने अक्सर बुद्धिमानी भरे राजनीतिक चयन किए हैं। भारतीय लोकतंत्र की यह सबसे बड़ी उपलब्धि कही जाएगी। लेकिन यही इसका सबसे बड़ा अंतर्द्वंद्व भी है कि लोकतांत्रिक रूप से चुने गए राजनीतिक दल उन्हीं की उपेक्षा करते हैं, जो भारत की सबसे महान आस्था-भारतीय लोकतंत्र को स्थायी बनाए हुए हैं०।



पिछले कुछ चुनावों में मतदान का प्रतिशत उत्साहजनक रूप से बढ़ा है। खासकर महिलाएं वोट देने के लिए बड़ी संख्या में घर से बाहर निकली हैं।



विश्वकवि रवीन्द्र बाबू का कलकत्ता में देहावसान

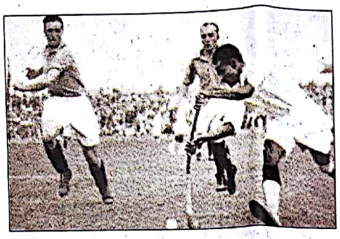
कवीन्द्र रवीन्द्र : कला, शिक्षा, साहित्य और मानवतावादी मूल्यों के लिए रवीन्द्रनाथ टैगोर को आज तक याद किया जाता है। 'हिन्दुस्तान' ने महापुरुष रवीन्द्रनाथ को श्रद्धांजलि देते हुए उनके अमिट योगदान को याद किया था।

(6 अगस्त व 9 अगस्त, 1945)

हीरोशिमा व नागासाकी पर परमाणु हमला

जापान के हीरोशिमा और नागासाकी शहरों पर अमेरिका द्वारा परमाणु हमले के बाद जापान ने घुटने टेके और द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त हुआ। बाद में जापान को फिर से उसके पैरों पर खड़ा करने के लिए दुनिया भर में प्रयास भी हुए।





(बर्लिन ओलंपिक्स 1936)

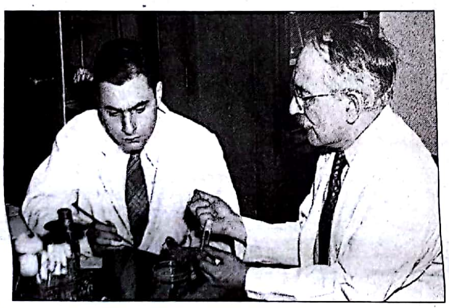
भारत को स्वर्ण

जर्मनी में आयोजित 1936 के ओलंपिक्स में हॉकी में मेजर ध्यानचंद के जादुई खेल से भारत स्वर्ण पदक जीता।

(1942)

एंटिबायटिक्स का उदय

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जीव विज्ञानी सेल्मान वेक्समैन और उनके सहयोगियों ने पहली बार 'एंटिबायटिक' शब्द का इस्तेमाल किया। एंटिबायटिक एक ऐसे माइक्रोऑर्गेनिज्म के रूप में सामने आया जो रोग का विस्तार करने वाले जीवाणुओं को रोकता है। यूं 1929 में अलेक्जेंडर फ्लेमिंग द्वारा विकसित पेंसिलिन को पहली एंटिबायटिक की संज्ञा दी जाती है।





(1943 से 1946)

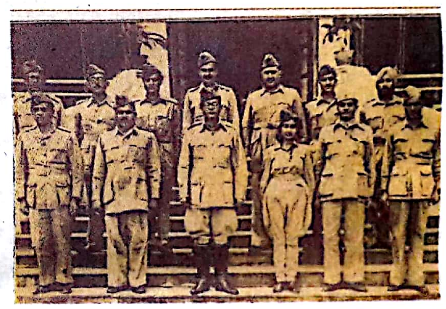
पहले कंप्यूटर (इनियाक) का निर्माण

दुनिया का पहला कंप्यूटर यानी इलैक्ट्रॉनिक न्यूमेरिकल इंटिग्रेटर एंड कंप्यूटर (इनियाक) ने काम करना शुरू किया। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान 1943 में बनने शुरू हुए इस 'विशालकाय मस्तिष्क' के निर्माण की सूचना 14 फरवरी, 1946 को जनता को दी गई। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान और उसके तुरंत बाद का समय मानव इतिहास में अभूतपूर्व आविष्कारों का युग था, इनियाक इसी की एक महत्वपूर्ण कड़ी माना जाता है।

(अगस्त 1942 - सितंबर 1945)

आजाद हिंद फौज

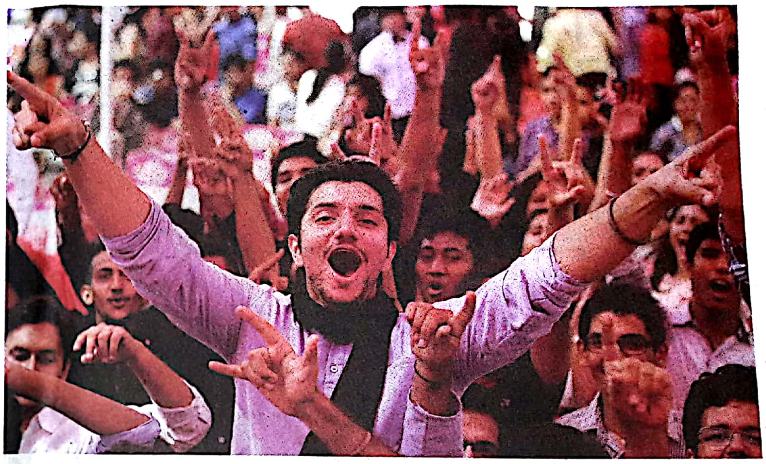
नेताजी सुभाषचंद्र बोस द्वारा विदेश में गठित आजाद हिंद फौज का लक्ष्य देश की आजादी था। इसके लिए उन्होंने जापान के सहयोग से भारत की आजादी की दिशा में कदम उठाया। विदेश में रहने वाले देशप्रेमियों को साथ लेकर बनाई गई इस सेना में महिला मोर्चे की भी बहुत सशक्त भूमिका थी। आजाद हिंद फौज को जापान का सहयोग लेने के कारण आलोचना भी सहनी पड़ी थी, लेकिन देश की आजादी के उसके लक्ष्य को लेकर उसके लिए जन साधारण के मन में बहुत इज्जत थी। जापान में हैलिकॉप्टर हादसे में नेताजी की मृत्यु के बाद आजाद हिंद फौज का अस्तित्व समाप्त हो गया।



युवा शक्ति

आशाएं और निराशाएं

छोटे गांवों से बड़े शहरों में हर रोज बड़ी संख्या में भारतीय युवा पहुंच रहे हैं। यह ऊर्जा भारत को बना भी सकती है और व्यर्थ गई, तो बिगाड़ भी सकती है। सवाल यह है कि क्या एक देश और समाज के नाते हम अपने उन युवाओं को, जिनमें कुछ करने का जज्बा तो है, लेकिन अवसर नहीं, समर्थ बना सकते हैं? अगर नहीं, तो नीतियों का अगला प्रमुख मुद्दा यही होना चाहिए।



इस दशक में हम दुनिया की सबसे कम उम्र की आबादी वाला देश हो जाएंगे। युवा ऊर्जा के सही उपयोग के लिए हमें काम करने होंगे।



नंदन निलेकणी
आधार कार्ड की अवधारणा के जनक और इंफोसिस के को-फाउंडर 'इमेजिनिग इंडिया' शीर्षक से किताब लिखी

धूल-धूसरित बालों वाला एक लड़का अपने गांव से कुछ किलोमीटर का सफर तय कर बस में सवार होता है, जो उसे निकटतम रेलवे स्टेशन तक ले जाएगी। वहां से एक सुदूर शहर का सफर वह रेलगाड़ी से तय करता है। अपने दिलो-दिमाग में सुनहरे सपने और कंधों पर पीछे छोड़ आए परिवार की जिम्मेदारी लिए वह इस शहर से संपर्क साधता है। हर दिन देश भर में यह कहानी खुद को दोहराती है। अकेले मुंबई और दिल्ली में करीब 2,000 लोग अपने भविष्य की तलाश में रोजाना पहुंचते हैं। ऐसों की खोज में आपको दूर तक देखने की जरूरत नहीं है। उनसे आपका सामना तुरंत हो सकता है। जैसे, आपके अपार्टमेंट के बाहर खड़े गार्ड या काम पर जा रही नौकरानी या फल वाला। ये हमारी युवा आबादी में बहुसंख्यक हैं। हम उनके बारे में बेहद कम जानते-सुनते हैं। लेकिन उनमें से हर कोई उस गति का हिस्सा है, जो भविष्य की ओर अग्रसर है और हम जैसों को भी आगे ले जा रही है।

युवा ऊर्जा को पहचानना जरूरी

आज के भारत के बारे में बात करने का मतलब है युवाओं के बारे में बात करना। इस दशक में, हम दुनिया में सबसे कम उम्र की आबादी वाला देश हो जाएंगे। वे जिन बदलावों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, वो होंगे। इससे पहले जिन देशों ने युवा जनसंख्या के विस्फोट को देखा, उन सबने जबर्दस्त राजनीतिक व आर्थिक उथल-पुथल को अनुभव किया। जैसे अमेरिका ने 1950 के दशक में, जापान ने 1970 के दशक में, चीन ने 1980 के दशक में और 1990 के दशक में आयरलैंड में यह सब हुआ। यहां प्रमुख शब्द उथल-पुथल है। एक युवा आबादी और उसकी आकांक्षाएं शहर बना भी सकते हैं या उसके विनाश का कारण भी बन सकते हैं, यह इस पर निर्भर करता है कि उसकी ऊर्जा का कैसे इस्तेमाल किया जाता है।

इन नौजवानों में ऊर्जा और संभावनाओं का जो संचार है, उसे गंवाना या उचित इस्तेमाल न करना ही सबसे बड़ी त्रासदी हो सकता है, क्योंकि देश के स्तर पर युवाओं की काफी मांग है। हम इन मांगों से जूझते अपने आसपास के इंफ्रास्ट्रक्चर में इस तरह की त्रासदी के बारे में काफी कुछ सुन सकते हैं। विशेष रूप से, मध्य वर्ग के फायदों से वंचित रहने वाले युवा अपने करियर को काफी जोखिम के साथ शुरू करते हैं, क्योंकि उनके पास बुनियादी पारिवारिक सुरक्षा की स्थिति नहीं होती। हमने देखा है कि आधार नंबर के लिए आवेदन भरते लोग अपने बुजुर्ग माता-पिता और बच्चों के साथ आते हैं और यह कह रहे होते हैं कि स्वास्थ्य के नाम पर हुए खर्च ने उन्हें बरबाद कर दिया। ऐसे लोग मानो तनी हुई रस्सी पर संतुलन बना कर चलते हैं। शहरों में वे जो काम पाते हैं, वे अस्थायी और गैर-भरोसेमंद होते हैं। उनके पास रहने के लिए ठीक-ठाक घर नहीं होता, पेयजल और बिजली की आपूर्ति नहीं होती।

> **नौजवानों में ऊर्जा और संभावनाओं का संचार है। उन्हें गंवाना या उचित इस्तेमाल न करना ही सबसे बड़ी त्रासदी हो सकती है, क्योंकि देश के स्तर पर युवाओं की काफी मांग है।**

ऐसी समस्याएं कुछ कहती हैं। एक लोकतांत्रिक, बहुलतावादी समाज का यह दायित्व बनता है कि वह उन नीतियों की वकालत करे, जो सभी के लिए अधिक अवसरों का सृजन करे, जो वर्गों से ऊपर उठ कर लोगों को सामर्थ्य प्रदान करे और जो सभी को जीवन में समान व निष्पक्ष मौके दे। हालांकि, यह सब कैसे होगा, इसे लेकर एक किस्म की अनिश्चितता की स्थिति है। इस पर लंबी-चौड़ी बहस हो सकती है। लेकिन जब बहस खत्म हो जाती है, तब क्या? हम देखते हैं कि लंबी-चौड़ी चुनाव प्रक्रिया है, जिसमें सीधी भागीदारी हमें अरुचिकर लगती है। पर नीतियों के प्रति हमारी प्रतिक्रियाएं हर स्थिति में मायने रखती हैं।

देश की तरक्की से खुद की तरक्की

हम देश के मामलों में सीधे प्रभाव डाल कर अपने बच्चों का भविष्य पहले से कहीं अधिक संवार सकते हैं। एक नागरिक के तौर पर हमारी जिम्मेदारी वोट डालने के साथ ही खत्म नहीं हो जाती। हमें यह जानना होगा कि हमारे उभरते हुए नेता और बदलाव लाने वाला नेतृत्व कहां है? यह सवाल अपने आप में जवाब है। हमें वैसी श्रेष्ठ नीतियां लानी होंगी, जिनकी हमें जरूरत है और जो हमारी उम्मीद के अनुरूप देश का निर्माण करें। जब यह हो जाएगा, तब जो लोग गांव से शहर आएंगे, वे खुद को अकेला महसूस नहीं करेंगे। उनके पास स्वास्थ्य बीमा होगा। वे किसी व्यावसायिक शिक्षण-केंद्र में दाखिला लेंगे। पहली नौकरी मिलते ही वे पेंशन कार्यक्रम से जुड़ेंगे। उनके लिए सस्ती दरों पर कर्ज उपलब्ध होगा।

जिन समस्याओं से हम जूझ रहे हैं, वे आसान नहीं हैं। लेकिन हमें अपने बुद्धि-कौशल का परिचय देना होगा, अन्यथा युवा आबादी पर इन सबका विषम असर दिख सकता है। पिछले समय में हमने पूरे पश्चिम एशिया में आंदोलन देखे। जब मिस्र आंदोलन की आग में जल रहा था, उन दिनों टीवी पर एक मिस्रवासी महिला का बयान आया। वह तहरीर चौक पर बता रही थीं कि वह हर चीज से नाराज हैं। न तो अच्छे कॉलेज हैं, न रोजगार हैं और सरकार लोगों की सुनती नहीं। जाहिर है, जब मिस्रवासी निराश-हताश थे, तब भी उम्मीद और सपने ही उनकी ताकत थे।

हमारे देश में नागरिक आंदोलन की उल्लेखनीय परंपरा है, बंगाल के शुरुआती सामाजिक सुधार से लेकर केरल के जाति-विरोधी आंदोलन तक। काफी वर्षों से यहां के लोग समानता के लिए संघर्ष करते आए हैं। अतीत में हमारे पुरखों ने देश की आजादी के लिए जो संघर्ष किया, आज उसी के लाभ हमें मिल रहे हैं। वे उन उद्देश्यों के लिए अडिग रहे, जिन पर उनका विश्वास था। वे अपने संघर्ष को जिस मुकाम पर छोड़ कर चले गए, हमें उसे वहां से आगे ले जाना होगा और यह काम मिल-जुल कर करना होगा। हमें इस देश को, अपने आपको हर दिन, हर पल गढ़ना है।

इतिहास और नेतृत्व

सबके अपने-अपने नायक

किसी भी राष्ट्र के निर्माण और विकास में उसके नायकों की अहम भूमिका होती है। देश की नीतियों में इनके व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। कुछ नायक तो काल और विचारधाराओं से परे होते हैं, लेकिन कुछ नायकों को विचारधाराएं और तत्कालीन सामाजिक-आर्थिक हालात अपनी सहूलियत के हिसाब से गढ़ते हैं। दुनिया का शायद ही कोई ऐसा देश होगा, जो इस द्वंद्व से अछूता हो। भारत भी इसका अपवाद नहीं।



1942 में कांग्रेस के एक कार्यक्रम के दौरान सलाह-मशविरा करते महात्मा गांधी और पंडित जवाहर लाल नेहरू



रामचंद्र गुहा
प्रसिद्ध इतिहासकार। राजनीतिक, सामाजिक व पर्यावरण से जुड़े विषयों व क्रिकेट पर विशद् लेखन। 'इंडिया आफ्टर गांधी', 'गांधी बिफोर इंडिया' और 'अ कॉर्नर ऑफ फॉरेन फील्ड : द इंडियन हिस्ट्री ऑफ अ ब्रिटिश स्पोर्ट' आदि पुस्तकों के लेखक।

राष्ट्र को नायकों की जरूरत होती है, लेकिन शीर्षस्थ नायकों की सूची बनाना सरलतापूर्वक या बिना किसी विरोध के शायद ही संपन्न हो पाता है। अमेरिका में इस बहस पर गौर करें कि कौन से चेहरे राष्ट्रीय मुद्रा पर अंकित होने चाहिए। अमेरिकी स्वतंत्रता के संस्थापक चेहरे- जेफरसन, वाशिंगटन, हैमिल्टन, मैडिसन और फ्रैंकलिन डॉलर पर मौजूद हैं, हालांकि ये सभी अलग-अलग मूल्य वर्ग के नाम हैं। इसी तरह, 19वीं सदी के राष्ट्रपति एंड्रयू जैक्सन, अब्राहम लिंकन और यू.एस. ग्रांट के नाम भी हैं।

हाल के वर्षों में दक्षिणपंथी अमेरिकियों ने अपने नायक रोनाल्ड रीगन के पक्ष में प्रचार किया कि उन्हें भी राष्ट्रीय मुद्रा पर जगह मिलनी चाहिए। यह कहा गया कि समकालीन भावनाओं के हिसाब से यह जरूरी है। 20वीं सदी के राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट डाइम (डॉलर का दसवां हिस्सा) पर अंकित हैं तो जॉन एफ. कैनेडी डॉलर पर हैं। दोनों ही डेमोक्रेट नेता थे। अब रिपब्लिकन कह रहे हैं कि उस सूची में एक नाम और हो। 2010 में नॉर्थ कैरोलिना से पैट्रिक मैकहेनरी ने मांग की कि पचास डॉलर की मुद्रा पर एस. ग्रांट की जगह रोनाल्ड रीगन आएं। मैकहेनरी ने कहा कि हर पीढ़ी को अपने नायकों की जरूरत होती है। उनके मुताबिक, उनके समय में रोनाल्ड रीगन अमेरिकी नायक थे। रीगन के बारे में उन्होंने कहा- वह आधुनिक समय के राजनीतिज्ञ थे, जिन्होंने देश की राजनीतिक व आर्थिक सोच बदल दी।

अब एक और बड़े लोकतंत्र की तरफ देखते हैं यानी अपने भारत की ओर। यहां भी यह काम जटिल है और कई को ऐतराज भी हो सकता है। इसलिए मैं कुछ ही नाम गिनाऊंगा। बेशक दशक बढ़ते जाएंगे और सूची लंबी होती जाएगी। बहरहाल, जब भारत आजाद हुआ, तब राष्ट्रीय नायकों की सूची में कांग्रेस पार्टी के नेताओं का ही वर्चस्व रहा। इसमें महात्मा गांधी पहले स्थान पर आते हैं और उनसे थोड़े पीछे रह जाते हैं जवाहरलाल नेहरू। देश को अंग्रेजों से आजाद कराने में इन दोनों का बेहद महत्वपूर्ण योगदान रहा। दोनों ही सच्चे भारतीय थे। कहा जाता है कि दोनों के बारे में लोकप्रिय धारणाओं के निर्माण में यह तथ्य सहायक रहा कि वे उस पार्टी से थे, जो आजादी के बाद के महत्वपूर्ण दशकों तक सत्ता में रही। अखबार, रेडियो और स्कूली किताबों ने इसमें भूमिका निभाई कि गांधी राष्ट्रपिता थे और पंडित नेहरू इस लोकतंत्र के निर्माण के वर्षों में इसके पहले मार्गदर्शक और मेंटर रहे।

1960 के दशक तक राष्ट्रीय चेतना में नेहरू और गांधी का काफी प्रभाव रहा। उस दशक में जब अमेरिकी विद्वान एलेनॉर जेलियट ने बी.आर. अंबेडकर और महाराष्ट्र में महार आंदोलन पर एक अच्छा शोध-प्रबंध लिखा, तब वह अपने लिए एक प्रकाशक ढूंढने में नाकाम रहीं। लेकिन इसके बाद कांग्रेस राज्यों में सत्ता गंवाने लगी। 1977 में वह पहली बार केंद्र से बाहर हुई। नई राजनीतिक पार्टियों के उदय ने अतीत की व्याख्याओं को संशोधित करने में स्वाभाविक भूमिका निभाई। उस सूची में नए नाम दर्ज कराने की पेशकश होने लगी। उनके गुणों को संसद और स्कूली किताबों में बताया जाने लगा, कभी-कभी बढ़ा-चढ़ा कर भी।

> यह उल्लेखनीय है कि डॉ. भीमराव अंबेडकर न केवल दलित हीरो हैं, बल्कि उनकी उपलब्धियों को भारतीय मध्यम वर्ग का बड़ा तबका भी सराहता है।



कमलादेवी चट्टोपाध्याय : आजाद भारत में हस्तकला व हस्तकरघा के पुनर्जागरण की पुरोधा। वे भारतीय स्त्रियों के उत्थान के लिए जीवनपर्यंत काम करती रहीं।

बाद के दशकों में इस पुनर्मूल्यांकन का सबसे अधिक लाभ किसी भारतीय को हुआ तो वह बी.आर. अंबेडकर थे। अंबेडकर एक विद्वान, कानूनविद्, संविधान निर्माता व आंदोलनकारी थे। दलितों की समस्याओं को सामने लाने में उन्होंने नायक की भूमिका निभाई। उन्होंने वंचित तबकों की दुर्दशा पर ध्यान देने के लिए गांधीजी को विवश किया। साथ ही उनके हितों को आगे करने के लिए उन्होंने खुद स्कूल-कॉलेज शुरू किए और अपनी पार्टी भी बनाई।

अंबेडकर का निधन 6 दिसंबर, 1956 को हो गया। उन्होंने जो पार्टी बनाई, वह शायद ही कांग्रेस के प्रभाव में सेंध लगा पाई। वह खुद भी लोकसभा सीट नहीं जीत पाए थे। लेकिन उनकी यादें 1970 और उसके बाद के दशकों में भी जिंदा होती रहीं। वह दलित आंदोलनकारियों और विद्वानों की नई पीढ़ी के मुख्य प्रेरणास्त्रोत बने रहे। यह उल्लेखनीय है कि वह न केवल दलित हीरो हैं, बल्कि उनकी उपलब्धियों को भारतीय मध्यम वर्ग का बड़ा तबका सराहता है। अब अंबेडकर पर किताब लिखने वाले किसी व्यक्ति को प्रकाशक ढूंढने की जरूरत नहीं पड़ती।

इस दौरान इस सूची का विस्तार दक्षिणपंथियों ने लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल का नाम शामिल करके किया। हालांकि पटेल पूरी जिंदगी कांग्रेसी रहे, लेकिन उनकी महानता को जोशपूर्ण तरीके से उठाने का काम भारतीय जनता पार्टी ने किया। उनका दावा है कि अगर पटेल प्रधानमंत्री होते तो कश्मीर भारत में पूरी तरह शामिल होता। पटेल के नेतृत्व में देश के पास अधिक व्यावहारिक (बाजार केंद्रित) अर्थव्यवस्था होती और साम्यवाद के खिलाफ पश्चिमी लोकतंत्र के साथ हम कंधे से कंधा मिला कर खड़े होते।

इतिहास को पढ़ने का यह तरीका विवादास्पद है, क्योंकि असल में पटेल और नेहरू सहकर्मी और एक-दूसरे के सहयोगी थे, न कि प्रतिद्वंद्वी और विरोधी। उनके बीच कई मसलों पर असहमति थी, लेकिन राष्ट्र के एकीकरण के बड़े काम में उन्होंने असहमति को भुला दिया। उनके बीच कामों और जिम्मेदारियों का स्पष्ट और सुविचारित बंटवारा था। नेहरू जानते थे कि पटेल के पास ही देसी रियासतों के विलय करवाने का सब्र और सूझबूझ है, न कि उनके पास। दूसरी तरफ, जैसा कि राजमोहन गांधी ने अपने द्वारा लिखी गई पटेल की जीवनी में बताया है, प्रधानमंत्री बनने का न तो उनका कोई इरादा था और न ही कोई इच्छा थी। वल्लभभाई पटेल जानते थे कि सिर्फ नेहरू में ही वह व्यक्तित्व और गुण है, जो महिलाओं, अल्पसंख्यकों और दक्षिण भारतीयों का कांग्रेस में विश्वास बनाए रखता है। वही दुनिया के सामने भारत के प्रतिनिधित्व की खासियत रखते हैं।

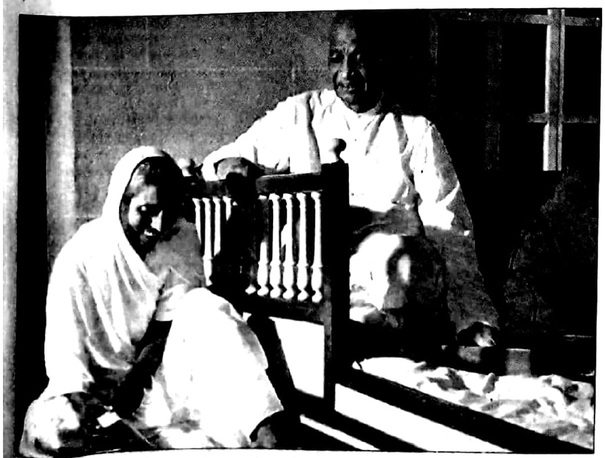


डॉ. भीमराव अंबेडकर : संविधान सभा की प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप में संविधान निर्माण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका और देश में दलित चेतना के जागरण के महानायक।

भारतीय जनता पार्टी द्वारा पटेल को आगे करना दरअसल, देश के अतीत, वर्तमान और भविष्य पर कांग्रेस के एक ही परिवार के कब्जे का परिणाम था। सोनिया गांधी की कांग्रेस पार्टी मानती है कि इस सूची में केवल दो ही नाम शामिल नहीं रह सकते, बल्कि कांग्रेसी इसकी क्षमता बढ़ाने के लिए पंडित नेहरू और महात्मा गांधी के साथ इंदिरा और राजीव गांधी का नाम रखते हैं। इसलिए सभी जगह प्रत्यक्ष रूप से सरकारी योजनाओं, हवाई अड्डों, इमारतों और स्टेडियमों का नामकरण इनके या उनके नाम पर किया गया।

बाद की बहसें यह साफ करती हैं कि राजनीतिक पार्टियां और सामाजिक आंदोलन इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं कि देश के अतीत को वर्तमान में कैसे रखा जाए। भारतीय इस मायने में खुश होंगे कि राजनीतिक पार्टियों और आंदोलनों ने हमें अंबेडकर और पटेल के नाम दिए, जिनकी अपनी उपलब्धियां इतनी अधिक हैं कि उन पर सवाल नहीं उठाए जा सकते।

लेकिन कई ऐसे नायक भी हुए, जिन्हें हमने भुला दिया। उनकी जिंदगी को विशेष हितों या विचारधाराओं के चश्मे से नहीं देखा गया। इतने दशक में इस सूची में कुछ नाम जुड़ सकते हैं। महान स्वतंत्रता सेनानी और समाज-सुधारक कमलादेवी चट्टोपाध्याय भी उनमें एक हैं। उन्हें पूरी तरह भुला दिया गया। फिर भी मेरे जैसे इतिहासकार की नजर में वह आधुनिक काल की महानतम महिला के रूप में सम्मान पाने की सबसे सशक्त दावेदार हैं।



सरदार वल्लभभाई पटेल : भारत के वर्तमान स्वरूप के मुख्य शिल्पकार और भारतीय दक्षिणपंथी राजनीति के प्रतीक पुरुष



1946-55

आधुनिक भारत के इतिहास में यह दशक बेहद महत्वपूर्ण है। इसी दशक में देश स्वतंत्र हुआ। इतिहास को नई दिशा देने वाले कुछ अहम फैसले व दुर्घटनाएं भी देश ने इसी दशक में झेली।



(15 अगस्त, 1947)

देश की आजादी का सपना सच

दो सौ वर्षों से अधिक की गुलामी के बाद देश को 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजी राज से आजादी मिली। इस संघर्ष में देश के हजारों शहीदों ने कुर्बानी दी। हिंसक व अहिंसक तरीकों को अपनाते हुए, अनेक आंदोलनों से होते हुए, दमन सहने के बाद आखिरकार देश को उसकी स्वायत्त पहचान मिली।


हमारी स्वतंत्रता का पुण्यपर्व
१५ अगस्त ४७

इतिहास के पन्नों से : 15 अगस्त 1947 की तिथि हमारी स्वतंत्रता का पुण्यपर्व है। उस रोज 'हिन्दुस्तान' के मुखपृष्ठ ने हमारे देश के कर्णधारों की जुबानी स्वतंत्रता के महत्व और उसकी प्राप्ति के साथ शुरू होने वाले संघर्षों के बारे में बताया था। हिन्दुस्तान के मुखपृष्ठ पर सरदार पटेल, डॉ. राजेंद्र प्रसाद और मौलाना आजाद के लेख थे।



(30 जनवरी, 1948)

महात्मा गांधी की हत्या

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एक उन्मादी की गोली का शिकार हुए। हादसे के बाद जवाहरलाल नेहरू ने कहा, 'हमारे जीवन से रोशनी जाती रही।' महात्मा गांधी ने अपने सार्वजनिक जीवन की शुरुआत दक्षिण अफ्रीका से की थी, जहां उन्होंने रंगभेद के खिलाफ आवाज बुलंद की थी। 1915 में स्वदेश लौटने के बाद उन्होंने अपना संघर्ष अभियान जारी रखा और देश की आजादी के कार्य में जुट गए। स्वतंत्रता पश्चात देश में सांप्रदायिक माहौल को रोकने के लिए भी उनके प्रयास असाधारण थे।



(14-15 अगस्त, 1947)

राष्ट्र के नाम संदेश

आजादी की पूर्व संध्या (14-15 अगस्त की रात) को संसद भवन के केंद्रीय कक्ष में राष्ट्र के नाम दिए गए ओजस्वी संदेश में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने देशवासियों को उनके कर्तव्यों की याद दिलाई।



(15 दिसंबर, 1950)

लौह पुरुष का अवसान

स्वतंत्र भारत को एकसूत्र में बांधने का श्रेय सरदार वल्लभ भाई पटेल को जाता है। वह देश के पहले गृह मंत्री भी थे।



1956-65

इस दौर में देश के पहले और लोकप्रिय प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु एक बड़ा झटका साबित हुई, लेकिन इसी दौर में पड़ोसी देशों से शांति समझौतों की पहल हुई और विश्व ने अंतरिक्ष की ओर अपने कदम बढ़ाए।



प्रधानमंत्री नेहरूजी का स्वर्गवास

संसार भर में शोक

समूचे देश में १२ दिन तक राजकीय मातम

'नेहरूजी मानव ... के महान त्राता'

(27 मई, 1964)

पं. जवाहरलाल नेहरू का निधन

मई 27, 1964 को पंडित जवाहरलाल नेहरू के निधन ने राजनीतिक ऊहापोह की स्थिति उत्पन्न कर दी। बतौर प्रधानमंत्री उनका पूरा कार्यकाल सत्रह साल का रहा। हार्टअटैक से उनकी मृत्यु हुई। इसी के साथ उनके बाद प्रधानमंत्री कौन बनेगा, इसके समीकरण भी तेज हो गए। तत्कालीन गृहमंत्री गुलजारी लाल नंदा को कुछ समय के लिए कार्यकारी प्रधानमंत्री बनाया गया।



(31 मार्च, 1959)

दलाई लामा का भारत आगमन

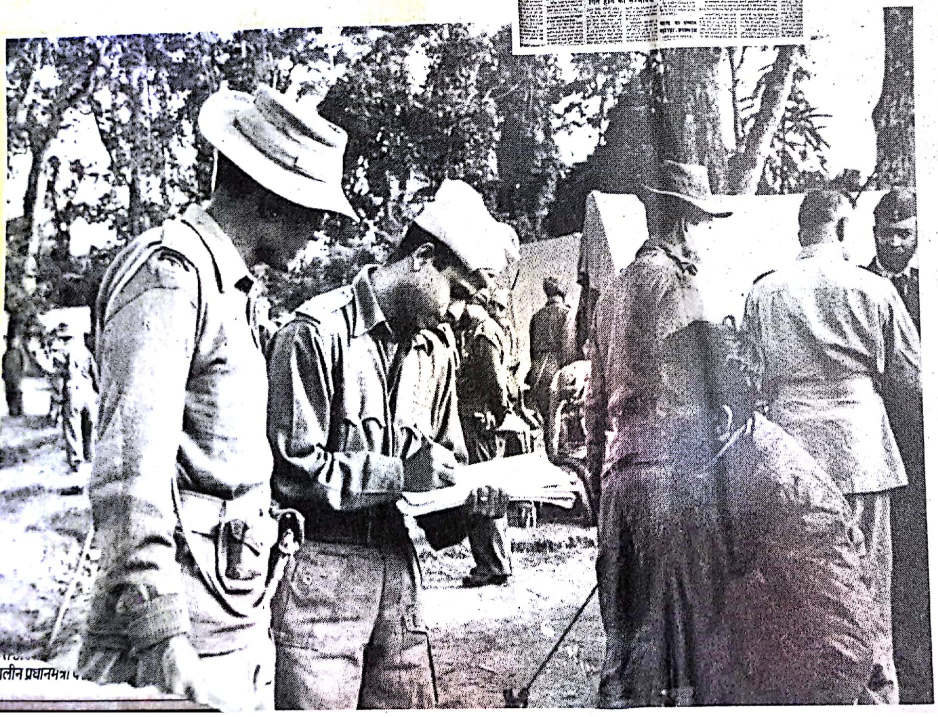
1959 में तिब्बत में चीनी घुसपैठ के विरोध में विद्रोह तेज होने लगा। चीन की ओर से उसे खत्म करने के लिए कई दमनकारी तरीके अपनाए गए। तिब्बती धर्मगुरु दलाई लामा हिमालय के दुर्गम दर्रों को पार कर पंद्रह दिन की यात्रा के बाद 31 मार्च, 1959 को भारत पहुंचे और भारत ने उन्हें बतौर राजनीतिक शरणार्थी स्वीकार भी कर लिया। खबरों के अनुसार तिब्बत में तीन दिन के संघर्ष के दौरान 2000 लोग मारे गए थे।

दूरदर्शन

(15 सितंबर, 1959)

दूरदर्शन की शुरुआत

इस दशक में भारतीय मनोरंजन की दुनिया में एक मील का पत्थर भी पार किया गया। 15 सितंबर, 1959 में एक प्रयोगात्मक प्रसारण के तौर पर डीडी यानी दूरदर्शन की शुरुआत दिल्ली से हुई। उस समय दूरदर्शन के पास एक छोटा ट्रांसमीटर और अस्थायी स्टूडियो ही था। ऑल इंडिया रेडियो की एक शाखा के तौर पर 1965 में इसका नियमित प्रसारण आरंभ हुआ।

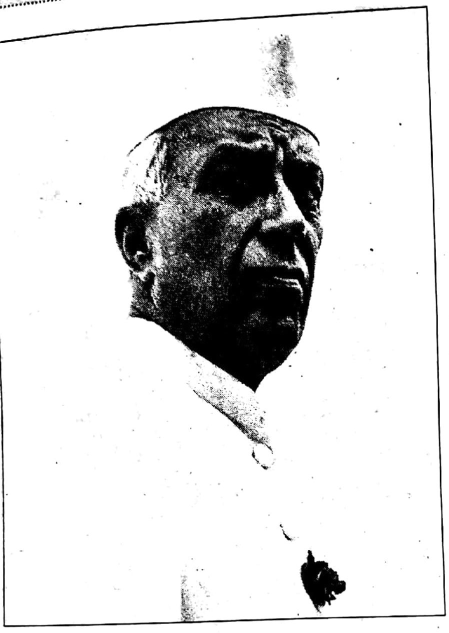


... करने का एक सुनहरा ...
... की शुरुआत तत्कालीन प्रधानमंत्री ...

(20 अक्तूबर - 21 नवंबर, 1962)

चीन से युद्ध

भारत और चीन के बीच मैकमोहन रेखा को लेकर पहले से ही संबंध आक्रामक बने हुए थे। 1959 में तिब्बती धर्मगुरु दलाई लामा को भारत ने शरण दी। इसके बाद छिटपुट तनावपूर्ण घटनाओं के बाद और दोनों देशों के बीच इन्हीं मुद्दों पर संवाद की प्रक्रिया लगातार चलते हुए भी 19... में चीनी सेना ने लद्दाख और मैकमोहन रेखा पर आक्रमण कर दिया और भारत की सी... अंदर तक आ गई। चीनी सेना ने रेजांग ला और तवांग पर ... को चीनी सेना के सीज फायर की घो...



(1947)

देश का बंटवारा

मानव इतिहास विस्थापन और पुनर्निर्माण के दौर से असंख्य बार गुजरा है। यह मानवीय जिजीविषा ही है, जो हर बार एक नई शुरुआत के साथ जीवन के नए अध्याय लिखती है।



(1951-52)

पहला आम चुनाव व पहली सरकार

नवगठित चुनाव आयोग ने देश भर में आम चुनाव कराने की चुनौती को बखूबी पूरा किया, जिसमें विजयी हुई कांग्रेस ने पहली सरकार बनाई और पंडित जवाहरलाल नेहरू प्रधानमंत्री बने।



(14 मई, 1948)

इजराइल का गठन

29 नवंबर 1947 को संयुक्त राष्ट्र ने फिलिस्तीन के लिए विभाजन योजना को पारित करने की सिफारिश रखी, जिसके परिणामस्वरूप 14 मई, 1948 को संयुक्त राष्ट्र के एक विशेष आदेश के बाद इजराइल का गठन हुआ। इजराइल की बुनियाद मूलत: यहूदी राज्य की अवधारणा के रूप में रखी गई थी। चित्र में इसकी घोषणा करते हुए इजराइल के पहले प्रधानमंत्री डेविड बेन गुरियन।



(24 जनवरी से 1 फरवरी, 1952)

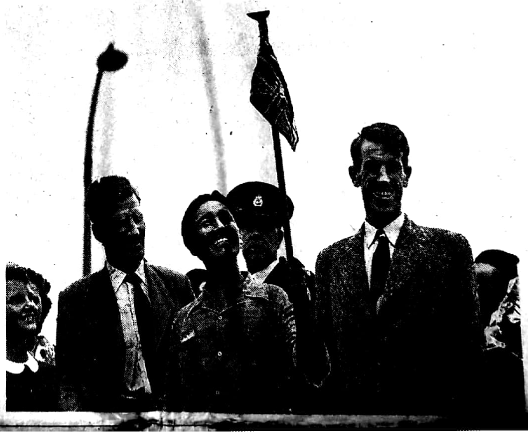
भारत का पहला अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह

देश में सिनेमा की शुरुआत आश्चर्यजनक रूप से बहुत जल्दी हो गई थी। सिनेमा में देश की प्रतिभा को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर सशक्त करने का एक सुनहरा अवसर पहले अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह के रूप में आया, जिसे बंबई में आयोजित किया गया। इसकी शुरुआत तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने की थी।

(28 मई, 1953)

माउंट एवरेस्ट पर फतह

एडमंड हिलेरी व तेनजिंग नोरगे की जोड़ी ने विश्व की सबसे ऊंची पर्वत चोटी माउंट एवरेस्ट पर पहुंचने में सफलता प्राप्त की।





हिन्दुस्तान

Hindustan

स्वतंत्र, सर्वसत्तासम्पन्न भारतीय गणराज्य की जय !

जन गण मन : 26 जनवरी 1950 के दिन देश में संविधान स्थापित हुआ और 'हिन्दुस्तान' में उस दिन पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद का आलेख प्रकाशित हुआ, जिसमें संविधान निर्माण की [illegible]



1966-75

इस दौर में भारत की राजनीति में कांग्रेस और इंदिरा गांधी विशेष रूप से प्रभावशाली साबित हुईं। पड़ोसी देशों से होने वाले संघर्षों को शांत करने की दिशा में अहम कदम उठाए गए। भारत एक व्यवस्थित विकास क्रम की ओर उन्मुख हुआ।



(18 मई, 1974)

स्माइलिंग बुद्धा

यह 18 मई, 1974 को भारत के पहले परमाणु परीक्षण का कोडनेम था। इसे राजस्थान के पोखरण के आर्मी बेस में किया गया। यह राष्ट्र संघ के पांच स्थायी सदस्य देशों के अलावा किसी अन्य देश द्वारा सूचित पहला परमाणु परीक्षण भी था।

(1966)

1966 को लाल बहादुर शास्त्री की असमय मृत्यु ने देश में एक बार फिर राजनीतिक अस्थिरता का माहौल बना दिया। गृहमंत्री गुलजारी लाल नंदा को कुछ समय के लिए कार्यकारी प्रधानमंत्री बनाया गया, लेकिन यह स्थायी हल नहीं था। अधिकांश कांग्रेसी पंडित नेहरू की बेटी और तत्कालीन सूचना एवं प्रसारण मंत्री इंदिरा गांधी के पक्ष में थे। लेकिन उनके नाम को राष्ट्रवादी नेता की छवि वाले मोरारजी देसाई से चुनौती मिल रही थी। आखिरकार इंदिरा गांधी ही प्रधानमंत्री बनीं।


हिन्दुस्तान





(2 जुलाई, 1972)

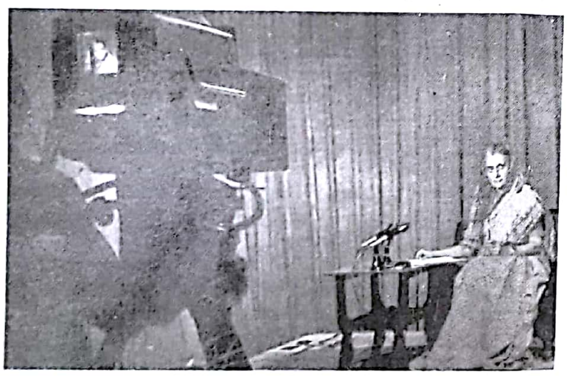
शिमला समझौता

1971 में हुए भारत-पाकिस्तान युद्ध को देखते हुए 2 जुलाई, 1972 को शिमला में दोनों देशों के बीच द्वंद्व और विवाद को समाप्त करने के लिए शिमला समझौता हुआ। इसमें दोनों देशों के बीच संबंधों को सामान्य बनाने और परस्पर शांति के कुछ सिद्धांत बनाए गए।

(15 मार्च, 1975)

हॉकी में भारत ने जीता वर्ल्ड कप

1975 में हुए तीसरे हॉकी विश्व कप में भारत विजेता बना। यह मलेशिया के कुआलालंपुर के मरडेका स्टेडियम में आयोजित हुआ था। भारत ने इसे पाकिस्तान से 2-1 से जीता। इस खेल के हीरो थे असलम शेर खान और विजेता टीम के कप्तान थे अजीत पाल सिंह।



(25 जून, 1975)

आपातकाल

भारत में 1975 से 77 के बीच 21 माह के लिए आपातकाल लागू हुआ। उस समय इंदिरा गांधी देश की प्रधानमंत्री थीं और फखरुद्दीन अली अहमद राष्ट्रपति थे। इस आपातकाल के दौरान नागरिक अधिकार समाप्त हो गए, पर आम जनता को इस दौर में इस बात से राहत मिली कि सरकारी काम समय पर होने लगा। 18 जनवरी, 1977 को आपातकाल समाप्त हुआ और मार्च में आम चुनावों की घोषणा की गई।

(17 नवंबर, 1966)

भारतीय मूल की पहली मिस वर्ल्ड रीटा फारिया

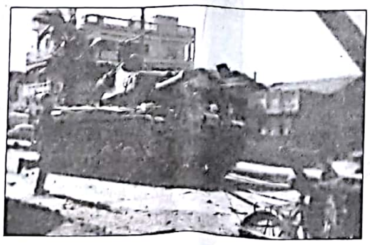
17 नवंबर, 1966 को भारत की रीटा फारिया को मिस वर्ल्ड का ताज पहनाया गया। इससे पहले वह मिस मुंबई और ईव्स वीकली मिस इंडिया का खिताब जीत चुकी थीं। रीटा फारिया एकमात्र ऐसी विश्व सुंदरी हैं, जिन्होंने खिताब जीतने के बाद अपनी मेडिकल डिग्री पूरी की। रीटा फारिया को चमक-दमक की दुनिया से ज्यादा रास आया अपना करियर। उनके पास मॉडलिंग और फिल्मों में काम करने के कई प्रस्ताव आए, पर रीटा ने उनमें दिलचस्पी नहीं दिखाई। हालांकि इसके बाद युवतियों में सौंदर्य प्रतियोगिता के प्रति आकर्षण बढ़ गया।



(30 अप्रैल, 1975)

वियतनाम युद्ध का अंत

वियतनाम युद्ध वियतनाम, लाओस और कंबोडिया के बीच 1955 में शुरू हुए शीतयुद्ध के तौर पर जाना जाता है। इसमें वियतनाम दक्षिणी और उत्तरी दो भागों में बंट गया। दक्षिणी वियतनाम अमेरिकी व अन्य देशों की फौजों के साथ मिल कर उत्तरी वियतनाम पर हमला करता रहा। इस युद्ध का अंत 30 अप्रैल, 1975 को हुआ।




हिन्दुस्तान

(10 जनवरी, 1966)

ताशकंद समझौता

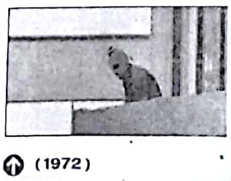
भारत-पाकिस्तान के 1965 में हुए युद्ध के बाद शांति समझौते के तहत 10 जनवरी, 1966 को दोनों देशों ने ताशकंद समझौते पर हस्ताक्षर किए। सोवियत यूनियन के प्रमुख अलेक्जेई कोसाइगिन ने मध्यस्थता की। इसमें भारत के प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति मोहम्मद अयूब खान शामिल हुए। समझौते में अमेरिका, सोवियत यूनियन और राष्ट्रसंघ के दबाव के चलते भारत को युद्ध में जीते गए पाकिस्तान अधिकृत भारतीय सीमावर्ती इलाके को और 1949 की सीजफायर लाइन को छोड़ना पड़ा।



(12 दिसंबर, 1968)

डॉ. हरगोबिंद खुराना को नोबेल

भारतीय मूल के अमेरिकी बायोकेमिस्ट हरगोबिंद खुराना को 1968 में चिकित्सा का नोबेल पुरस्कार दिया गया। उन्हें यह पुरस्कार वैज्ञानिक मार्शल डब्लू निरेनबर्ग और रॉबर्ट डब्लू होली के साथ साझेदारी में उस रिसर्च के लिए दिया गया, जिसमें उन्होंने यह खोज की कि न्यूक्लिक एसिड में न्यूक्लिओटाइड्स का क्रम किस तरह कोशिका में प्रोटीन के संश्लेषण का नियंत्रण करता है। यूनिवर्सिटी ऑफ विसकॉन्सिन, भारत सरकार और इंडो-यूएस साई-टेक फोरम ने उनके नाम पर देश में खुराना प्रोग्राम की शुरुआत की थी।



(1972)

म्यूनिख ओलंपिक्स में खिलाड़ियों की हत्या

1972 में म्यूनिख ओलंपिक में इजराइली ओलंपिक टीम के 11 सदस्यों पर हुए एक हमले में उन्हें बंधक बनाया गया और अंततः उनकी हत्या कर दी गई। हमलावरों की मांग थी कि इजराइल की जेल में बंद 234 कैदियों को छोड़ा जाए और रेड आर्मी फैक्शन के फाउंडर को भी रिहा किया जाए।

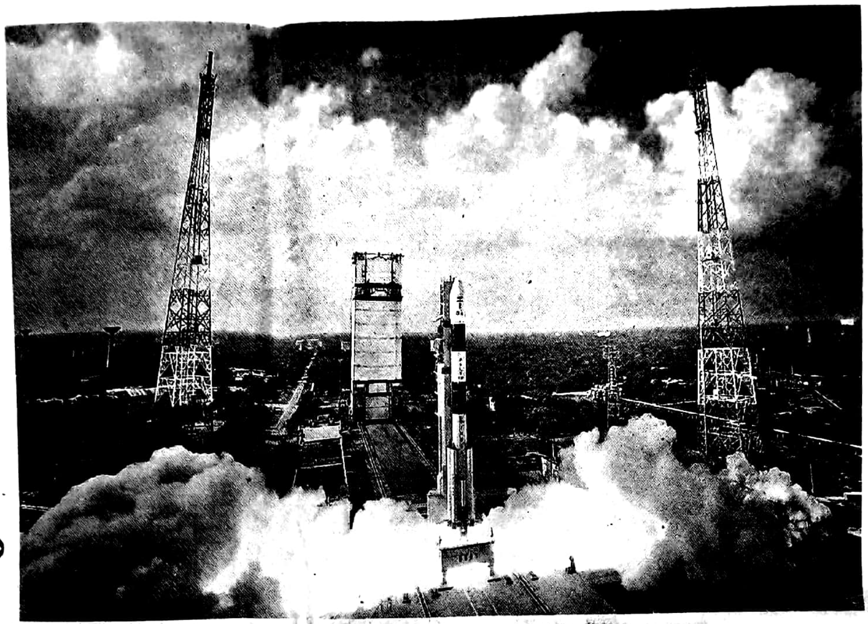
विज्ञान

धरती से मंगल तक

हिन्दुस्तान ने पिछले आठ दशकों में विज्ञान के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है। चाहे वह चांद पर पहुंचने का मिशन हो या मंगल मिशन। कम खर्च और बड़ी सोच के चलते हमने आसानी से कई प्रयोग कर डाले। आज हम गर्व से कह सकते हैं कि वैज्ञानिक समझ और बेहतरीन सपनों ने हमें आगे बढ़ने का ना सिर्फ हौसला दिया है, बल्कि रास्ता भी दिखाया है।



भारत के पहले प्रधानमंत्री के साथ परमाणु वैज्ञानिक डॉ. होमी जहांगीर भाभा



5 नवंबर 2013 को आंध्रप्रदेश के श्रीहरिकोटा से भारत के मार्स ऑर्बिटर मिशन का प्रक्षेपण किया। इस साल 24 सितंबर को मंगल की कक्षा में इस यान के पहुंचते ही, भारत पहले ही प्रयास में मंगल पर यान भेजने में सफलता पाने वाला दुनिया का पहला देश बन गया।



प्रोफेसर यशपाल

प्रख्यात वैज्ञानिक व शिक्षाविद् का जन्म : 26 नवंबर 1926 को हुआ। योजना आयोग में मुख्य सलाहकार, विज्ञान व टेक्नोलॉजी विभाग में सचिव व विश्वविद्यालय अनुदान आयोग में अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

समय के पहिए को मैं थोड़ा और पीछे ले जाता हूं, साल 1935 के आसपास। तब देश का बंटवारा नहीं हुआ था और मेरा बचपन बलूचिस्तान के क्वेटा में गुजर रहा था। इसी साल इस इलाके में भयानक भूकंप आया और हमारा घर तहस-नहस हो गया। जहां तक मैं याद कर पाता हूं, क्वेटा में शायद ही कोई ऐसा घर रहा होगा, जिसकी दीवारें खड़ी रहीं। खुद मैं और मेरा भाई, दोनों मलबे में दबते–दबते बच गए। खैर, इसके बाद हमलोग अपने नाना के कोटईसा शाह रहने गए। उनका घर ऊंचे टीले पर बना हुआ था। ऐसा क्यों? यह चेनाब नदी द्वारा छोड़ी गई मिट्टी का टीला था और हर साल इस इलाके के निचले हिस्से को यह नदी बहा ले जाती थी।

उस समय के लोग भूकंप और बाढ़ को देवी का प्रकोप या कुदरत का कहर बताते और इनको अपनी नियति मान सब कुछ बरदाश्त कर लेते थे। क्या आज भी यही स्थिति है? शायद नहीं। कुदरत का कहर तो हम अब भी मानते हैं, लेकिन इसके लिए इंसानी दखल को भी कसूरवार ठहराते हैं। और यह भी सच है कि इस कहर को भले हम रोक न पाएं, पर इसके प्रभाव को हमने काफी हद तक सीमित किया है। ध्यान रहे कि यह बात मैं तब कह रहा हूं, जब साल भर पहले ही उत्तराखंड को भयंकर तबाही का सामना करना पड़ा। इस साल ही जम्मू एवं कश्मीर के कई क्षेत्र बाढ़ में डूब गए और एक दशक पीछे जाने की जहमत उठाएं, तो 2001 में गुजरात में भयंकर भूकंप आया था, जिसमें बताया जाता है कि करीब 20,000 लोग मरे थे।

सबसे अधिक जरूरत सच को जानने की है और नए ज्ञान हासिल करने की है, जांचे-परखे बगैर किसी को मान्यता देने से इनकार करने की है।

यह कैसे हो पाया? मैं समझता हूं कि इसके लिए हमें अपनी आजादी और उसके तुरंत बाद के समय को देखना चाहिए। यह हमारी खुशकिस्मती रही कि आजाद भारत के पास दो कमाल के इंसान थे- महात्मा गांधी और पंडित जवाहरलाल नेहरू। गांधीजी जीवन में प्रयोग पर बल देते थे, जो मेरे अनुसार वैज्ञानिक समझ की बुनियाद ही है। देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित नेहरू एक गहरे वैज्ञानिक दृष्टिकोण के मालिक थे। आजाद और नए भारत को तब यही वैज्ञानिक समझ और कुछ बेहतरीन सपने चाहिए थे, जो नेहरू ने दिए। द डिस्कवरी ऑफ इंडिया में उन्होंने लिखा है, 'सबसे अधिक आवश्यकता वैज्ञानिक दृष्टिकोण, वैज्ञानिक साहस और वैज्ञानिक उपलब्धियों की है।



भारत के पहले व विश्व के 138वें अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा। 1984 में इसरो और इंटरकॉसमॉस के संयुक्त अंतरिक्ष अभियान के दौरान आठ दिन अंतरिक्ष में रहे।



1998 में सफल परमाणु परीक्षण का जश्न मनाते प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी, रक्षामंत्री जॉर्ज फर्नांडिज, एपीजे अबुल कलाम और फिजिसिस्ट और न्यूक्लियर वैज्ञानिक राजगोपाला चिदम्बरम (बाएं से)।

सबसे अधिक जरूरत सच को जानने की है और नए ज्ञान हासिल करने की है, जांचे–परखे बगैर किसी को मान्यता देने से इनकार करने की है, नए सबूतों की बुनियाद पर पुराने नतीजों को बदल देने की क्षमता की है, मानी हुई बातों पर से भरोसे को खत्म करने की है...। यह सब सिर्फ विज्ञान के लिए नहीं, बल्कि जिंदगी और इससे जुड़ी समस्याओं के लिए भी जरूरी है।' नेहरू बांधों को आधुनिक मंदिर कहा करते थे। आजाद भारत में साइंटिफिक टेंपर वाले वह पहले व्यक्ति थे। 1950 के दशक में मैं जब टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च, मुंबई से जुड़ा तो वहां होमी जहांगीर भाभा और राजा रमन्ना हमारे साथ थे और हम अक्सर यह देखते थे कि पंडित जी यहां आया करते और घंटों समय गुजारते थे।

आजादी के बाद भारत जब वैज्ञानिक खोज के क्षेत्र में आगे बढ़ा, तब तकनीक व पूंजी की भारी कमी थी, लेकिन कहते हैं कि अगर हौसला साथ हो, तो सबकुछ मुमकिन है। मैं समझता हूं कि तब के वैज्ञानिकों को यह कभी नहीं लगा कि वह हिन्दुस्तान में कुछ नहीं कर पाएंगे। पार्टीकल फिजिक्स और कॉस्मिक रेज में एक्सपेरीमेंटल काम शुरू हो चुके थे। यह वह समय था, जब पार्टीकल फिजिक्स में एक साथ पूरी दुनिया में काम हो रहे थे। इसके लिए कुछ ही देशों के पास बेहतरीन प्रयोगशालाएं थीं– अमेरिका, इंग्लैंड, भारत, यूरोप में दो–तीन जगहों पर और जापान। इस पूरे प्रयोग के लिए हीलियम गैस की जरूरत पड़ती थी, जो हमारे पास नहीं थी और हम हाइड्रोजन से काम चला लेते थे। हालांकि, यह खतरनाक भी हो सकता था।

फिर दुनिया में अंतरिक्ष विज्ञान की होड़-सी मच गई। यहां भी हम आगे रहे। इसमें सबसे पहला काम सूचना–प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुआ। हमारा पहला प्रयोग था- सैटेलाइट इंस्ट्रक्शनल टेलीविजन एक्सपेरीमेंट। 1975–76 में किसी भी देश के पास सैटेलाइट टेलीविजन नहीं था। हम इसमें कामयाब रहे और हमने इसे शहरों में नहीं, बल्कि गांवों में कामयाब बनाने का इरादा रखा था, क्योंकि इससे खेती–किसानी को काफी फायदा होता। हालांकि, यह प्रयोग शहरों में ही खूब कामयाब रहा। फिर हमारा अगला मिशन स्पेस प्रोग्राम रहा। जब हमें इस तरफ काम करने के लिए कहा गया तो मैं कॉस्मिक रेज पर काम कर रहा था और विक्रम साराभाई परमाणु रिएक्टर पर जुटे हुए थे। लेकिन उस वक्त के राजनीतिक नेतृत्व में जो दृढ़ता थी, उसी तरह हममें भी विविधताओं को साथ लेकर चलने का साहस था। हमारा काम अहमदाबाद में शुरू हुआ।

नासा की ओर से वैज्ञानिक वर्नर वॉन ब्रोन हमसे मिलने आए। इन्होंने ही वह स्पेस रॉकेट बनाया, जो चांद की सतह पर पहुंचा था। उन्होंने हमलोगों से कहा, 'यशपाल चांद पर पहुंचना एक बड़ी चुनौती थी, लेकिन तुमलोग जो कर रहे हो, वह इससे भी बड़ी चुनौती है, क्योंकि यह काम हर शख्स को घर बैठे दूर–दराज के इलाकों तक पहुंचाएगा।'

अप्रैल, 1984 में भारत ने अंतरिक्ष में कदम रखा और अंतरिक्षयात्री राकेश शर्मा ने तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से कहा– 'सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा।' हम रुके नहीं, बल्कि आगे बढ़ते जा रहे हैं। 11 और 13 मई, 1998 को ऑपरेशन शक्ति के जरिये तब के हमारे प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने हमें परमाणु संपन्न राष्ट्रों की कतार में ला खड़ा किया। हमारे वैज्ञानिक देश ही नहीं, बल्कि दुनिया भर की वैज्ञानिक परियोजना में काम कर रहे हैं। गॉड पार्टीकल पर काम कर रही सर्न प्रयोगशाला में भी भारत की टीम है। 1990 के बाद जैसे–जैसे आर्थिक क्षेत्रों का विस्तार हुआ, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में संभावनाओं के द्वार खुल गए। एक साथ कई स्पेस कार्यक्रम और मिसाइल–प्रोग्रामों की शुरुआत हुई। आज उनमें से कई में हम सफल हो चुके हैं और कई में सफलता की दहलीज पर पहुंच चुके हैं। इस बीच इन क्षेत्रों में हमने स्वदेशी तकनीकों को भी विकसित किया है। बीते दिनों, जब हमारा मंगलयान कामयाब रहा, तब मैं इसरो का संस्थापक सदस्य होने के नाते इसरो सेंटर में मौजूद था और इस ऐतिहासिक वैज्ञानिक उपलब्धि का गवाह बन रहा था। पहली बार में ही हमारा यह मिशन कामयाब रहा, जो यह बताती है कि हमारी वैज्ञानिक समझ गहरी है।

लेकिन यह वह समय भी है, खास तौर पर शिक्षा के क्षेत्र में, जहां हमें ज्ञान और सूचना के फर्क को समझना होगा। हकीकत यह है कि [illegible] सूचनाओं की अधिकता हो गई है। [illegible] और समझदार समाज चाहिए, रट्टा–[illegible] नहीं।



जून 2013 में उत्तराखंड में आई बाढ़ का एक दृश्य। इस दौरान केदारनाथ मंदिर क्षेत्र में हुए भूस्खलन में लगभग 6000 लोग मारे गए थे।

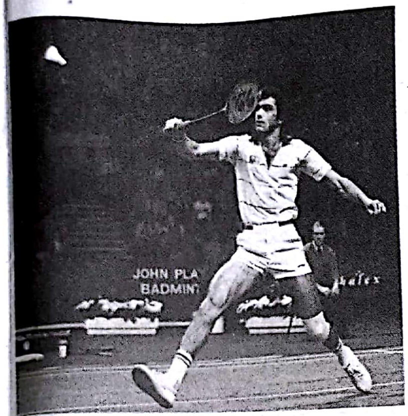


26 जनवरी 2001 को गुजरात में आए भूकंप में तबाह एक गांव का दृश्य। सुबह 8:46 पर आए भूकंप में लगभग 20 हजार लोगों की मौत हो गई थी और लगभग एक लाख 66 हजार लोग घायल हुए थे। इस भूकंप में लगभग चार लाख घर भी जमींदोज हो गए थे।



1976-85

अंतरिक्ष में राकेश शर्मा के कदम, क्रिकेट-बैडमिंटन में अभूतपूर्व सफलताएं, भाजपा का उदय और देश को पहली कार मिली। पर इंदिरा गांधी की हत्या, भोपाल गैस त्रासदी और सिख विरोधी दंगों ने इस दशक को जाते-जाते कई घाव भी दिए...



(23 मार्च, 1980)

बैडमिंटन में बने चैंपियन

प्रकाश पादुकोण ऐसे पहले भारतीय थे, जिन्होंने ऑल इंग्लैंड बैडमिंटन चैंपियनशिप जीता। इंडोनेशिया के लीम स्वि किंग को हराकर वर्ष 1980 में उन्होंने यह खिताब अपने नाम किया। प्रकाश ने 1972 में नेशनल जूनियर टाइटल और सीनियर टाइटल जीता। 1979 तक वे नेशनल टाइटल को जीतते गए। पहला अंतर्राष्ट्रीय टाइटल वर्ष 1978 में हुए कॉमनवेल्थ गेम्स में जीता। उन्होंने लंदन मास्टर्स ओपन, डेनिश और स्वीडिश ओपन भी जीता।



हिन्दुस्तान

इन्दिरा गांधी की अंत्येष्टि सम्पन्न

वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पुत्र राजीव ने चिता में आग लगाई

भीगी आंखों, रुंधे गलों से लाखों लोगों ने अपनी प्रिय नेता को विदाई

दंगों में मरे लोगों की संख्या ९०० हुई

वातावरण में शांति और ...

दिल्ली में पुलिस की गोली से १० मरे

बख्तरबंद गाड़ियों पर सेना की गश्त

प्रधानमंत्री का दिल्ली में दौरा

1984 में इंदिरा गांधी की हत्या के बाद कई दिनों तक यह खबर सुर्खियों में छाई रहीं। उस समय पूरा देश दुख के सागर में डूबा था। लोगों को अब उनकी छवि राजीव गांधी में दिखाई दे रही थी।

(31 अक्तूबर, 1984)

इंदिरा गांधी की हत्या

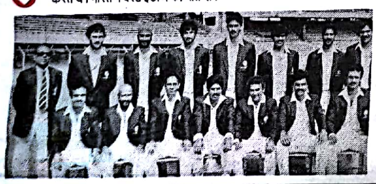
तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या से पूरा देश सहम उठा। 31 अक्तूबर 1984 को सुबह 9.20 को सफदरजंग रोड स्थित उनके आवास पर उनके ही दो अंगरक्षकों ने उन्हें गोली मार दी। सतवंत सिंह और बेअंत सिंह ने ऑपरेशन ब्लू स्टार के समय स्वर्ण मंदिर में हुए नुकसान से क्षुब्ध होकर यह किया था। इंदिरा गांधी की हत्या के बाद देश में दंगे भड़क उठे। हजारों सिख मारे गए।



(25 जून, 1983)

क्रिकेट वर्ल्ड कप जीता भारत

कपिल देव ने अपनी टीम के साथ आईसीसी क्रिकेट वर्ल्ड कप 1983 जीतकर हजारों भारतीयों का सपना पूरा किया। वर्ल्ड कप ब्रिटेन में 9 से 25 जून तक चला। उस समय वर्ल्ड कप में 8 टीमों ने भाग लिया। तब मैच 60 ओवर के हुआ करते थे। भारत ने वेस्ट इंडीज को मात दी।

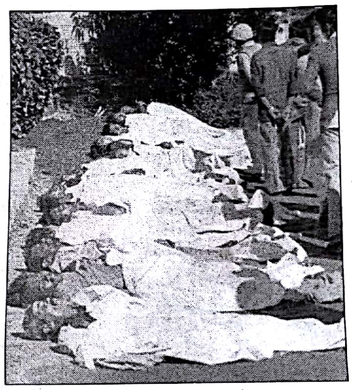


(6 अप्रैल, 1980)

भाजपा का गठन

भारतीय जनता पार्टी का गठन 6 अप्रैल, 1980 को किया गया। पार्टी के इतिहास को तीन अलग-अलग हिस्सों में बांटा जा सकता है- भारतीय जनसंघ, जनता पार्टी और भारतीय जनता पार्टी। पार्टी के पहले अध्यक्ष अटल बिहारी वाजपेयी बने।





(3 दिसंबर, 1984)

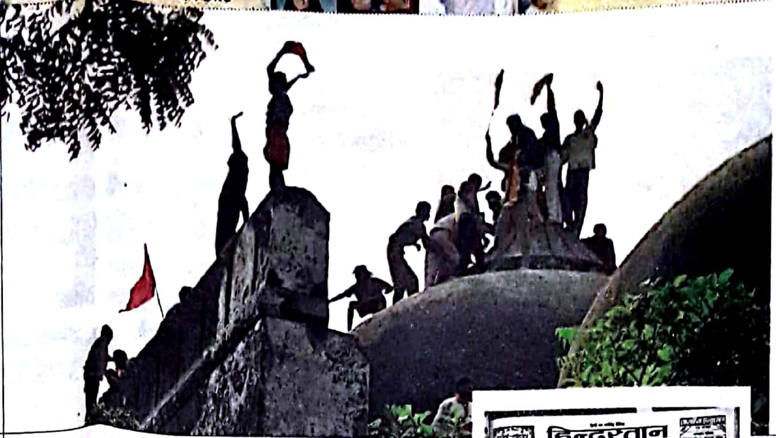
भोपाल गैस त्रासदी

भोपाल गैस त्रासदी सबसे बड़ी औद्योगिक दुर्घटनाओं में से एक है। 3 दिसंबर 1984 को यूनियन कार्बाइड कंपनी के प्लांट से 42 टन टॉक्सिक मिथाइल आइसोसाइनेट नामक जहरीली गैस लीक हो गई, जिससे 5 लाख से अधिक लोग प्रभावित हुए। मध्य प्रदेश सरकार ने 3,787 लोगों के मरने की पुष्टि की। हजारों लोग विकलांग हो गए।



1986-95

बाबरी मस्जिद ध्वंस, राजीव गांधी की हत्या और मुंबई बम धमाकों ने एक ओर जहां देश को झकझोर कर रख दिया, वहीं इस दशक में हुए उदारीकरण, सौंदर्य प्रतियोगिताओं में सफलता तथा मोबाइल फोन के आने से युवाओं को नई दिशा मिली...



(6 दिसंबर, 1992)

बाबरी मस्जिद का ध्वंस

90 के दशक की शुरुआत में जिस घटना ने पूरे देश में सांप्रदायिक हलचल मचा दी, वह था बाबरी मस्जिद का ध्वंस। 1992 में 6 दिसंबर को अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण को लेकर विशाल राजनीतिक रैली निकाली जा रही थी। अचानक यह रैली दंगे में बदल गई और गुस्साई भीड़ ने मस्जिद पर धावा बोल उसे ध्वस्त कर दिया। इस घटना के बाद देश में सांप्रदायिक माहौल काफी खराब हो गया। सरकार की शांति बहाल करने की तमाम कोशिशों के बावजूद कई शहरों में दो समुदायों के बीच दंगे भड़क उठे। करीब 2,000 लोग मारे गए।



उस समय हिन्दुस्तान ने बाबरी मस्जिद ध्वंस की खबर को कुछ इस तरह से कवरेज दी थी। हर पक्ष की बात को सामने रखने का प्रयास किया गया था, जिससे सांप्रदायिक सद्भावना बनी रहे।

(31 जुलाई, 1995)

आया मोबाइल फोन



देश में पहला मोबाइल फोन 31 जुलाई 1995 को नोकिया ने बनाया और आज 15 साल बाद भारत सबसे अधिक मोबाइल प्रयोग करने वाले लोगों का देश बन गया है। एक अनुमान के अनुसार आज हमारे देश में करीब 635 मिलियन मोबाइल यूजर्स हैं।



(11 फरवरी, 1990)

नेल्सन मंडेला रिहा

11 फरवरी 1990 को दक्षिण अफ्रीका के नेता नेल्सन मंडेला साढ़े 27 साल जेल में रहने के बाद रिहा हुए। पूरी दुनिया में उनकी रिहाई का स्वागत हुआ।



(12 मार्च, 1993)

मुंबई में बम धमाके

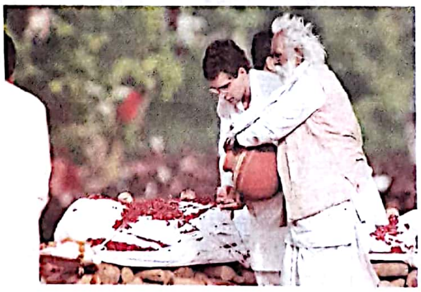
1993 में मुंबई में हुए सीरियल बम धमाकों की गूंज देश में हर ओर सुनाई दी। यह अंडरवर्ल्ड की पहली बड़ी दस्तक थी। 12 मार्च को एक साथ 13 बम धमाकों से मुंबई सहम उठी। 350 से अधिक लोग मारे गए और 1200 घायल हुए। धमाके कराने का आरोप अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहिम पर लगा। जांच में दाऊद के गुर्गे टाइगर मेनन का नाम आया, जिसने यह साजिश की थी। जांच यह भी पता चला कि इसमें आईएसआई का भी हाथ है।

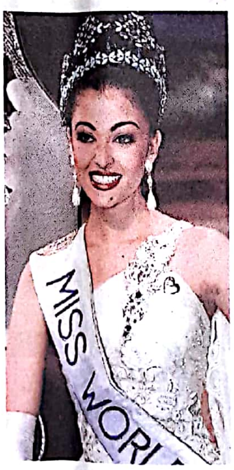
(19 सितंबर, 1990)

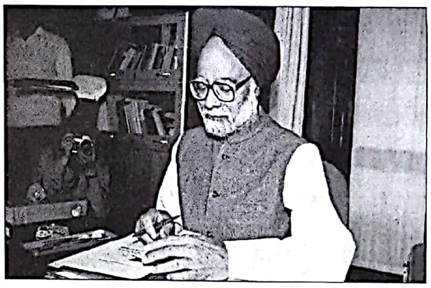
मंडल कमीशन का विरोध



दिल्ली यूनिवर्सिटी के देशबंधु कॉलेज से कॉमर्स की पढ़ाई कर रहे छात्र राजीव गोस्वामी ने वी पी सिंह सरकार के मंडल कमीशन की रिपोर्ट को लागू करने के फैसले से नाराज होकर अपने शरीर में आग लगा ली। रिपोर्ट में सरकारी नौकरियों में आरक्षण कोटा बढ़ा कर 27 फीसदी करने की मांग की गई थी। काफी समय तक पूरे देश में इसके विरोध में आंदोलन होते रहे।







(24 जुलाई, 1991)

उदारीकरण की शुरुआत

भारत में उदारीकरण का आरंभ 90 के दशक में हुआ, जब तत्कालीन वित्त मंत्री मनमोहन सिंह ने अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए कई तरह के उपाए किए। दरअसल वर्ष 1985 से भारत विदेशी कर्जों तले दब रहा था, लेकिन 1990 में यह समस्या काफी बढ़ गई और रुपया कमजोर होता चला गया। देश दिवालिया होने की चौखट पर आ खड़ा हुआ। उस समय सरकार ने अर्थव्यवस्था में उदारीकरण की नीति अपनाई। विदेशी निवेश को बढ़ाने के लिए कई अहम फैसले लिए गए। करों में कई बदलाव किए गए। आयात-निर्यात की नीतियों में बदलाव किए गए। इसके बाद देश आर्थिक तौर पर संभल सका।

(19 नवंबर, 1994)

ऐश्वर्या बनीं मिस वर्ल्ड

करीब 20 साल पहले ऐश्वर्या का मिस वर्ल्ड बनना हमारे देश की शान बना। इसके बाद से सौंदर्य प्रतियोगिताओं के प्रति देश के युवाओं का क्रेज काफी बढ़ गया। 19 नवंबर 1994 को ऐश्वर्या ने दक्षिण अफ्रीका में यह खिताब जीता था। प्रतियोगिता में 87 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया, पर 21 साल की ऐश्वर्या की खूबसूरती का सबने लोहा माना।





(21 मई, 1991)

राजीव गांधी की हत्या

90 के दशक की शुरुआत में राजनीतिक गलियारों में तूफान लाने वाली घटना थी तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या। किसी को रत्ती भर भी अंदाजा नहीं था कि तमिलनाडु के श्रीपेरमबदूर में 21 मई, 1991 के दिन रैली को संबोधित करने गए राजीव गांधी को आत्मघाती हमले में मार दिया जाएगा। हत्या का आरोप श्रीलंका के आतंकवादी संगठन लिट्टे पर लगा।

राजीव गांधी की हत्या के अगले दिन हिन्दुस्तान ने कुछ इस तरह से खबर को प्रकाशित किया। लोगों में संयम बना रहे, इसलिए 'दुख में धीर धरें' प्रकाशित किया गया। घटनाक्रम का पूरा विवरण, कांग्रेस (इ) के दिग्गजों के बयान और हत्या के कारणों पर विस्तृत लेख छापे गए।

(21 मई, 1994)

मिस यूनिवर्स सुष्मिता

सुष्मिता सेन ने 43वां मिस यूनिवर्स पेजट 21 मई 1994 को फिलिपींस में जीता। यह जीत इसलिए भी ऐतिहासिक थी, क्योंकि सुष्मिता पहली भारतीय मिस यूनिवर्स थीं और उनकी उम्र केवल 18 साल थी। सुष्मिता ने भारत को अंतरराष्ट्रीय सौंदर्य जगत में जगह दिला दी थी। उन्होंने सौंदर्य प्रतियोगिता में सवालों के इस तरह से जवाब दिए कि लोग उनके कायल हो उठे।



(8 अक्तूबर- 8 नवंबर, 1987)

क्रिकेट वर्ल्ड कप का आयोजन

1987 में भारत-पाकिस्तान में पहली बार क्रिकेट वर्ल्ड कप का आयोजन हुआ। यह आईसीसी द्वारा आयोजित चौथा वर्ल्ड कप था। 8 अक्तूबर से 8 नवंबर तक खेल चला। भारत के साथ-साथ कई मैच पाकिस्तान में भी हुए। यह पहला मौका था, जब विश्व कप इंग्लैंड से बाहर आयोजित किया गया था। इसी वर्ल्ड कप में एकदिवसीय खेल के लिए ओवर्स की संख्या 50 निर्धारित की गई थी, जो आज तक कायम है, जबकि इससे पहले 60 ओवर हुआ करते थे। यह विश्व कप पहली बार आस्ट्रेलिया ने जीता था। फाइनल मुकाबले में उसने कोलकाता के ईडन गार्डन स्टेडियम में इंग्लैंड को शिकस्त दी थी।



अतीत का झरोखा



1929 भारत में निर्धनों की सेवा के लिए मदर टेरेसा 6 जनवरी 1929 को भारत पहुंचीं।

1930 अंग्रेज सरकार ने महात्मा गांधी के विरोध प्रदर्शन दर्शाने वाली सभी न्यूजरील्स को प्रतिबंधित किया।

1936 ऑल इंडिया रेडियो की स्थापना 8 जून 1936 को हुई। रेडियो प्रसारण की शुरुआत 1923 में हो चुकी थी।



1942 स्वर कोकिला लता मंगेशकर ने 1942 में मात्र 13 वर्ष की आयु में अपने गायन करियर की शुरुआत की। उनका पहला गीत मराठी में था।

1945 वर्ष 1945 में देश की आजादी के समय भारत की जनसंख्या 34.5 करोड़ थी।

1946 संविधान सभा की पहली बैठक नई दिल्ली में 9 दिसंबर 1946 में संपन्न हुई थी।

1954 देश में कला व संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए 1954 में नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट व ललित कला अकादमी का गठन हुआ।

1965 26 जनवरी 1965 को देश की आधिकारिक भाषा के तौर पर हिन्दी को अपनाया गया।

फोटो क्रेडिट : गेटी इमेजेस, एचटी आर्काइव



बीसवीं शताब्दी में भारतीय क्रिकेट टीम में सुनील गावस्कर भारत का गौरव और विश्व का क्रिकेट जुनून बने।



1928 के एम्सटर्डम ओलंपिक में हॉकी के जादूगर कहे जाने वाले मेजर ध्यानचंद ने 14 गोल किए थे।

खेलों की दुनिया

ज्यादा गोल, ज्यादा खेल



भारत ने 1983 में अपना पहला क्रिकेट विश्वकप जीता। उस समय भारतीय टीम की कप्तानी कपिल देव ने की थी। भारत में क्रिकेट वैसे ही खूब लोकप्रिय था, लेकिन विश्वविजेता के खिताब ने इसकी लोकप्रियता को चरम पर पहुंचा दिया और यह जन-जन का प्रिय खेल बन गया।

भारत के शुरुआती खेल इतिहास में दो ही खेल बाकियों पर काबिज दिखाई देते हैं। राजाओं और अंग्रेज अधिकारियों का प्रिय क्रिकेट का खेल और छावनियों में खेला जाने वाला हॉकी। हॉकी में हम शुरुआत में बेहद सफल रहे, लेकिन बाद में क्रिकेट जन-जन का लोकप्रिय बना। दरअसल इसमें हमने खुद को खूब संवारा। परिणाम यह है कि भारत में आज क्रिकेट के खेल ने बहुआयामी तरक्की की है।



अयाज मेमन
वरिष्ठ पत्रकार हैं। वह खेल के साथ ही विविध विषयों पर 35 साल से लेखन से जुड़े हैं।

एक तरह से देखें, तो भारत में खेलों को औपचारिक ढांचा 1925 के आस-पास मिला। 1925 में इंडियन हॉकी फेडरेशन की शुरुआत हुई, 1927 में इंडियन ओलंपिक एसोसिएशन बनी और एक साल बाद तत्कालीन नियामक संस्था द इंपीरियल क्रिकेट कॉन्फरेंस में बोर्ड ऑफ कंट्रोल फॉर क्रिकेट को शामिल किया गया था। बेशक हमारे खिलाड़ी यह साबित करने को कटिबद्ध थे कि प्रतिभा के मामले में वे अपने विदेशी शासकों से किसी भी स्थिति में कम नहीं थे। यह बड़ा ही रोचक तथ्य है कि भारत के दो प्रमुख खेल-क्रिकेट और हॉकी, भले ही एक ही वक्त में शुरू हुए, पर दोनों का इतिहास अलग है। क्रिकेट को सबसे पहले अंग्रेजी शासकों के करीबी रहे व्यापारियों और प्रशासनिक अधिकारियों से बढ़ावा मिला। स्थानीय लोगों ने जब इसे अपनाया, तो यह और लोकप्रिय हुआ। 1912 में क्वाड्रैंगुलर टूर्नामेंट क्रिकेट खेल का प्रमुख आयोजन बन गया था, हालांकि यह अंग्रेजों के 'विभाजन और शासन' के सिद्धांत पर खड़ा था, जिसमें हिंदुओं, पारसियों, मुसलमानों और यूरोप के लोगों को एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा कर दिया गया था और यह बात महात्मा गांधी जैसे कई स्वतंत्रता सेनानियों को नापसंद थी।

वहीं हॉकी छावनियों में खेला जाने वाला खेल था, जिसमें भारत को कई उपलब्धियां भी हासिल हुई थीं। 1928 के एम्सटर्डम ओलंपिक में भारत ने हॉलैंड को हराकर स्वर्ण जीता था। अपने फन में माहिर ध्यानचंद ने 14 गोल किए थे। उस समय उनमें से बहुतों ने नंगे पांव खेला था। ध्यानचंद की शख्सियत बर्लिन ओलंपिक में अपने चरम पर पहुंची। उन्होंने भारत को जर्मनी पर विजय दिलाई और हिटलर की आर्य श्रेष्ठता के सिद्धांत पर करारा प्रहार किया। अगले दो दशकों तक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लगातार होने वाली उपलब्धियों ने हॉकी को राष्ट्र का खेल बना दिया। उधर विफलताओं के बावजूद भी क्रिकेट का आकर्षण बढ़ रहा था।

चकाचौंध करता है क्रिकेट

शायद क्रिकेट भारतीय मानसिकता के लिए तुलनात्मक रूप से ज्यादा उपयुक्त रहा। इस खेल के संरक्षक राजशाही और बड़े व्यावसायिक घराने थे, जिसके फलस्वरूप इसमें ज्यादा पैसा और चकाचौंध भी था। जब 1932 में लॉर्ड्स में पहला टेस्ट मैच खेला गया, तब से अगले आठ दशक तक भारत की साख और उत्थान में अभूतपूर्व प्रगति हुई।

बीसवीं शताब्दी के पड़ाव तक पहुंचते-पहुंचते जब रणजीत सिंह जी ने इस खेल में लेग ग्लैंस की शुरुआत की, तब से भारतीय खिलाड़ियों ने इसमें अपना कौशल साबित किया है। अलग-अलग दौर में भारत के पास विश्वस्तर के बैट्समैन (सुनील गावस्कर और सचिन तेंदुलकर) और गेंदबाज (कपिल देव) रहे। लेकिन एक वक्त था, जब भारत के खिलाड़ी टूर करने में अनिच्छा दिखाते थे, वहीं आज भारत को ऐसी टीम माना जाता है, जहां हर खिलाड़ी सामने आना चाहता है और अच्छा मूल्य भी चाहता है। भारतीय क्रिकेट लगभग 3 बिलियन डॉलर का खेल है, जिससे 75 फीसदी दर्शक और राजस्व प्राप्त होते हैं। इसकी चौंकाने वाली प्रगति के तीन मुख्य पड़ाव कहे जा सकते हैं-एक 1983 का विश्वकप, दूसरा 1991 का आर्थिक उदारीकरण, जिसके कारण बड़े प्रायोजक पाना संभव हो सका और तीसरा है केबल टीवी की शुरुआत, जिसने इसे हर घर में पहुंचा दिया और आईपीएल जैसे सफल आयोजनों के रूप में इसे और आगे बढ़ाया गया। इन तीनों ही कारणों को एक लाभदायक नीति में बदलने की जरूरत थी। बीसीसीआई बदलते भारत के उपभोक्तावादी रुख को भांपने में समर्थ रही, जबकि अन्य लोकप्रिय खेल, जैसे कि फुटबॉल (जिसने 1956 में एशियन गेम्स में चौथा स्थान प्राप्त किया था), ऐसा नहीं कर पाए। हॉकी भी अच्छे प्रशासन और दूरदर्शिता के अभाव में पीछे रह गया।

क्रिकेट का उत्थान अन्य खेलों की प्रगति में बाधा बन गया। खासकर ओलंपिक खेल, जिनमें भारत सूची में सबसे नीचे दिखता था। रोचक बात यह है कि भारत ने अपना पहला ओलंपिक मेडल पहले ओलंपिक प्रयास में ही पा लिया था। 1900 में पेरिस में नॉर्मन प्रितचार्ड को दो रजत पदक मिले। हालांकि यह विवादित भी है। चूंकि नॉर्मन कलकत्ता का एक अंग्रेज था, इसलिए अब तक इंग्लैंड भी इन मेडल्स पर अधिकार जताता है। प्रितचार्ड भारत के लिए दौड़ा था, इसलिए अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक कमेटी ने पुरस्कार भारत को दिया। लेकिन उसके बाद 112 सालों में ओलंपिक के संदर्भ में भारत में पदकों का अकाल जैसा रहा। एक शताब्दी से भी ज्यादा समय में मात्र 26 पदक। इनमें से हॉकी ने लगातार छह स्वर्ण पदक दिलाए।

पर अब तसवीर बदल रही है। 2008 के बीजिंग ओलंपिक में शूटिंग में अभिनव बिंद्रा ने पहला निजी स्वर्ण पदक दिलाया और 2012 के लंदन ओलंपिक ने भी हमें मेडल के मामले में अच्छी उपलब्धियां कराईं। बैडमिंटन, शूटिंग और बॉक्सिंग में जीत के साथ ही भारत को कुल छह मेडल मिले। आगे भविष्य के बारे में क्या? इस मामले में भारत की गरीबी, प्रति व्यक्ति आय और जीडीपी की दुहाई भी तब ठीक नहीं लगती, जब रेस ट्रैक पर बादशाहत वाले इथियोपिया, जमैका और केन्या का उदाहरण आता है।

प्रतिभाएं हर कहीं

क्रिकेट की आश्चर्यजनक प्रगति के तीन मुख्य पड़ाव कहे जा सकते हैं। पहला-1983 का विश्वकप, दूसरा-1991 का आर्थिक उदारीकरण और तीसरा है घर-घर में केबिल टीवी का आगमन।



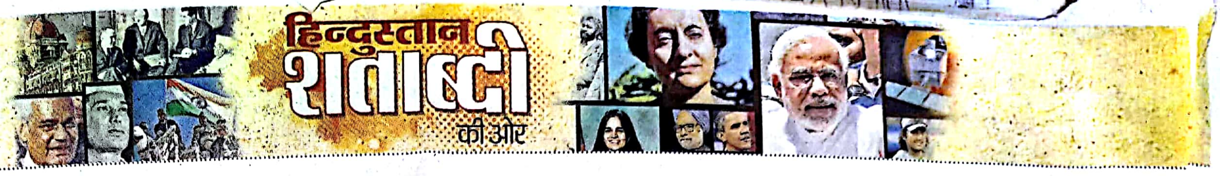
लॉन टेनिस में लिएंडर पेस की उपलब्धियां भी उल्लेखनीय हैं।

क्रिकेट के अलावा अन्य खेलों में प्रतिभाएं सामने आ रही हैं। साइना और पीवी सिंधु बैडमिंटन में शीर्ष के खिलाड़ी हैं और धनुर्धारी दीपिका कुमारी विश्व में नंबर वन है, लिएंडर पेस, महेश भूपति, रोहन बोपन्ना और साइना मिर्जा टेनिस में हाई रैंक के खिलाड़ी हैं। यह सच है कि टेनिस ने हमें कई पदक दिलाए हैं, लेकिन अभी तक इसमें निजी वर्ग में कोई बड़ा ईनाम नहीं हासिल हो पाया है। लिएंडर पेस का ओलंपिक का कांस्य पदक और 14 ग्रैंड स्लैम डबल्स टाइटल्स से बात नहीं बनती। वर्तमान स्टार खिलाड़ियों के संन्यास के बाद स्टार खिलाड़ियों की एक नई पीढ़ी को तैयार करने में हमें बहुत ज्यादा प्रयासों की आवश्यकता है। टेनिस उन देशों के लिए उपयुक्त है, जिनकी आय और संपन्नता बढ़ रही हो। फॉर्मूला वन और फुटबॉल की लोकप्रियता बढ़ रही है, लेकिन हमारे देश में इन दोनों खेलों को लेकर कब बेहतर समझ विकसित होगी, इस बारे में स्पष्टता नहीं है। बैडमिंटन को इस मामले में ज्यादा भुनाया जा सकता है। इंडियन बैडमिंटन लीग में आए दर्शकों ने इस खेल के प्रति लोगों की रुचि को दर्शाया है। लेकिन इससे पहले बैडमिंटन को अपने उन आंतरिक विवादों से बाहर आना होगा। किसी भी खेल को जीतने के लिए शुरुआत से इसे संभालना होगा। खेल से जुड़े लोगों के आधार को विस्तार देना होगा, प्रतिभाओं को पोसना होगा। उसके बाद ट्रेनिंग, उनके आहार, खेल संबंधी उपचार और मानसिक जुड़ाव पर भी ध्यान देना होगा। क्यूबा, केन्या, कोरिया, कजाकिस्तान और चाइना ने इस संदर्भ में अपनी नीतियों को खूब पैना किया है। उन्होंने कुछेक खेलों पर ही ध्यान दिया, ताकि वह अपने संसाधनों का अतिदोहन न कर बैठें। चीन की इन्हीं नीतियों ने उसे बड़े लाभ दिए।

अगर भारत को विश्व के खेल परिदृश्य में एक मजबूत दावेदार के तौर पर उभरना है, तो उन चुनिंदा खेलों पर ध्यान देना होगा, जिनमें हम अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं। पर इन सबसे पहले, आईओए, बीसीसीआई, एआईएफएफ आईएचएफ/ एचआई वगैरह के असमय उठे विवादों वाली खेल राजनीति भी एक मुद्दा है। अगर हम नहीं चाहते कि भारत का खेल भविष्य निराशा के भंवर में फंसे, तो इसे सबसे पहले निपटाना होगा।

वर्तमान में देश में खेल जगत की तसवीर बदल रही है। 2008 के बीजिंग ओलंपिक में शूटिंग में अभिनव बिंद्रा ने पहला निजी स्वर्ण पदक दिलाया



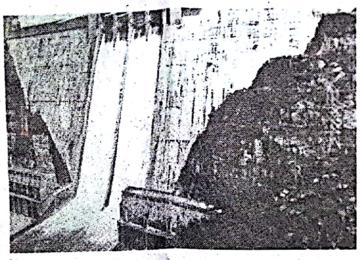




(4 अक्तूबर, 1957)

स्पूतनिक सैटेलाइट

विश्व का पहला कृत्रिम उपग्रह इस दिन पृथ्वी की निचली कक्षा में स्थापित हुआ। 58 सेंटीमीटर व्यास वाले इस उपग्रह में चार बाह्य एंटीना लगे थे, जिनसे रेडियो पल्स प्रसारित होती थीं। इसे सोवियत यूनियन द्वारा छोड़ा गया था। इसे अमेरिका और सोवियत यूनियन के बीच तकनीकी वर्चस्व की परोक्ष होड़ की शुरुआत भी मान सकते हैं। इसकी लॉन्चिंग से वैश्विक राजनीति, सैन्य, तकनीकी और वैज्ञानिक विकास में नए मोड़ आए।



(22 अक्तूबर, 1963)

भाखड़ा नंगल बांध देश को समर्पित

भाखड़ा नंगल की बहुउद्देशीय बांध परियोजना का शिलान्यास पंडित जवाहरलाल नेहरू ने 18 नवंबर, 1955 को किया। यह बांध 1963 के अंत तक बन कर तैयार हो गया। उसके बाद भी इसमें आगे की योजनाओं पर 1970 तक काम होता रहा। इसे 22 अक्तूबर, 1963 को देश को समर्पित किया गया।



(अगस्त, 1965)

भारत-पाकिस्तान युद्ध

यह युद्ध विवादित कश्मीर को लेकर हुआ था। इससे पहले पाकिस्तान ने ऑपरेशन जिब्राल्टर के माध्यम से जम्मू और कश्मीर में घुसपैठ की कोशिश की। 15 अगस्त, 1965 में लगभग 33,000 पाकिस्तानी सैनिकों ने स्थानीय कश्मीरियों के वेश में भारतीय नियंत्रण रेखा पार की। इसी दिन भारतीय सेनाओं ने भी सीज फायर लाइन पार की। यह युद्ध 23 सितंबर, 1965 को समाप्त हुआ।



हिन्दुस्तान

हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ दैनिक

सेना की शत्रु पर तोपों से गोलाबारी

नेफा में दो स्थानों पर आगे बढ़ कर हमला

भारत व चीन से बिना शर्त वार्ता करने का अनुरोध

रूस के प्रतिनिधि का सं. रा. महासभा में सुझाव

भारतीय साम्यवादियों को चीन समर्थन का निर्देश

भारत की चीन ... शीलता व्यर्थ

३१ अक्तूबर १९६२
31 Oct 1962

1962 का साल भारत और चीन के संबंधों के संदर्भ में याद किया जाता है। इस दशक में पड़ोसी देश चीन का आक्रामक पक्ष ... सामने आया। 1962 के अक्तूबर महीने में जब ... ने भारत यात्रा की। इसके ठीक ... पार कर भारत

(अप्रैल, 1959)

मार्टिन लूथर किंग जूनियर की भारत यात्रा

अमेरिका में नागरिक अधिकार आंदोलन के जनक मार्टिन लूथर किंग जूनियर अप्रैल, 1959 में भारत यात्रा पर आए। भारत के अहिंसा आंदोलन ने उन पर अपनी विशेष छाप छोड़ी और अपने एक भाषण में उन्होंने यह जताया भी कि यहां आने के बाद अमेरिका में नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष के प्रति वह और प्रतिबद्ध हुए थे।





हिन्दुस्तान

The Leading Hindustan Hindi Daily

... में मानव की प्रथम उड़ान में रूस स...

१०८ मिनट की यात्रा के बाद गगारिन पृथ्वी पर वापिस

संसार भर के वैज्ञानिकों और राजनीतिज्ञों द्वारा रूस को सफलता पर बधाई

(12 अप्रैल, 1961)

अंतरिक्ष में मनुष्य की पहली उड़ान

12 अप्रैल, 1961 को अंतरिक्ष तकनीक ... यात्री यूरी गगारिन अंतरिक्ष में ... माध्यम से 108 मिन...

भारत का पहला अंतर्राष्ट्रीय फि...

देश में सिनेमा की ...

1996-05

यह दशक दिल दहलाने वाली घटनाओं के लिए याद किया जाएगा। एक ओर जहां न्यूयॉर्क में हुई 9/11 की घटना है, वहीं अमन के लिए निकली लाहौर बस यात्रा के बाद कारगिल युद्ध भी देखने को मिला। आतंकियों ने लोकतंत्र के मंदिर यानी हमारी संसद को भी नहीं बख्शा।



(11 सितंबर, 2001)

9/11 : आतंक का खौफनाक मंजर

न्यूयॉर्क के वर्ल्ड ट्रेड टावर में हुए हमले ने लोगों के दिलों पर जो जख्म दिए, वे आज तक नहीं भरे हैं। 11 सितंबर 2001 के इस आतंकी हमले (अक्सर जिसे 9/11 कहा जाता है) से दुनिया का सबसे शक्तिशाली देश उस समय सहम उठा था। हालांकि आज 13 बरस बाद उसी जीरो ग्राउंड पर दुनिया का चौथा सबसे ऊंचा फ्रीडम टावर खड़ा हो चुका है।



हिन्दुस्तान

अमेरिका पर आतंकी कहर



(26 जुलाई, 1999)

दुश्मन को मिला मुंहतोड़ जवाब

26 जुलाई 1999 के दिन भारतीय सेना ने कारगिल युद्ध के दौरान चलाए गए 'ऑपरेशन विजय' को सफलतापूर्वक अंजाम देकर भारत भूमि को घुसपैठियों के चंगुल से मुक्त कराया था। इसी की याद में '26 जुलाई' को अब हर वर्ष कारगिल दिवस के रूप में मनाया जाता है।



(1998)

सोनिया गांधी बनी कांग्रेस अध्यक्ष

1997 में कोलकाता में कांग्रेस के सम्मेलन में आखिरकार सोनिया गांधी कांग्रेस में प्राथमिक सदस्य के रूप में शामिल हो गई। सोनिया गांधी ने 1997 में कोलकाता के 'प्लेनरी सेशन' में कांग्रेस की प्राथमिक सदस्यता ग्रहण की और उसके 62 दिनों के अंदर 1998 में वह कांग्रेस की अध्यक्ष चुनी ली गई।

(13 दिसंबर, 2001)

संसद पर आतंकी हमला

13 दिसंबर, 2001, का तारीख, जिसे भुलाना भारतीयों के लिए आसान नहीं होगा। इसी दिन लोकतंत्र के मंदिर पर हमला हुआ था। लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद के आतंकी भारत की हिम्मत तोड़ना चाहते थे, मगर हमारे सुरक्षाकर्मियों ने जान की बाजी लगा कर उनके मंसूबों को कामयाब नहीं होने दिया।



हिन्दुस्तान

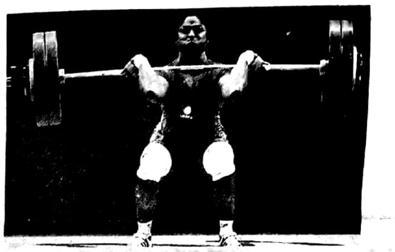
संसद पर आतंकवादी हमला



(19 सितंबर, 2000)

ओलंपिक में कांस्य जीतने वाली पहली भारतीय महिला

कर्णम मल्लेश्वरी ओलम्पिक खेलों में कांस्य पदक जीतने वाली प्रथम महिला खिलाड़ी है। इन्होंने सिडनी ओलंपिक खेल, 19 सितंबर 2000 में यह पदक हासिल किया।





(4 फरवरी, 2004)

फेसबुक की शुरुआत

सोशल नेटवर्किंग साइट फेसबुक का आरंभ 4 फरवरी, 2004 में हार्वर्ड के एक छात्र मार्क जुकरबर्ग ने की थी। तब इसका नाम द फेसबुक था। शुरू में कॉलेज नेटवर्किंग के रूप में इसका आरंभ हुआ था।



(26 दिसंबर, 2004)

खौफ और दहशत का नाम रहा सुनामी

प्राकृतिक आपदाओं में सुनामी तबाही का दूसरा सबसे बड़ा नाम है। 26 दिसंबर 2004 को हिंद महासागर में आई सुनामी लहर ने भारत सहित दुनिया के कई देशों में भारी तबाही मचाई। इस आपदा में ढाई लाख से भी ज्यादा लोगों की जानें गई।



(10 दिसंबर, 1998)

अमर्त्य सेन को नोबेल पुरस्कार

अर्थशास्त्र के लिए 1998 का नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रोफेसर अमर्त्य सेन पहले एशियाई हैं। उन्हें यह पुरस्कार 10 दिसंबर 1998 को प्राप्त हुआ था। उन्होंने कल्याण और विकास के विभिन्न पक्षों पर अनेक पुस्तकें तथा पर्चे लिखे हैं।



(27 फरवरी, 2002)

गोधरा दंगे में जला गुजरात

27 फरवरी, 2002 की सुबह अयोध्या से आ रहे 57 कार सेवकों को गोधरा रेलवे स्टेशन पर साबरमती एक्सप्रेस में जिंदा जला कर मार डाला गया। इस घटना के बाद 28 फरवरी को गुजरात के विभिन्न शहरों में दंगे भड़कने शुरू हो गए। पहली और दूसरी मार्च को दंगा अपने उग्र रूप में था, लेकिन तीन मार्च को सरकार ने दंगों पर पूरी तरह से नियंत्रण पा लिया था।



हिन्दुस्तान

साबरमती एक्सप्रेस की बोगियां फूंकीं, 57 मरे

(28 मार्च, 2004)

सहवाग ने बनाया तिहरा शतक

'नजफगढ़ के सुल्तान' वीरेन्द्र सहवाग ने इस दिन वह कर दिखाया, जो भारतीय क्रिकेट इतिहास में अभी तक किसी ने नहीं किया था। सहवाग ने 28 मार्च 2004 को मुल्तान में पाकिस्तान के खिलाफ 309 रन बनाए थे। दूसरी बार 2008 में चेन्नई में द. अफ्रीका के खिलाफ 319 रन बनाए।





(19 फरवरी, 1999)

लाहौर बस यात्रा

पंद्रह साल पहले 19 फरवरी, 1999 को तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी पाकिस्तान से रिश्ते सुधारने के लिए बस लेकर लाहौर गए थे। नवाज शरीफ उस समय पाकिस्तान के प्रधानमंत्री थे। दोनों ने लाहौर-घोषणा पत्र भी जारी किया था।

टेक्नोलॉजी

..और हो गई दुनिया हाईटेक



1936

आठ दशक पहले किसी ने सोचा भी न होगा कि आने वाला कल उनकी सोच से कुछ इस कदर अलग होगा कि पूरा जीवन तकनीक के इर्दगिर्द ही घूमता नजर आएगा। आज जहां पांच साल का बच्चा टैबलेट पर तेजी से अपनी उंगलियां नचाता है, वहीं स्मार्टफोन महज आपकी आवाज पर ही मनचाही सामग्री परोस देता है। पिछले 8 दशकों में तकनीक यूं ही करवट बदलती रही और देखते ही देखते हम हाईटेक हो गए।

तकनीक इस तेजी से बदलेगी, दो पीढ़ी पहले के लोगों ने शायद ही सोचा होगा। 2 नवंबर 1936 को जब पहली बार बीबीसी ने उस वक्त की हाई डेफिनेशन टेलीविजन ब्रॉडकास्ट सर्विस शुरू की थी तो लोगों ने कुछ ऐसा महसूस किया कि जैसे वे एक नए युग में प्रवेश कर गए हैं। उसके बाद पूरे से संदूक में बंद रहने वाला टीवी, जिसे खोलने के लिए हम पहले उसका शटर खोलते थे, धीरे-धीरे लोगों के घरों में नजर आने लगा। पुराने लोगों को आज भी याद होगा वह ब्लैक एंड व्हाइट जमाना। उसके बाद आए मोटे से कलर टीवी, लेकिन एलसीडी ने सभी को आउटडेटेड कर दिया है। हालांकि प्लाज्मा और एलसीडी मार्केट में पहले से आ गए थे, लेकिन हमारी पॉकेट में ये कुछ अर्से से ही फिट होने लायक बने हैं। एलईडी की दस्तक के साथ टीवी देखने का अंदाज ज्यादा स्लिम और चमकदार हुआ। और अब कर्व्ड टीवी का जमाना आ गया है, जो तकनीक का एक नया मोड़ है।



1971

में आईबीएम की इंजीनियरिंग टीम के लीडर अलान शुगार्ट की देखरेख में सबसे पहली फ्लॉपी डिस्क ईजाद हुई। इसका आकार 8 इंच का था और यह प्लॉस्टिक से बनी थी। डिस्क के लचीलेपन को देखते हुए इसका नाम फ्लॉपी रखा गया।

1936 के बाद से कंप्यूटर टेक्नोलॉजी में हर दशक में बहुत अधिक बदलाव आए। 1936 में जहां जेड-1 कंप्यूटर सामने आया, वहीं 1985 आते-आते माइक्रोसॉफ्ट विंडो का भी आविष्कार हो चुका था, लेकिन अब विंडो 8 का इस्तेमाल एक सामान्य सी बात हो गई है। अब डेस्कटॉप कंप्यूटर हमारी गोद में लैपटॉप बन कर आ गया है। मेज के सामने बैठने की बंदिश खत्म हुई। साल 2000 तक कंप्यूटर ज्यादा पावरफुल और सस्ते हो गए थे, लेकिन लैपटॉप ने उसके किले में जबरदस्त सेंध लगाई है। 2008 में इन्होंने पहली बार बिक्री में पीसी को पछाड़ दिया। बाद में नोटबुक (नेटबुक) आई, जो लैपटॉप से भी सस्ती और हल्की है। इंटेल के प्रोसेसर एटम ने नोटबुक को ज्यादा काबिल और कम बैटरी कंज्यूम करने वाला बना दिया। कंप्यूटरों ने हमारी जिंदगी बदली तो लैपटॉप ने कंप्यूटिंग को ही बदल दिया।

सोशल मीडिया के क्षेत्र में क्रांति लाने का श्रेय फेसबुक के संस्थापक मार्क जुकरबर्ग को जाता है। अब दोस्तों संग गप्पे मारने के लिए किसी कॉफी शॉप तक जाने की बंदिश नहीं रही।



1939

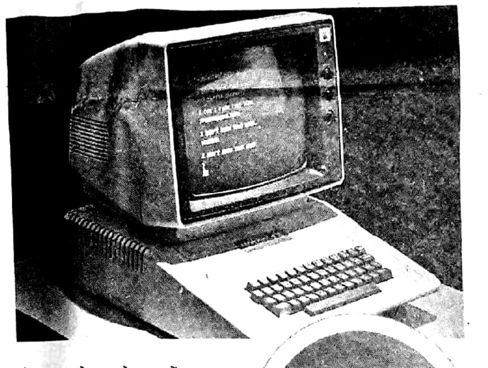
में द्वितीय विश्वयुद्ध की शुरुआत होने पर भारत में भी रेडियो के सारे लाइसेंस रद्द कर दिए गए और ट्रांसमीटरों को सरकार के पास जमा करने के आदेश दे दिए गए। नब्बे के दशक तक लोकप्रिय रेडियो आज के दौर में एफएम चैनलों की वजह से चलन में है।

वाई2के (यानी सन 2000) के बाद का समय टेक वर्ल्ड के लिए बहुत खास रहा। गैजेट्स और टेक्नोलॉजी ने हमारी जिंदगी ही बदल दी। गूगल ग्लास जैसे आविष्कारों ने टेक्नोलॉजी की परिभाषा ही बदल डाली। टेक्नोलॉजी का यह कमाल देखना अपने आप में जादू है। लगता है जैसे आंखों के आगे सारी दुनिया हमारे इशारे पर काम कर रही है। टेक्नोलॉजी के द्वारा यह सब भी संभव था, शायद ही इसकी किसी ने कभी कल्पना की होगी। एप्पल के रूप में जॉब्स ने दुनिया को वह चीज दी है, जिसके बारे में कुछ कहने की जरूरत नहीं है। जॉब्स ने अपने इनोवेशन के साथ एनिमेटिड फिल्म, डेस्क टॉप कम्प्यूटर्स, म्यूजिक, सेल्यूलर फोन और टेबलेट आदि के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव किए।

बीते जमाने के पोस्टकार्ड, इन्लैंड लैटर्स, टेलीग्राम को एसएमएस ने भुला दिया। मोबाइल फोन से पहला एसएमएस 1993 में भेजा गया था, लेकिन इसे पंख 2000 के बाद लगे। 2000 में 17 अरब एसएमएस भेजे गए थे, जबकि 2008 में यह तादाद 41 खरब को पार कर गई। मोबाइल के इस फीचर ने ग्रीटिंग कार्ड्स तक की छुट्टी कर दी। न्यू ईयर हो, दिवाली या बर्थडे, अब बधाई देने के लिए लोगों की उंगलियां कार्ड के बजाए मोबाइल के की-पैड पर लिखने लगीं। 2009 में व्हॉटसेप की शुरुआत हुई, मगर 2013 तक आते-आते दुनिया भर में इसकी धूम मच गई। आज एसएमएस, एमएमएस की बजाए लोग व्हॉटसेप पर व्यस्त हैं।

1936

में जहां जेड-1 कंप्यूटर सामने आया, वही 1985 आते-आते माइक्रोसॉफ्ट विंडो का भी आविष्कार हो चुका था, लेकिन अब विंडो 8 का इस्तेमाल एक सामान्य सी बात हो गई है। आज मैं बड़े आकार के वे पीसी लैपटॉप में बदल गए हैं।



2004

में हार्वर्ड के एक छात्र मार्क जुकरबर्ग ने शुरुआत की फेसबुक की, तब इसका नाम 'द फेसबुक' था। शुरू में कॉलेज नेटवर्किंग के रूप में इसका आरंभ हुआ। कुछ ही महीनों में यह नेटवर्क पूरे यूरोप में पहचाना जाने लगा। अगस्त 2005 में इसका नाम फेसबुक कर दिया गया। फेसबुक में अन्य भाषाओं के साथ हिन्दी में भी काम करने की सुविधा है।

इंटरनेट के आगाज ने अपनी स्पीड से जिंदगी को रफ्तार दी। वर्ष 1995 में वीएसएनएल ने देश में आम जनता के लिए इंटरनेट सेवा की शुरुआत की थी। जैसे-जैसे वक्त गुजरता गया, तेजी से प्रसार हो रही सेवा जैसे 2जी, 3जी व 4जी सर्विस ने एमबीपीएस तक की स्पीड को लोगों की पहुंच में कर दिया। वह इंटरनेट ही है, जिसने सूचनाओं के आदान-प्रदान को महज कुछ सेकेंड्स में तक में सिमटा दिया है। टेक्नोलॉजी के इस युग में अब जीपीएस नेविगेशन कहीं भी न भटक जाने का भरोसा दिलाता है। इंटरनेट सिर्फ सूचनाओं के लिहाज से ही नहीं, बल्कि सोशल नेटवर्किंग से लेकर स्टॉक एक्सचेंज, बैंकिंग, ई-शॉपिंग आदि के लिए अब अहम बन चुका है। इसके लिए गूगल जैसे सर्च इंजन असली हकदार है। आज भारत के कई किसान हाईटेक हो रहे हैं। फसलों के बारे में वे इंटरनेट से जानकारी ले रहे हैं। एसएमएस से रेलवे रिजर्वेशन की जानकारी मिल रही है। भारत इस क्रांति को अगले चरण पर ले जाने की तैयारी कर रहा है।

बीते दशकों में गूगल अपने आप में एक खोज है, जिसका कोई जवाब नहीं है। यह अपने आप में किसी जादुई खोज से कम नहीं है, जिसने दुनिया में जानकारी के क्षेत्र में क्रांति कर दी है। सूचना प्राप्त करने के लिए अब भारी भरकम ब्रिटेनिका को पलटना नहीं पड़ता, आज दुनिया की लगभग हर जानकारी गूगल के सर्च इंजन में मौजूद है, बस आवश्यकता है आपके एक क्लिक की। इन दशकों में नित नई टेक्नोलॉजी सामने आती रही। मसलन दुनिया के लाखों लोगों की जिंदगी का हिस्सा बन चुकी वॉयस ओवर इंटरनेट प्रोटोकॉल (वीओआईपी) और वीडियो चैट सेवा को हम आज हल्के में लेते हैं, लेकिन 10 साल पहले शुरू हुई इस सेवा का जब कुछ लोगों ने पहली बार इस्तेमाल किया तो वे खुद पर भरोसा ही नहीं कर पा रहे थे। आज स्काइप की तरह कई कंपनियां ऐसी सेवा दे रही हैं। गूगल हैंगआउट्स, एप्पल की फेसटाइम, ब्लैकबेरी की बीबीएम, टैंगो और वीबर कुछ ऐसी ही लोकप्रिय सेवाएं हैं।

2009

में व्हॉटसेप की शुरुआत हुई और 2013 तक आते-आते दुनिया भर में लोकप्रिय हो गई। आज एसएमएस की बजाय लोग व्हॉटसेप पर व्यस्त रहने लगे हैं।

इन आठ दशकों में टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में चमत्कारिक रूप से परिवर्तन देखने को मिला। क्या टेलीफोन के आविष्कारक एलेक्जेंडर ग्राहम बेल ने यह कल्पना की होगी कि कुछ ग्राम्स वजनी फोन के ऐप्स जिंदगी को कुछ यूं आसान बनाएंगे? एक दौर ऐसा भी था, जब छोटा सा पेजर संदेशों को पहुंचाने का काम बखूबी कर रहा था, लेकिन मोबाइल की धमक के आगे पेजर टिक नहीं पाया।

देश में 1995 में मोबाइल फोन्स ने दस्तक दी। हैंडसेट तब भारी व आकार में बड़े थे, वहीं उन्हें इस्तेमाल करना भी आसान नहीं था। आज जहां टैरिफ रेट को कम कर ग्राहकों को अपनी ओर खींचती सेल्यूलर कंपनियां बांहें पसारे खड़ी हैं, वहीं एक वक्त ऐसा भी था, जब इनकमिंग के लिए भी कीमत चुकानी होती थी। वक्त गुजरता गया और 2003 के बाद फोन्स की न सिर्फ कीमतें कम हुई, बल्कि इनका इस्तेमाल आम लोगों की पहुंच के भीतर भी आगा है। ये मोबाइल फोन्स ही हैं, जिन्होंने डेस्कटॉप ही नहीं लैपटॉप को भी सेकेंडरी बना दिया। नेट सर्फिंग, ईमेल, वीडियो चैट आदि कई खूबियों ने मोबाइल फोन के नित नए मॉडल्स को बाजार में उतरने के लिए प्रेरित किया।

टेक्नोलॉजी ने संगीत सुनने का अंदाज बदला। कभी ग्रामोफोन के रिकॉर्ड, फिर रेडियो और टेपरिकॉर्डर ने संगीत सुनने का आनंद दिया, वहीं नए दौर का आईपॉड किसी टर्निंग प्वाइंट जैसा है। आईपॉड ने लोगों को डिजिटल ढंग से म्यूजिक स्टोर करने का फैन बनाया। क्या वह दौर याद है, जब हम अपने टेप रिकॉर्डर के लिए काले रंग का गोल प्लेयर फिर कैसेट खरीदते थे, फिर कुछ अर्से तक म्यूजिक सीडी भी खरीदीं। लेकिन 23 अक्टूबर 2001 को लॉन्च हुए आई-पॉड ने इन सभी का काम तमाम कर दिया। वैसे तो बाजार में कई डिजिटल म्यूजिक प्लेयर भी हैं और अब फोन में भी एमपी3 फाइल्स सेव हो सकती है, लेकिन इसकी आदत डलवाने का क्रेडिट आई पॉड को ही जाएगा।

आज टेक्नोलॉजी में आपकी सोच को हकीकत में बदलने का दम है। इन बीते दशकों में एक से बढ़कर एक गैजेट्स आते गए। इन्हीं में से एक रहा टच। लेकिन जब टच का जलवा आपके फोन पर आया तो धमाल मच गया। आई-फोन ने दुनिया को अपना दीवाना बना दिया। अब हर मोबाइल कंपनी इस रेंज में कूद रही है और 5-6 हजार रुपये की रेंज में यह मिलने लगा है। कंप्यूटिंग की दुनिया में भी टच स्क्रीन की एंट्री हुई। विंडोज-8 के साथ इसे नई रफ्तार मिली है। डिजिटल होती जिंदगी को समेटने का काम भला कितने दिन तक एनालॉग रह सकता था? ट्रेक टेक्नोलॉजी और आईबीएम ने पहली फ्लैश ड्राइव 2000 में लॉन्च की थी और तब से अब तक यह हमारी जिंदगी का हिस्सा बन गई है। जेब में पेन हो न हो, पेन-ड्राइव जरूर होनी चाहिए। आपकी तस्वीरें हों, गाने या जरूरी फाइल्स, सब कुछ छोटी-सी ड्राइव में सहेजा जा सकता है। कभी हम फ्लॉपी में डेटा सेव करते थे, और अब कंप्यूटर में फ्लॉपी ड्राइव भी नहीं दिखती। सीडी की यहां भी छुट्टी होती लग रही है। अब टीवी और डीवीडी प्लेयर भी यूएसबी ड्राइव से लैस होकर आने लगे हैं।

क्या आपको याद है कि आप आखिरी बार कैमरे से निकालकर रील धुलवाने कब गए थे? यही है, डिजिटल कैमरे का रुतबा। रील वाले कैमरों और उससे जुड़े हर पहलू की इसने छुट्टी कर दी है। 1999 में निकॉन ने 2.74 मेगापिक्सल का एसएलआर डिजिटल कैमरा लॉन्च किया था। अब तो 41 मेगापिक्सल तक के कैमरा फोन भी आ गए हैं। वहीं ब्लैकबेरी ने ऑफिस को वाकई मोबाइल बनाया। चाहे जहां जाओ, वहीं अपने ऑफिस की या कोई भी ई-मेल खोल लो। चाहे तो वर्ड फाइल पर काम करो या पावर पॉइंट में, सब कुछ इस फोन पर हो जाता है। हालांकि अब लगभग हर ब्रैंड का स्मार्ट फोन ये फीचर देता है, लेकिन 2002 में आए इस फोन ने नई जेनरेशन के काम करने का अंदाज पूरी तरह बदला है।

टेक्नोलॉजी में हो रहे इन बदलावों में बच्चों की दुनिया भी अछूती नहीं रही। बच्चे खेलने की जिद आज भी करते हैं, लेकिन घर से बाहर नहीं, बल्कि घर के अंदर। शिकायत हो सकती है कि डिजिटल गेमिंग ने उन्हें घर-घुस्सू बना दिया है, लेकिन सच यही है कि बड़े और छोटे, सभी इसके दीवाने हैं। प्लेस्टेशन, एक्सबॉक्स और निंटेंडो ने ऐसी गेमिंग डिवाइस पेश की है, जिनके थ्री-डी इफेक्ट्स जबर्दस्त हैं। पहला माइक्रोसॉफ्ट एक्सबॉक्स 2001 में आया था, जबकि पीएस 1994 में। तब से करोड़ों प्लेस्टेशन, एक्सबॉक्स बिक चुके हैं। और दूसरे गेमिंग ऑप्शन की तो इसमें गिनती ही नहीं।

तेजी से बदल रही टेक्नोलॉजी को सबसे पहले युवाओं ने गले लगाया। फेसबुक के संस्थापक मार्क जुकरबर्ग शायद यह बात भलीभांति समझ गए थे। उन्हें सोशल मीडिया के क्षेत्र में क्रांति लाने का पूरा श्रेय जाता है। अब दोस्तों संग गप्पे मारने के लिए किसी कॉफी शॉप तक जाने की बंदिश नहीं रही। हमारे स्मार्टफोन या कंप्यूटर की स्क्रीन पर फेसबुक, ट्विटर या माइस्पेस, स्काइप में हमेशा यारों से गपशप जारी रहती है। कब के बिछड़े स्कूली दोस्त एक दिन अचानक हमारी स्क्रेपबुक या वॉल पर कमेंट करते नजर आते हैं। सबसे पहले फ्रेंडस्टर 2002 में आई, जबकि फेसबुक और ऑरकुट 2004 में। आज फेसबुक नंबर-1 सोशल नेटवर्किंग साइट है, जिसके यूजर्स की संख्या करोड़ों में है।

पंकज घिल्डियाल



2000

चर्च से चलकर चांद के पार

केरल के थुंबा गांव के एक छोटे से चर्च से अंतरिक्ष कार्यक्रमों की शुरुआत करने वाले इसरो ने चांद-तारों की दुनिया में कामयाबी के नए झंडे गाड़े हैं। आर्थिक तंगी, संसाधनों की कमी, अंतरराष्ट्रीय पाबंदियों और तमाम दुश्वारियों के बावजूद वह खुद को दुनिया की सर्वश्रेष्ठ अंतरिक्ष संगठनों में शुमार करने में कामयाब रहा है।



14 कोहिनूरों के दम पर चमके हम

आपकी जेब से खर्च हुए महज चार रुपये



कदम दर कदम ऐतिहासिक सफर

1962 · 1963 · 1969 · 1972 · 1975 · 1976 · 1981 · 1982 · 1984 · 1988 · 2000 · 2001 · 2003 · 2005 · 2007 · 2008 · 2009 · 2013 · 2014

सिर्फ अंतरिक्ष में छलांग नहीं बल्कि रणनीतिक मोर्चे पर भी मजबूती



मंजिलें और भी हैं...



तालमेल के करीब लेकिन जीवन की खोज दूर की बात

कम साधन के साथ कामयाबी के मंगल पर पहुंचा इसरो



चर्च से चलकर चांद

केरल के थुंबा गांव के एक छोटे से चर्च से अंतरिक्ष कार्यक्रमों की शुरुआत करने वाले इसरो ने चांद-तारों की दुनिया में कामयाबी के नए झंडे गाड़े हैं। आर्थिक तंगी, संसाधनों की कमी, अंतरराष्ट्रीय पाबंदियों और तमाम दुश्वारियों के बावजूद वह खुद को दुनिया की सर्वश्रेष्ठ अंतरिक्ष संगठनों में शुमार करने में कामयाब रहा है।

नई दिल्ली | हिन्दुस्तान टीम

मंगल और चंद्रमा की सतह पर कदम रख चुके भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान केंद्र (इसरो) का सफर केरल के थुंबा गांव के छोटे से चर्च से शुरू हुआ था। 1962 में इंडियन नेशनल कमेटी ऑफ स्पेस रिसर्च (इनकोस्पार) के गठन के बाद भारतीय परमाणु कार्यक्रम के जनक होमी भाभा जब अंतरिक्ष अनुसंधान केंद्र के लिए जमीन की खोज में निकले, तब उनकी नजर थुंबा पर पड़ी थी।

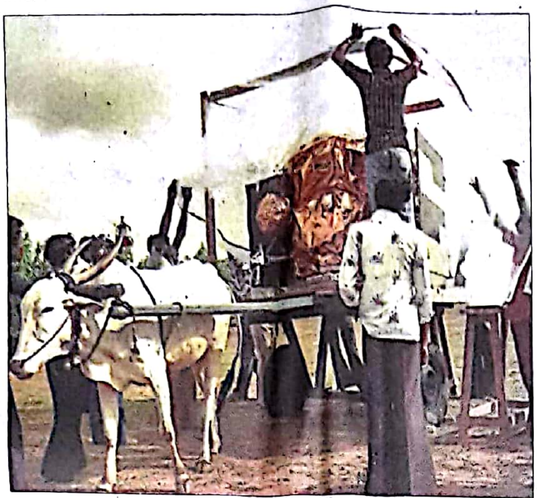
भूमध्य रेखा से नजदीकी के कारण 1.5 वर्ग किलोमीटर के दायरे में फैला यह गांव अंतरिक्ष संबंधी शोध कार्यक्रमों के लिए सबसे उपयुक्त था। भाभा हर हाल में यहां अंतरिक्ष केंद्र स्थापित करना चाहते थे, लेकिन थुंबा में बसे मछुआरे इसके सख्त खिलाफ थे। सेंट मैरी मैगडेलीन चर्च से भावनात्मक लगाव उनके विरोध की मुख्य वजह थी। पुनर्वास का बेहतर विकल्प मिलने के बावजूद जब मछुआरे गांव छोड़ने को राजी नहीं हुए तो भाभा ने खुद मोर्चा संभाला। एक रविवार उन्होंने सभी मछुआरों की जनसभा बुलाई। इसमें अंतरिक्ष कार्यक्रम के फायदे गिनाने के साथ-साथ मछुआरों को चांद-तारों की दुनिया में बसने के सपने दिखाए।

भाभा की बात से प्रभावित मछुआरे ने गांव खाली करने को मान गए। इसी के साथ थुंबा में अंतरिक्ष अनुसंधान केंद्र स्थापित करने की कवायद शुरू हो गई। सेंट मैरी मैगडेलीन चर्च अंतरिक्ष केंद्र का मुख्य कार्यालय बन गया। इसके पादरी के घर को कार्यशाला और उसके पास बने तबेले को प्रयोगशाला में तब्दील कर दिया गया। देश भर से आए चुनिंदा वैज्ञानिक रॉकेट प्रक्षेपण केंद्र के निर्माण में जुट गए। आर्थिक और तकनीकी पक्ष पर कमजोर होने के बावजूद अंतरिक्ष में दस्तक के भारत के सपने को साकार करने के लिए उन्होंने जिंदगी की सैकड़ों रातें शोध कार्यक्रम को समर्पित कर दीं।

अक्तूबर 1963 में उनकी मेहनत रंग लाई और थुंबा इक्विटोरियल रॉकेट लॉन्चिंग सेंटर (टर्ल्स) बनकर तैयार हो गया। इसके बाद भाभा के आग्रह पर अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के कुछ विशेषज्ञ थुंबा पहुंचे। उन्होंने छह वैज्ञानिकों के एक दल को रॉकेट प्रक्षेपण का प्रशिक्षण दिया। करीब एक महीने बाद 21 नवंबर को भारतीय वैज्ञानिकों ने टर्ल्स से अंतरिक्ष में पहला रॉकेट अंतरिक्ष रवाना कर इतिहास रच दिया। दिलचस्प बात यह थी कि रॉकेट साइकिल पर लादकर प्रक्षेपण केंद्र तक ले जाया गया था।

इसके बाद देश-दुनिया में भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की चर्चा होने लगी। अमेरिका, तत्कालीन सोवियत संघ, यूरोप समेत कई देशों की अंतरिक्ष एजेंसियों की नजर भारत पर पड़ी। उनके सहयोग से देश ने 350 से ज्यादा रॉकेट बनाए, जो टर्ल्स से सफलतापूर्वक लांच हुए। 15 अगस्त 1969 को भारतीय अंतरिक्ष संगठन इसरो आधिकारिक रूप से अस्तित्व में आया। इसके बाद अंतरिक्ष क्षेत्र, में कामयाबी का कारवां आगे बढ़ता गया। भारतीय वैज्ञानिकों ने टीवी, रेडियो, इंटरनेट और टेलीफोन सिग्नल के प्रसारण में सक्षम उपग्रह स्थापित किए। धरती, पहाड़, समुद्र, जंगल, ज्वालामुखी में होने वाली हलचलों पर अंतरिक्ष से नजर रखने की तकनीक विकसित की।

1999 के पोखरण परमाणु परीक्षण के बाद पश्चिमी देशों ने इसरो पर कई प्रतिबंध ठोक दिए। इससे न सिर्फ इसरो को आर्थिक रूप से झटका लगा, बल्कि तकनीक और संसाधनों की आपूर्ति भी प्रभावित हुई पर वैज्ञानिकों ने हिम्मत नहीं हारी। आज इसरो की ओर से लांच किए गए 70 उपग्रह अंतरिक्ष में काम कर रहे हैं। इनमें 30 घरेलू और 40 विदेशी उपग्रह शामिल हैं। संगठन ने चंद्रमा और मंगल तक की दूरी तय कर ली है। उसकी मेहनत और जज्बे की बदौलत भारत चंद्रमा पर पानी की मौजूदगी की पुष्टि करने वाला दुनिया का पहला देश बना। पहले प्रयास में मंगल पर कदम रखने का कारनामा भी उसके खाते में जुड़ गया है।



1981 में उपग्रह को प्रक्षेपण के लिए बैलगाड़ी से ले जाते इसरो के वैज्ञानिक। • फाइल फोटो

सिर्फ अंतरिक्ष में छलांग नहीं बल्कि रणनीतिक मोर्चे पर भी मजबूती

नई दिल्ली | मदन जैड़ा

मंगल मिशन की सफलता भारत के लिए महज अंतरिक्ष कार्यक्रम में एक छलांग भर नहीं है, बल्कि इस सफलता ने हमें रणनीतिक मोर्चे पर भी मजबूती प्रदान कर दी है। उपग्रहों के प्रक्षेपण से लेकर संचालन तक में जो प्रौद्योगिकी इस्तेमाल होती है, करीब-करीब वही प्रौद्योगिकी मिसाइल कार्यक्रम में भी इस्तेमाल होती है। मंगल मिशन कार्यक्रम की सफलता के बाद भारत के लिए न सिर्फ अग्नि-6 जैसी लंबी दूरी की मिसाइलों के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ना संभव होगा, बल्कि भविष्य में हम ऐसे उपग्रहों को गहरे अंतरिक्ष में स्थापित कर सकेंगे, जहां से हम अपने दुश्मनों या पड़ोसी मुल्कों की संदिग्ध गतिविधियों पर कड़ी निगरानी रख सकेंगे।

जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. सत्येन्द्र शर्मा कहते हैं कि मंगल मिशन के फायदे व्यापक हैं। इस मिशन ने जहां भारत को गहरे अंतरिक्ष कार्यक्रम में सफल चार देशों में सूची में शामिल कर दिया है, वहीं हमारे रक्षा के मोर्चे पर भी देश की ताकत बढ़ गई है।

कुछ अरसा पूर्व जीएसएलवी लांच व्हीकल की सफलता से भारत ने मिसाइल लांचिंग की क्षमता हासिल की थी। वैज्ञानिकों के अनुसार विश्व में आने वाले समय में जो युद्ध होंगे उनमें अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की भूमिका सबसे ज्यादा अहम होगी। ऐसे स्थिति कभी आती है तो वही देश बचे रह पाएंगे जिनके पास मिसाइल तकनीक है और उम्दा उपग्रह है। इसमें अब भारत पीछे नहीं रहेगा। भारत ने पाकिस्तान को तो पीछे छोड़ ही दिया है, इस मामले में अब चीन भी भारत से पिछड़ रहा है। इसलिए दोनों देश इस सफलता से फिक्रमंद दिखाई दे रहे हैं। डा. शर्मा के अनुसार मंगलयान की सफलता ने हमें कई नई तकनीकी क्षमताओं में सक्षम बना दिया है। हमारे पास ऐसी तकनीक है कि हम 22 करोड़ किलोमीटर दूर उपग्रह के इंजन को चालू कर सकते हैं, उसकी दिशा बदल सकते हैं। उसे संकेत भेज सकते हैं और उसके संकेतों को हासिल कर सकते है। यह दोतरफा कम्युनिकेशन है। हमारे पास ऐसी क्षमता है कि हमारे उपग्रह किसी ग्रह की तस्वीरें खींचकर भेज सकते हैं। उसकी सतह और उसके वातावरण का मानचित्रण कर सकते हैं।

ऐसी उपग्रह प्रणाली का इस्तेमाल भारत अपने दुश्मन देश की रक्षा तैयारियों का जायजा लेने या उसकी हमले की रणनीति को परखने में कर सकता है। इसके अलावा मंगलयान की सफलता के बाद भारत लंबी दूरी तक मार करने वाली अग्नि-6 मिसाइल बनाने की दिशा में भी कदम उठा सकता है। जिसकी क्षमता छह हजार किलोमीटर से ज्यादा दूरी तक मार करने की होगी। साथ ही इस प्रणाली के जरिए मिसाइलों को कमांड देकर रास्ते में मोड़ने, उनसे संकेत प्राप्त करके टार्गेट को ज्यादा सटीक बनाने जैसे उपाय किए जा सकेंगे।

14 कोहिनूरों के दम पर चमके हम

मंगल अभियान पूरी तरह सफल रहा क्योंकि लांचिंग से लेकर मंगल के वातावरण में प्रवेश तक में कोई चूक नहीं हुई। यह संभव हुआ इस मिशन को कामयाब बनाने में दिन-रात लगे वैज्ञानिकों के कारण, जिन्होंने इस प्रोजेक्ट को डिजाइन करने से लेकर अंतिम चरण तक की जिम्मेदारी को बखूबी निभाया। आइए जानते हैं उन 14 वैज्ञानिकों के बारे में जिनका इस प्रोजेक्ट में सबसे अहम योगदान रहा।

के. राधाकृष्णन



इसरो के चेयरमैन और स्पेस डिपार्टमेंट के सेक्रेट्री के पद पर कार्यरत है। इस मिशन का नेतृत्व इन्हीं के पास है। केरल के त्रिशूर जिले में जन्मे राधाकृष्ण ने चंद्रयान मिशन में भी अहम योगदान दिया था। इन्होंने 1971 में इसरो ज्वाइन किया था।

एम. अन्नादुरई



इस मिशन के प्रोग्राम डायरेक्टर है। इनके पास बजट मैनेजमेंट, शेड्यूल और संसाधनो की जिम्मेदारी है। ये चंद्रयान-1 के प्रोजेक्ट डायरेक्ट भी रहे है। कोयंबटूर के अन्नादुरई ने 1982 में इसरो ज्वाइन किया था और कई प्रोजेक्टो का नेतृत्व किया है।

एस. रामाकृष्णन

विक्रमसाराभाई स्पेस सैंटर के डायरेक्टर है और लॉन्च अथॉरिजन बोर्ड के सदस्य है। मंगलयान की लांचिग की जिम्मेदारी से जुड़े थे। मद्रास के रामाकृष्णन ने 1972 में इसरो ज्वाइन किया था और पीएसएलवी को बनाने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

एसके शिवकुमार



इसरो सैटेलाइट सैंटर के डायरेक्टर है। मैसूर के शिवकुमार ने 1976 में इसरो ज्वाइन किया था और इनका कई भारतीय सैटेलाइट मिशनों में योगदान रहा है। मिशन के लिए सैटेलाइट संबंधित तकनीक विकसित करने की जिम्मेदारी इन्ही के पास थी।

कदम दर कदम ऐ...

1988 जंगलों और ज्वालामुखी में होने वाली गतिविधियों पर नजर रखने के लिए 'टेस', 'प्रोबा' तथा 'बर्ड' उपग्रह लांच किए

1984 भारतीय वायुसेना से जुड़े राकेश शर्मा अंतरिक्ष में कदम रखने वाले पहले भारतीय बने

1982 पहली बहु-उद्देशीय उपग्रह प्रणाली 'इनसैट-1ए' लांच, उच्च गुणवत्ता के दूरसंचार सिग्नल मुहैया कराना था मकसद

1981 अंतरिक्ष में उपग्रह प्रक्षेपित करने वाला पहला सैटेलाइट लांच वेहिकल 'एसएलवी-3' बनाया, उपग्रह 'रोहिणी-डी1' व 'भास्कर-2' किए लांच

1976 भारत के 2,500 गांवों में कृषि, परिवार नियोजन व शैक्षणिक कार्यक्रम के प्रसारण के लिए सैटेलाइट इंस्ट्रक्शनल टेलीविजन एक्सपेरिमेंट (साइट) शुरू

1975 सोवियत संघ की मदद से भारत में निर्मित पहले उपग्रह 'आर्यभट्ट' ने भरी अंतरिक्ष की उड़ान

1972 अंतरिक्ष से धरती पर मौजूद संसाधनों के संरक्षण, निगरानी और विकास की संभावनाएं तलाशने को शुरू किए प्रयोग

1969 परमाणु ऊर्जा विभाग के अंतरगत 15 अगस्त को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान केंद्र (इसरो) की आधिकारिक स्थापना

1963 तत्कालीन सोवियत संघ और फ्रांस से मंगाए गए एम-100 व कैतूर रॉकेट का पहली बार 'टर्ल्स' से किया प्रक्षेपण

1962 केरल में थुंबा इक्विटोरियल रॉकेट लांचिंग सेंटर (टर्ल्स) नाम से बनाया पहला रिसर्च और रॉकेट लांचिंग केंद्र



1963 में केरल के थुंबा गांव में इस छोटे से सेंट मैरी मैगडेलीन चर्च से शुरू हुआ था अंतरिक्ष की और भारत का सफर। • फाइल फोटो

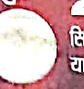
मंजिलें औ...

चंद्रमा



2008 में लांच चंद्रयान-1 ने ... की सतह पर पहली बा... की मौजूदगी की पुष्टि...

शुक्र



2015 सितंबर में शुक्र की सतह पर यान उतारने की तैयारी में इसरो

• पृथ्वी के सबसे करीबी ग्रह के वातावरण का अध्ययन करना है लक्ष्य

मानव मिशन

2015 के बाद पहला मान... लांच कर सकता ... सदस्यीय दल को ... योजना

मंगलयान ने क्यूरियोसिटी का पूछा हाल

मंगलयान को मंगल की कक्षा में स्थापित करने के बाद पूरी दुनिया सोशल नेटवर्किंग साइट ट्विटर के जरिये इसरो को बधाई दे रही है। ऐसे में मंगल की कक्षा में पहुंचा भारत का मंगलयान कैसे पीछे रह सकता है। उसने मंगल की कक्षा में जाते ही अपने सबसे करीबी नासा के क्यूरियोसिटी रोवर से बातचीत की। दरअसल इसरो ने क्यूरियोसिटी के तर्ज पर मंगलयान का भी बुधवार को ट्विटर अकाउंट खोला है, जिसके जरिए यान अपनी भावनाएं व्यक्त कर रहा है। यह हैंडल @ मार्सआर्बिटर नाम से बनाया गया है। मंगलयान ने सबसे पहले ट्वीट किया, यह जो लाल ग्रह है वह मेरी कक्षा का केंद्र है। वहीं, एक अन्य ट्वीट में मंगलयान ने लिखा, क्यूरियोसिटी तुम कैसे हो, मेरे संपर्क में रहना मैं तुम्हारे आसपास ही रहूंगा।' उल्लेखनीय है कि अकाउंट खोले जाने के महज 10 घंटे के भीतर करीब 57 हजार लोग मंगलयान के फॉलोअर बन चुके थे। फेसबुक पर बनाए मार्स ऑर्बिटर मिशन पेज को 10 दिनों में 2.21 लाइक मिले है।

अमित शाह, भाजपा अध्यक्ष

मंगल मिशन की सफलता हमारी खगोलीय विरासत की कड़ी है, जिसकी आधारशिला लगधा, आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त और भास्कर ने रखी थी।

चेतन भगत, लेखक

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मंगल मिशन में क्या समानता है? दोनों ही पहले प्रयास में सफल रहे है।

शरद पवार, एनसीपी प्रमुख

उन भारतीय वैज्ञानिकों की अप्रत्याशित प्रतिभा को सलाम जिन्होंने भारत को पहली ही कोशिश में सफल मंगल अभियान को अंजाम देने वाला इकलौता मुल्क बना दिया है।

अक्षय कुमार, अभिनेता



मंगलयान की बड़ी खबर के साथ सुबह उठा। अब तक का सबसे कम लागत वाला यह मंगल अभियान साबित हुआ है। क्या शानदार उपलब्धि है। इसरो के वैज्ञानिकों को इसके लिए बधाई। भारतीय होने पर हम सभी को गर्व है।

अरविंद केजरीवाल, आम आदमी पार्टी प्रमुख



भारतीय अंतरिक्ष संस्थान (इसरो) को बधाई। हम सभी भारतीयों के लिए यह गौरव का क्षण है। दुनियां में भारतीय वैज्ञानिकों ने अपनी दमदार मौजूदगी दर्ज कराई है।

द के पार

क हम

ायरेक्टर हैं और
ा है। मंगलयान की
। मद्रास के
ज्वाइन किया था
हत्वपूर्ण भूमिका



रहा
संबंधित
जिम्मेदारी

पी. कुन्हीकृष्णन



यह पीएसएलवी प्रोग्राम के निदेशक हैं। इन्होंने इससे पहले पीएसएलवी के आठ मिशन का नेतृत्व किया है। लॉचिंग और अंतिम चरण से जुड़े थे। यान के मंगल कक्षा में प्रवेश में भी योगदान दिया।

चंद्राथन



यह प्रोपल्सन सिस्टम के निदेशक हैं। मंगलयान को लांच करने वाले रॉकेट पीएसएलवी की मोटर की तकनीक विकसित करने के लिए काम किया।

एएस किरण कुमार



इसरो के सैटेलाइट एप्लीकेशन सिस्टम के निदेशक हैं। बेंगलुरु के किरण कुमार ने 1975 में इसरो ज्वाइन किया था। मंगल यान के तीन पेलोड कलर कैमरा, मीथेन सेंसर और थर्मल इंफ्रारेड इमेजिंग स्पेक्ट्रोमीटर को इन्होंने ही डिजाइन किया है। इनके सामने सबसे बड़ी चुनौती पेलोड का आकार छोटा रखना था।

एमवाई एस प्रसाद



सतीश धवन स्पेस सेंटर के निदेशक और लॉन्च अथोरिजन बोर्ड के अध्यक्ष हैं। आंध्र प्रदेश के प्रसाद ने रॉकेट और लांचिंग से संबंधित जिम्मेदारी संभाली।

एस अरुणन



मंगल मिशन के प्रोजेक्ट डायरेक्टर हैं। तमिलनाडु के अरुणन ने स्पेसक्रॉफ्ट बनाने वाली टीम का किया नेतृत्व।

- बी जयाकुमार : पीएसएलवी के एसोसिएट प्रोजेक्ट निदेशक हैं। रॉकेट टीम से जुड़े रहे। परीक्षण से लेकर लॉचिंग तक की जिम्मेदारी संभाली।
- एमएस पन्नीरसेल्वम : श्रीहरिकोटा रॉकेट केंद्र के सीमा संचालन के जीएम पन्नीरसेल्वम ने बिना किसी गड़बड़ी के लांचिंग समय पर कराई।
- पी रॉबर्ट : मंगल मिशन के संचालन निदेशक हैं। इन्होंने 1990 में इसरो ज्वाइन किया था।
- वी केशव राजू : मंगल यान के मिशन डॉयरेक्टर हैं।
- वी कोटेश्वर राव : इसरो के सचिव (वैज्ञानिक) हैं।

इनका भी योगदान

वी अदिमूर्ति, पी एकमबरम

दम ऐतिहासिक सफर

2001 अंतरिक्ष से धरती पर मौजूद संसाधनों के सरंक्षण, निगरानी और विकास की संभावनाएं तलाशने को शुरू किए प्रयोग

2000 3-जी और 4-जी सेवाएं मुहैया कराने वाले उपग्रह 'इनसैट-3बी' का सफल प्रक्षेपण

2005 अत्याधुनिक संचार उपग्रह 'इनसैट-4ए' को अंतरिक्ष में स्थापित किया, दूरसंचार, रेडियो प्रसारण के क्षेत्र में आई क्रांति

2003 भूकंप, बाढ़, तूफान, चक्रवात, सुनामी व अन्य प्राकृति आपदाओ का अलर्ट देने वाली 'कल्पना-1' सैटेलाइट प्रक्षेपित की

2008 चंद्रमा पर पानी की मौजूदगी तलाशने के लिए 'चंद्रयान' रवाना किया, बर्फ की मौजूदगी का सुराग देकर यान ने रचा इतिहास

2007 भारत का विस्तृत नक्शा तैयार करने के लिए अर्जेंटीना और इंडोनेशिया के साथ मिलकर 'कार्टोसैट-2' उपग्रह अंतरिक्ष भेजा



21 नवंबर 1963 को भारतीय वैज्ञानिकों ने टर्ल्स से अंतरिक्ष में पहला रॉकेट अंतरिक्ष रवाना कर इतिहास रच दिया। • फाइल फोटो

2009 हवाओं का रुख भापने और समुद्र में होने वाले बदलावों की निगरानी करने के लिए स्वदेशी उपग्रह 'ओशनसैट-2' व छह यूरोपीय सैटेलाइट लांच किए

2013 लाल ग्रह की सतह के अध्ययन और मीथेन की मौजूदगी की पुष्टि के लिए पहले मंगल मिशन की सफल शुरुआत की

2014 सिंगापुर, जर्मनी और कनाडा समेत चार देशों के संचार उपग्रह एक साथ अंतरिक्ष में स्थापित करने का करिश्मा कर दिखाया

स्रोत : इसरो माइलस्टोंस

और भी हैं...

08
ान-1 ने चंद्रमा
पहली बार पानी
की पुष्टि की

- मिशन की कामयाबी से उत्साहित इसरो 2016-17 में चंद्रयान-2 भेजने की बना रहा योजना
- चंद्रमा के वातावरण की बेहतर समझ हासिल करना और जीवन की संभावनाएं तलाशना मकसद

से
ध्ययन

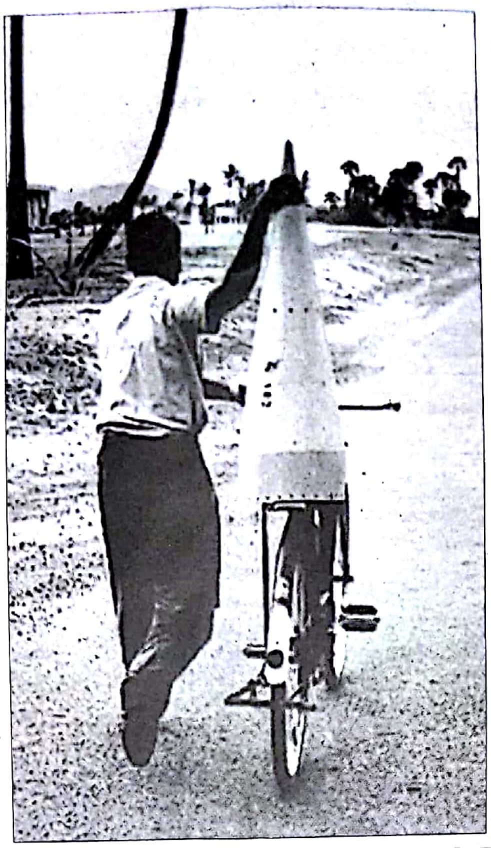
सूर्य

2015-16 तक आदित्य-1 यान को सूर्य के लिए रवाना करने की है योजना

- सौर पवन और चुंबकीय क्षेत्र का धरती पर असर आंकना है इस मिशन का लक्ष्य

15
ना मानव मिशन
कता है इसरो, दो
ल को भेजने की

- अंतरिक्ष केंद्र में आई खराबी की मरम्मत और नए उपकरणों की स्थापना करने में भारत भी होगा सक्षम



आपकी जेब से खर्च हुए महज चार रुपये

नई दिल्ली। हिन्दुस्तान टीम

सस्ते, टिकाऊ उत्पादों का भरोसेमंद ठिकाना बनकर उभरे भारत ने अंतरिक्ष के क्षेत्र में भी ऐसा कमाल कर दिखाया। मंगलयान को मंगल की कक्षा में स्थापित करने की योजना पर 450 करोड़ रुपये का खर्च आया है। लेकिन प्रत्येक भारतीय पर पड़े बोझ की बात करें, तो यह करीब चार रुपये (3.6 रुपये) प्रति व्यक्ति बैठता है, जो एक प्याली चाय की कीमत से भी कम है।

मंगलयान ने करीब 68 करोड़ किमी दूरी तय की है। इस हिसाब से मिशन मंगल में करीब 15 पैसे प्रति किलोमीटर का खर्च आया, जो सरकारी बस के किराये से भी कम है।

दुनिया के दूसरे देशों के हालिया मंगल अभियान के खर्च का यह दस फीसदी भी नहीं है। अपने बलबूते चंद्रयान और मंगल मिशन की सफलता से भारत ने अरबों डॉलर का खर्च भी बचाया है। वैज्ञानिकों का कहना है कि सैन्य और सूचना-संचार तकनीक में क्रांति को देखते हुए 450 करोड़ रुपये की रकम बहुत ज्यादा नहीं है। रोजाना दिल्ली की सड़कों पर एक हजार करोड़ रुपये का ईंधन ही फुंक जाता है। इसरो चेयरमैन के राधाकृष्णन ने कुछ दिनों पहले कहा था कि हैवी लांच व्हीकल की बजाय प्रोपल्शन सिस्टम का इस्तेमाल कर मिशन की लागत कम की गई।

लागत कम रखने को अपनाई गई तकनीक

मिशन मंगल की लागत कम रखने के लिए इसरो ने सिर्फ 15 किलो पेलोड ही रखा। छोटे रॉकेट का इस्तेमाल किया गया, ताकि धरती की कक्षा से बाहर निकलने में कम ईंधन खर्च हो और फिर मंगल की ओर बढ़ते वक्त गति पाई जा सके। कठिनाइयों के बीच इसरो के असाधारण प्रदर्शन का एक उदाहरण यह भी है कि शुरुआती दौर में अंतरिक्ष वैज्ञानिक पहले लांच पैड के पास खाली पड़ी चर्च से काम करते थे।

लागत में सब पर भारी

- मैवेन सैटेलाइट, नासा

प्रक्षेपण : 18 नवंबर 2013
कक्षा में : 21 नवंबर 2014
लागत : 4026 करोड़ रुपये

यूरोपीय स्पेस एजेंसी

- मार्स एक्सप्रेस

प्रक्षेपण : जून 2003
कक्षा में : दिसंबर 2003
खर्च : 2316 करोड़ रुपये

जापान एयरोस्पेस एजेंसी

- नोजोमी

प्रक्षेपण : जुलाई 1998
असफल : अक्टूबर 1999 में पहुंचना था
खर्च : 1134 करोड़ रुपये

रूसी स्पेस एजेंसी

फोबो ग्रंट, चीनी सैटेलाइट के साथ
प्रक्षेपण : 08 नवंबर 2011
धरती की कक्षा से निकलते ही फटा
लागत : 702 करोड़ रुपये

इसरो (भारत), मंगलयान

प्रक्षेपण : 05 नवंबर 2013
कक्षा में : 24 सितंबर 2014
लागत : 450 करोड़ रुपये
विशेष : हॉलीवुड फिल्म ग्रैविटी (600 करोड़ रुपये) की लागत भी मंगलयान से ज्यादा है।

एजेंसियों का सालाना बजट

नासा (अमेरिका) : 17.7 अरब डॉलर
ग्लोवकोसमोस (रूस) : 7.9 अरब डॉलर
यूरोपीय स्पेस एजेंसी : 5.6 अरब डॉलर
चीनी स्पेस एजेंसी : 2.5 अरब डॉलर
इसरो (भारत) : 1.1 अरब डॉलर
विशेष : 18250 अरब रुपये का हो चुका है अंतरिक्ष उद्योग (2012 में)

1963 में थुंबा इक्विटोरियल रॉकेट लांचिंग सेंटर (टर्ल्स) बनकर तैयार हो गया। यहां नासा से आए विशेषज्ञ ने छह वैज्ञानिकों के एक दल को रॉकेट प्रक्षेपण का प्रशिक्षण दिया। तब भारत के पहले रॉकेट को साइकिल से ले जाया गया। • फाइल फोटो

लालग्रह के करीब लेकिन जीवन की खोज दूर की बात

नई दिल्ली | विशेष संवाददाता

मंगलयान के सफलतापूर्वक लालग्रह की कक्षा में स्थापित होने के बाद अब आने वाले दिनों में इसके जरिए की जाने वाली खोजों पर सभी की नजरें टिकी हुई हैं। मंगलयान करीब चार सौ किलोमीटर तक मंगल के नजदीक जाकर उससे विभिन्न किस्म के आंकड़े एकत्र करेगा जिनसे लालग्रह के बारे में समझ बढ़ेगी। लेकिन यह उपग्रह मंगल पर जीवन की खोज कर लेगा यह कहना अभी बेहद जल्दबाजी होगी। मंगल पर जीवन की मौजूदगी की पुष्टि के लिए अभी देश-दुनिया से कई और अभियान भेजने पड़ेंगे।

वैज्ञानिकों के अनुसार मंगल को लेकर अब तक जितने भी अभियान हुए हैं, उनमें कोई खास सूचना हाथ नहीं लगी है। इसकी वजह यह है कि इन अभियानों में सारा जोर इस बात पर रहा कि उपग्रह को मंगल तक पहुंचाया जाए या वहां उतारा जाए। अमेरिका, रूस और यूरोप के अब तक भेजे गए अभियानों और अब भारत के मंगलयान में भी सबसे बड़ी उपलब्धि तकनीकी और प्रौद्योगिकी क्षमता हासिल करने की रही है। मगर इन मिशनों से वैज्ञानिक खोज होना अभी बाकी है। भारत के मिशन के लिए भी यही चुनौती है। तकनीकी रूप से भारत का यह मिशन सफल रहा है लेकिन वैज्ञानिक रूप इसकी सफलता का आगे पता चलेगा।

अब तक खास जानकारी नहीं- मंगल को लेकर अब तक इंसान की जानकारियां सीमित हैं। यह सिर्फ अनुमान है कि मंगल कभी सूर्य के ज्यादा नजदीक था और वहां कभी जीवन रहा होगा। लेकिन पहले के अभियानों में इस बात की पुष्टि करने वाले जो संकेत मिले हैं, वह भरोसेमंद नहीं हैं। मसलन, एक अभियान में काले धब्बों को पानी के निशान माना गया लेकिन दूसरे अभियान में पता चला कि ये धब्बे प्रकाशीय भ्रम के कारण हैं।

जेएनयू के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. सत्येन्द्र शर्मा के अनुसार एक अभियान में पता चला कि वहां सौ मीटर गहरी खाइयां हैं। इससे लगता है कि वहां कभी नदियां बहती थी, लेकिन यह सिर्फ संकेत है। हो सकता है इन खाइयों में पानी की नदियां नहीं बल्कि तरल रूप में मीथेन गैस बहती हो।

कम साधन के साथ कामयाबी के मंगल पर पहुंचा इसरो



प्रोफेसर यशपाल

मंगल मिशन की कामयाबी के निर्णायक क्षणों में मैं खुद से यह सवाल करता रहा कि इसे क्या कहूं, एक वैज्ञानिक क्रांति या अतुलनीय वैज्ञानिक उपलब्धि? अब जाकर खयाल आया कि इसे मानव इतिहास की कालजयी घटना कहूं। क्यों, यह उपलब्धि तो सिर्फ हमारी है? मेरे पास इस सवाल के कई जवाब हैं।

पहला, कई मंगलयान अब तक सफल-विफल हो चुके हैं। पर हमारा पहला मंगलयान ही सफल हो गया। यानी सौ फीसदी कामयाबी मिली। इसलिए यह सिर्फ देश की सफलता नहीं, बल्कि पूरे विज्ञान जगत की सफलता है। दूसरा, इस क्षेत्र में हम लकीर पीटने वाले नहीं बने। हमने अपना रास्ता खुद बनाया। स्वदेशी तकनीक, कम साधन, कम इंजन-क्षमता व वजन, ये इस मिशन के गुण बन गए। यानी हमने दूसरे देशों को भी रास्ता दिखाया। तीसरा, हमारा यह पहला अंतर्ग्रहीय अभियान दूसरे ग्रहों पर जीवन ढूंढने या उसकी संभावना तलाशने की दिशा में महत्वपूर्ण मोड़ है, क्योंकि हम थकने वालों में से नहीं हैं और विज्ञान के क्षेत्र में विकसित देशों से प्रतिस्पर्द्धा करने लगे हैं।

जब मंगलयान की गति धीमी करनी थी, तब हमारी वैज्ञानिक क्षमता का जबर्दस्त प्रदर्शन हुआ। उस समय मैंने यह सोचा कि जब विज्ञान की यात्रा अंतहीन है, तब हमारी यह रोमांचक यात्रा कहां पूरी होगी। मंगलयान अभी यह देखेगा कि क्या हम मंगल को अपनी जमीन बना सकते हैं? क्या लोग वहां रह सकते हैं? क्या हमें जीने के लिए एक ग्रह और मिल जाएगा? क्या मीथेन के रहस्य से परदा उठेगा? ऐसे सवाल महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि शुक्र पर कोई 400 डिग्री सेल्सियस तापमान है, तो बुध में जमीन की कल्पना ही असंभव है। इसलिए सारी उम्मीदें मंगल से हैं।

मंगलयान की सफलता बताती है कि हमने नई सोच से काम लिया है, वरना रॉकेट दागकर हम खुश होते थे। अंतरिक्ष, परमाणु ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में हम विदेशी सोच का नकल करते और वहीं से ही हर चीज मंगाते थे। लेकिन इस बार कमाल देखिए कि नासा का 'मैवन' भी मंगल की कक्षा में पहुंचा और हमारा मंगलयान भी, पर 'मैवन' महंगा साबित हुआ। उसे अधिक जोर व ऊर्जा के साथ भेजा गया, जबकि हमारा अभियान न सिर्फ किफायती, बल्कि कम जोर में भेजा गया। कक्षा में घुसने से पहले भी उसने ऊर्जा की बचत की। हमारा मंगलयान मैवन के करीब सही-सलामत अलग रास्ते से स्थापित हो गया।

इसरो के संस्थापक सदस्यों में से एक होने के नाते मुझे इसके सेटेलाइट सेंटर से यह सब देखने का सौभाग्य मिला। वहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मुझ जैसे बुजुर्ग को 'ओल्ड यंगेस्ट साइंटिस्ट' कहा, यह अच्छा लगा। उन्होंने यह भी कहा कि इसरो में गुरु-शिष्य परंपरा है। वाकई इसरो कामयाबी के मंगल पर पहुंच चुकी है।

(प्रवीण प्रभाकर से बातचीत पर आधारित)

प्रणब मुखर्जी, राष्ट्रपति



मार्स ऑर्बिटर मिशन के मंगल की कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित होने पर हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। यह उपलब्धि देश के वैज्ञानिकों को और ऊंची उड़ान भरने की प्रेरणा देगी।

हामिद अंसारी, उपराष्ट्रपति



मैं पूरे देश के साथ मिलकर वैज्ञानिकों को इस सफलता के लिए सलाम करता हूं। यकीन है कि हमारे वैज्ञानिक इस क्षेत्र में और अधिक ऊंचाईयों को छूना और उपलब्धियां हासिल करना जारी रखेंगे।

सोनिया गांधी, कांग्रेस अध्यक्ष



यह उपलब्धि भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत होगी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से एक देश के रूप में जो सफर हमने तय किया है, यह उसमें एक मील का पत्थर है। इसरो को इस उपलब्धि के लिए बधाई।

दिग्विजय सिंह, कांग्रेस मुख्य सचिव



मंगलयान अभियान की सफलता में भागीदारी करने वाले सभी लोगों को बधाई। क्या प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अभी भी लगता है कि यह 100 दिनों में हासिल किया गया है?

अनिल काकोडकर, वैज्ञानिक



मंगल अभियान की सफलता अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत की तकनीकी क्षमता को रेखांकित करती है। पहली बार में ही मिली इस कामयाबी के लिए राष्ट्र को इस उपलब्धि का जश्न मनाना चाहिए।

अमिताभ बच्चन, अभिनेता



मंगलयान, भारत माता की जय। ऐतिहासिक। पहले प्रयास में सफलता हासिल करने वाला एकमात्र देश। वह भी हॉलीवुड की किसी फिल्म के बजट से भी कम बजट पर।

लता मंगेशकर, स्वर साम्राज्ञी



नमस्कार, सभी भारतीयों के लिए यह बहुत गर्व का दिन है। इसरो के हमारे वैज्ञानिकों ने चमत्कार कर दिखाया है। मैं सभी वैज्ञानिकों को बधाई देती हूं और उनके परिश्रम एवं समर्पण को सलाम करती हूं। जय हिंद।

समृद्धि तले अंधेरा क्यों?

स्वतंत्रता के बाद के इतिहास को देखें, तो वैश्विक स्तर पर और भारत में भी जीवन के विभिन्न स्तरों पर बड़े और महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं। गरीबी में जीने वालों की संख्या में कमी आना, विश्व की जनसंख्या की औसत आयु में बढ़ोतरी और निरक्षरता के लगातार कम होते आंकड़े हमारी अब तक की उपलब्धियां हैं। अब हमें आने वाले वक्त का सोचना है। अब वक्त है कि हम पर्यावरण को बचाने की मुहिम पर ध्यान दें। भविष्य के ज्यादा अवसरों की राह यहीं से निकलेगी।



बीते तीन दशक में गरीबी स्तर में जिस तरह के बदलाव आए हैं, वे पहले कभी नहीं दिखे

आज तुलनात्मक रूप से दुनिया के औसत लोग पहले से बेहतर स्थिति में हैं। 1955 में पूरी दुनिया में औसत आयु महज 48 साल मानी जाती थी। इसी साल में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने हमें वैश्विक आंकड़े देने शुरू किए। शक्तिशाली दवाइयों, जैसे कि पेनिसिलीन का इस्तेमाल शुरू हो चुका था। वरना इससे पहले के वर्षों में तो औसत जिंदगी और भी कम थी। आज पूरी दुनिया में औसत आयु 70 साल की है। यह बहुत बड़ी उपलब्धि है। 1955 में सात में एक से अधिक शिशुओं की मौत शैशवावस्था में ही हो जाती थी। इसमें एक तिहाई से भी अधिक की कमी आई है।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में ही गुणात्मक सुधार नहीं हुए हैं, बल्कि 1950 के समय में दुनिया के 45 प्रतिशत वयस्क निरक्षर थे, आज 15 प्रतिशत से कम निरक्षर हैं। गरीबी की विश्व बैंक की परिभाषा के अनुसार, 1981 से अब तक अत्यधिक गरीबी में जीने वालों की तादाद में कमी आई है। यह सिर्फ चीन या पूर्वी एशिया की सफलता नहीं है, बल्कि भारत की भी है। 1920 के दशक मे भारत में आयु–प्रत्याशा सिर्फ 27 साल थी, अब यह 66 साल है। आजादी के समय भारत के वयस्कों के बीच साक्षरता दर 20 फीसदी से भी कम थी, अब यह 75 फीसदी है। राष्ट्रीय गरीबी रेखा (जो विश्व बैंक की गरीबी रेखा के काफी करीब है) के मुताबिक, भारत में गरीबी दर 22 प्रतिशत है। कुछ आकलन बताते है कि 1940 के दशक में यह 90 प्रतिशत थी।

नया दौर, नया नजरिया

इन सबके बीच हमारा नजरिया भी बदला है। 1923 में एक तरह से गोरे ही सब जगह राज कर रहे थे। जहां वे शासन नहीं कर पाए, वहां भी उन्होंने अपने लोग बिठाए। अधिकतर अन्य लोग जानते है कि यह सब कैसे संभव हो पाया। जब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 1926 के अधिवेशन में ब्रिटिश शासन के अधीन डोमिनियन स्टेटस (स्वायत्त दर्जे) की मांग की गई, तब एक अंग्रेजी पत्रिका 'द स्पेक्टेटर' ने इस मांग को सनकी विचार कहा था। 1931 के गोल मेज सम्मेलन के दौरान ब्रिटिश हुकूमत के साथ समान स्तर पर

> अब स्थिति यह है कि हम अलग आर्थिक मॉडल पर दुनिया भर की सहमति का इंतजार नहीं कर सकते हैं, इससे पहले ही हमें जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिए सबके साथ मिलकर तेज गति से काम करने होंगे।

आकर बातचीत के गांधी के तरीके से चर्चिल ने इतना अपमानित महसूस किया कि उन्होंने गांधी को 'अधनंगा' और 'बागी फकीर' कहा था। हालांकि, आज की दुनिया में कुछ देशों का विषम प्रभाव अब भी जारी है, लेकिन यह उनकी आर्थिक ताकत या सैन्य शक्ति (या आर्थिक सहयोग की सदाशयता) की बुनियाद पर है और हर कोई जानता है कि चीन, ब्राजील या संभवतः भारत कभी भी उनकी जगह ले सकता है।

1923 में अंबेडकर दलितों के उतने बड़े नेता नही बन पाए थे। राष्ट्रीय राजनीति और राजनीतिक दलों में ऊंची जातियों का वर्चस्व कायम था। इस परिदृश्य में अंबेडकर के योगदान से बड़े बदलाव भी आए। हर क्षेत्र में पिछड़े तबकों की हिस्सेदारी बढ़ती गई। इस तरह के बदलाव सभी जगह हुए। अमेरिका में जिम कानून श्वेत और अश्वेत, दोनों को सावजनिक जगह साझा करने का समान अधिकार देता है और उसकी रक्षा करता है। अमेरिका में अफ्रीकी–अमेरिकी राष्ट्रपति है। बुश प्रशासन में विदेश मंत्री, जो राष्ट्रपति के बाद का सबसे महत्वपूर्ण पद है, कोंडलिजा राइस थीं, वह एक अफ्रीकी–अमेरिकी महिला हैं। 1920 से पहले एक महिला, अश्वेत महिला तो दूर की बात है, अमेरिका मे वोट नहीं डाल सकती थी। फ्रांस में इस



आजादी के समय भारत के वयस्कों में साक्षरता दर 20 फीसदी से कम थी, अब यह 75 फीसदी है



1920 के दशक में भारत में आयु–प्रत्याशा सिर्फ 27 साल थी, अब यह 66 साल है

अधिकार को पाने के लिए 1944 तक का इंतजार करना पड़ा। भारत में, आजादी मिलने से पहले तक काफी संपत्तियों के मालिकों के पास ही मतदान का अधिकार था। दुनिया आज से पहले इतनी लोकतांत्रिक न थी। यहां तक कि इस दौरान अभूतपूर्व आर्थिक बदलाव भी हुए। बीते तीन दशक में गरीबी स्तर में जिस तरह के बदलाव आए हैं, वे पहले कभी नहीं दिखे।

नए वक्त की नई जरूरतें

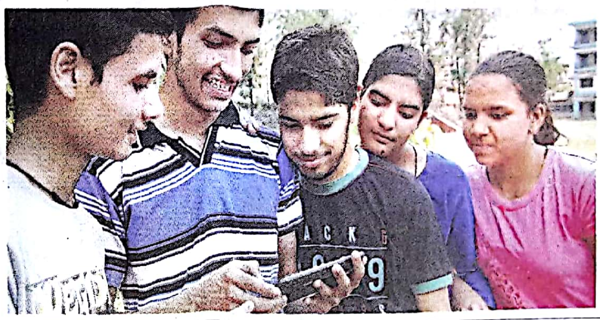
दुर्भाग्य से, अब हम एक संकट की तरफ बढ़ रहे हैं। हाल के अध्ययन बताते हैं कि तेजी से जलवायु परिवर्तन हो रहा है। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार औसत वैश्विक तापमान दो डिग्री सेल्सियस से बढ़ रहा है। आशंका है कि यह बढ़ोतरी चार डिग्री सेल्सियस तक जा सकती है। ऐसे में, तबाही तय है। क्या ये तमाम बदलाव इसके लिए जिम्मेदार हैं? साफ तौर पर कई महत्वपूर्ण बदलावों का इससे कोई लेना-देना नहीं। जैसे, दलित अधिकारों और नागरिक अधिकारों की लड़ाई इसके लिए जिम्मेदार नहीं हैं। पश्चिम में तेज शहरीकरण के कारण महामारी का भय उत्पन्न हुआ और इससे सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्रों में सुधार लाए गए। एक कारण यह भी था कि सरकारें अपनी सैनिकों को युद्ध-क्षेत्र में ले जाना चाहती थीं, न कि बीमारी से मरते हुए देखना चाहती थीं। इसलिए ये भी जिम्मेदार नहीं हैं। यह एक शाश्वत तर्क है कि इन अच्छे-बुरे बदलावों के पीछे अर्थव्यवस्था का हाथ है।

मैं इससे सहमत नहीं कि उच्च विकास दर पर्यावरण वहनीय नहीं हो सकती। समस्या उच्च विकास दर में नहीं, बल्कि विकास के मौजूदा मॉडल में है। अब हम अलग आर्थिक मॉडल पर दुनिया भर की सहमति का इंतजार नहीं कर सकते हैं, इससे पहले ही हमें जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिए तेज गति से काम करने होंगे। अगर हम अपने लिए अवसर चाहते हैं, तो तुरंत काम करना होगा और सबको साथ लेकर चलना होगा। यह आर्थिक मंदियों और बुरी घटनाओं को भूलने का समय है, जो आगे भी आएंगी। अब अपनी उपलब्धियों को याद करने के अलावा, हमें अपने पर्यावरण को बचाने के प्रति भी प्रतिबद्ध होना होगा।

सूचना क्रांति

व्यावहारिक यथार्थ की संवेदनाएं

तकनीक की मदद से कंटेंट का बना-बनाया रूप हमारे सामने मौजूद है, परंतु मनोरंजन और गोपनीयता की हमारी प्राथमिकता के कारण कल्पनाशीलता, स्मरण शक्ति और भावनात्मक प्रयास हाशिये पर जा पहुंचे हैं। आज कंटेंट की गुणवत्ता की बजाय फौरी संतुष्टि ज्यादा महत्वपूर्ण हो गई है। शायद यही हमारे समय का सच है।



करीब एक लाख वर्ष पूर्व बोलने की क्षमता के विकास से मनुष्य की संप्रेषणीय क्षमता में परिवर्तन आया था; लेखन और बिंब विस्तार से एक-दूसरे को जोड़ने वाली यह सभ्यता सामने आई, जिसे आज हम देख रहे हैं। वहीं पिछले 80 वर्षों के दौरान तकनीकी विकास से व्यापक परिवर्तन आया है और यह बदलाव केवल आकार में ही नहीं, बल्कि दूसरों से संपर्क साधने और हमारे अभिव्यक्ति के तरीके में भी आया है।

किशोरावस्था में मैं कुछ वर्षों के लिए मेरठ में रहा था। उत्तर भारत के इस छोटे से शहर में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के रिकॉर्ड रखने वाले म्यूजिक स्टोर्स खोजना आसान नहीं था। चूंकि शास्त्रीय संगीत की मांग कम थी, इसलिए यह व्यावसायिक दृष्टि से भी मुफीद नहीं था। परंतु मैंने अपनी खोज जारी रखी। यदि किसी के संकलन में कुमार गंधर्व के गाए रागों की रिकॉर्डिंग होती तो मैं रिकॉर्ड प्राप्त होने तक उसकी खुशामद करता रहता था। इसके बाद बारी आई एक टीडीके कैसेट प्राप्त करने की और ऐसे किसी व्यक्ति की तलाश की, जिसके पास एक टू-स्लॉट म्यूजिक सिस्टम हो, जिसमें रिकॉर्डर भी हो और जो 5 रुपए में उसे मेरे लिए कॉपी भी कर दे। जाहिर है कवर पर बहुत करीने से लिखे विस्तार के साथ वह कैसेट मेरी कीमती धरोहर बन जाता था। आज चाहिए सिर्फ एक क्रेडिट कार्ड नंबर और एक इंटरनेट कनेक्शन, क्योंकि खरीद-फरोख्त आसान हो चुकी है। आज शायद हम कंटेंट को ज्यादा आंकने लगे हैं, जिसका अपना एक खास मूल्य होता है, लेकिन अनुभव और उससे जुड़े कथानक के साथ वह एक सशक्त और दुर्लभ याद भी बन जाता है। आज कंटेंट तो उपलब्ध है, लेकिन उसके साथ जुड़े किस्से नहीं। यही नहीं, मुझे ऐसा भी लगता है कि क्या आज हम संगीत को उसके प्रेम के लिए सुनते हैं या केवल एक याद सहेजने वाले उपकरण की तरह।

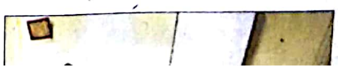


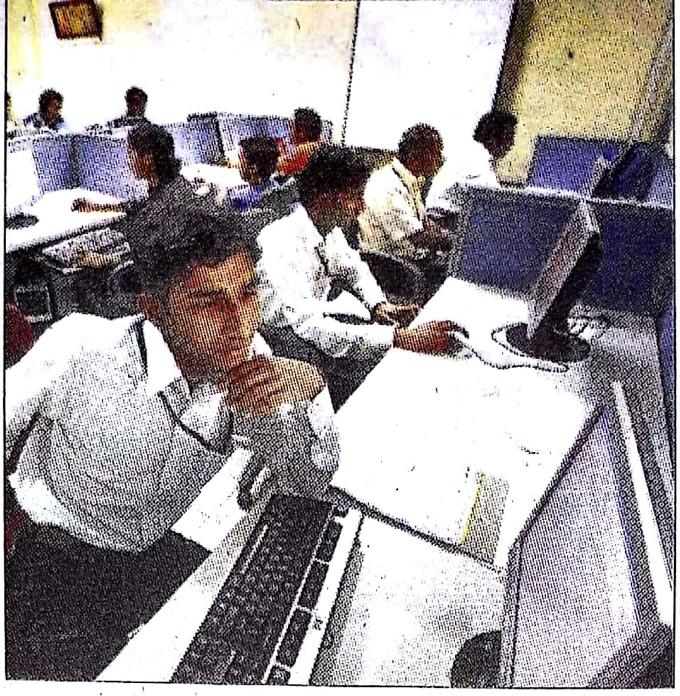
प्रसून जोशी

राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हिन्दी कवि, लेखक, पटकथा लेखक और भारतीय सिनेमा के गीतकार। कई वर्षों से विज्ञापन जगत में सक्रिय।

क्या हम सचमुच आज ऐसे लोगों से जूझ रहे हैं, जो सांस्कृतिक तौर पर हाशिए पर पड़े हैं? जिनकी कई बार संगीत से जुड़ी प्रतिक्रिया भी योजनाबद्ध दिखती है। यह बहुसंख्य आबादी संगीत खरीदती भी नहीं, अलबत्ता यह भावनाओं का पुलिंदा खरीदती है।

पुस्तकें एक अन्य स्रोत थीं, जिनके जरिए विचार, दृष्टिकोण और भावनाएं संप्रेषित होते थे और कुछ हद तक आज भी होते हैं। अब हमारे पास अपने आइपैड्स और किंडल्स के साथ वर्चुअल बुकस्टोर्स तक की आसान पहुंच है। हालांकि, पहले किसी पुस्तक को पढ़ने का मतलब अपने मित्र या किसी जानकार का इंतजार करना होता था, जो उसे पहले खुद पढ़े। इसके बाद पुस्तक उधार ली जाती और पढ़ी जाती। या फिर उसके लिए किसी क्लब या पब्लिक लाइब्रेरी तक जाना होता, जहां उस पुस्तक को खोजने में कीमती वक्त खर्च होता, जिससे अगले कुछ सप्ताह तक गहरी मित्रता रहती। उसकी छुअन - जिल्द, कागज की गंध और स्पर्श - यानी एक पूरा कथानक हावी रहता था। वहीं उधार गई किसी पुस्तक या उसे न लौटाने की खातिर मित्र बनते या टूटते भी थे। और आज हमारे पास एक 'रीड लेटर' नामक फंक्शन मौजूद रहता है। मेरे, और शायद मेरे जैसे कई अन्य 'रीड लेटर' नामक इस बटन को अनिच्छा से दबाते होंगे। इसमें एक किस्म का बौद्धिक आलस्य जुड़ा है। जबकि पहले, समय के जल्दी बीत जाने के डर से शब्दों को अधिक गहराई से समझा जाता था।





आज मेरे आइपैड में सबसे हालिया पुस्तकें और बेहिसाब तस्वीरें हैं, जो शायद कुछ ज्यादा ही आसानी से मिली हैं। अपने कैमरे के लिए भी 24 या 36 फ्रेम वाला रोल लेने की उलझन नहीं रही, और न ही प्रत्येक शॉट को गिनने की जरूरत, जिसके लिए पहले बहुत ध्यान से कंपोज और पोज किया जाता था। आज हार्ड ड्राइव मैमरी में हजारों तस्वीरें बिखरी रहती हैं, परंतु पहले की गिनी-चुनी तस्वीरों की कीमत कहीं ज्यादा होती थी। तस्वीरों का लक्ष्य भी बदल गया है। तस्वीरें यादों से जुड़ती हैं, वह आपको किसी घटना की सौम्य याद दिलाती हैं, जबकि आज कल्पनाशीलता का स्थान ही इस दुनिया की मानिंद छोटा हो चुका है। पका-पकाया यथार्थ आज की जरूरत है। स्मार्ट फोन्स पर ब्राउज कर तस्वीर आपके सामने होती है और आप आगे बढ़ जाते हैं। सजीव याददाश्त को एक तकनीकी रूप देते हुए हम न्यूरॉन्स से बढ़कर अब गीगाबाइट्स तक जा पहुंचे हैं। दरअसल, हमारी याददाश्त एक छलनी की तरह होती है, जो अपने भावनात्मक रुझान के अनुसार ही यादों को सहेजती है। एक तकनीकी मैमरी में ऐसा नहीं होता।

आज सूचना और ज्ञान प्राप्त करने की भाषा भी बदल चुकी है। भाषा को सीखना और उसके अनुसार चलना पड़ता है। आज भाषा का स्थान नीचे है, जिसे आसानी से बदला भी जा सकता है। हम अंग्रेजी के 'चटनीफाइंग' के गवाह रहे हैं, जबकि हिंदी और अन्य प्रादेशिक भाषाओं के 'हिंग्लिश' और 'टैम्ग्लिश' स्वाद सामने हैं। हालांकि अभी इंटरनेट को आए सिर्फ 20 वर्ष हुए हैं, वह ऑनलाइन भाषा के सांकेतिक और संक्षिप्त रूपों के कोड में वृद्धि कर रहा है

। भाषाओं का विकास होना सच है, लेकिन मूल भाषाओं और विशिष्ट बोलियों को भी उतनी ही सुरक्षा मिलनी जरूरी है। किसी भाषा के मरने से उसका लोक साहित्य, परंपराएं, रिवाज और ज्ञान भी समाप्त होता है। सोशल मीडिया ने कम्युनिकेशन को आसान और तेज करते हुए लोगों को एक दूसरे से जोड़ा है और साथ ही इससे नए अवसर भी सामने आए हैं, लेकिन इसकी अपनी सीमाएं भी हैं।

मील का पत्थर

यूं बढ़ा तरक्की का कारवां

78 वर्ष पहले हिंदी पत्रकारिता जगत मे एक मजबूत आधार के साथ 'हिन्दुस्तान' का जन्म हुआ। आज हिन्दुस्तान पांच हिंदी भाषी राज्यों दिल्ली, बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और झारखंड में 19 प्रिंट एडिशंस व 148 सब-एडिशंस के साथ देश के अग्रणी अखबार के रूप में प्रगति कर रहा है। इस यात्रा में कई पड़ाव है, जहां अखबार ने समय की जरूरत को समझते हुए देश की तरक्की के साथ कदम से कदम मिलाया है। इसकी ताकत करीब 1 करोड़ 42 लाख 46 हजार पाठक हैं, जो इसे हर बदलाव और चुनौतीपूर्ण स्थितियों में विशुद्ध मानकों पर डटे रहने का संबल देते हैं। पाठकों तक पहुंच की यह रफ्तार डिजिटल दुनिया में लाइवहिन्दुस्तान वेबसाइट के जरिए और तेजी से बढ़ रही है।

1936

12 अप्रैल 1936 को हिन्दुस्तान अखबार का पहला संस्करण दिल्ली के नया बाजार (श्रद्धानंद बाजार) से प्रकाशित हुआ। पहला अंक कांग्रेस अंक के रूप में छपा। आठ पृष्ठ के अखबार का मूल्य आधा आना था।

- अखबार के प्रथम संपादक सत्यदेव विद्यालंकार बने।


हिंदुस्तान

1937

मदन मोहन मालवीय के आग्रह पर गांधीजी के कनिष्ठ पुत्र देवदास गांधी 'द हिन्दुस्तान टाइम्स' के प्रबंधक मंडल के सचिव बने। कर्जन रोड के सामने कनॉट सर्कस में अखबार का नया दफ्तर बनाया गया। 33 साल तक यही अखबार का दफ्तर रहा।

1943

अंग्रेजी अखबार 'ईवनिंग न्यूज' का प्रकाशन शुरू हुआ।

1944

कंपनी ने पहली बार शेयरधारकों के लिए लाभांश घोषित किया।

1945

5 सितंबर को हिन्दुस्तान अखबार के आकार में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ। अखबार बड़े आकार में छपने लगा।

1946

12 नवंबर को एचटी समूह के संस्थापक मदन मोहन मालवीय का निधन हुआ। जीडी बिड़ला बोर्ड के प्रमुख बने।



1950

2 अक्तूबर 1950 को साहित्यिक सामाजिक व सांस्कृतिक पत्रिका 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ, जिसे खूब पसंद किया गया।



1956

मास्ट हेड के नीचे 'द लीडिंग हिंदी डेली ऑफ इंडिया' लिखा जाने लगा और 1962 से हिंदी भाषा में 'हिंदी का सर्वश्रेष्ठ दैनिक'।

1957

के.के. बिड़ला प्रबंधक मंडल में शामिल हुए।

1960

साहित्यिक-सामाजिक पत्रिका 'कादम्बिनी' की शुरुआत हुई।



1964

बाल पत्रिका 'नंदन' की शुरुआत हुई। पहला अंक पं. जवाहर लाल नेहरू को समर्पित था। स्वर्ण जयंती वर्ष में पत्रिका नए कलेवर में आज भी जारी है।



1970

के. के. बिड़ला ने निदेशक मंडल के प्रमुख का कार्यभार संभाला।



1972



कनॉट प्लेस में कस्तूरबा गांधी मार्ग पर वर्तमान एचटी हाउस का निर्माण संपन्न हुआ।

1985

ऑफसेट प्रिंटिंग के कारण अखबार में छपाई की गुणवता में बड़ा सुधार हुआ। इसी दशक से रंगीन तस्वीरें दी जाने लगीं। पहली बार कंप्यूटर कंपोजिंग से संपादकीय पृष्ठ, मुखपृष्ठ व विज्ञापन छपा।

1986

डॉ. के. के. बिड़ला की सुपुत्री शोभना भरतिया निदेशक मंडल में शामिल हुईं।

4 अगस्त 1986 को पटना संस्करण शुरू हुआ, जो शीघ्र ही बिहार में सर्वाधिक प्रसार वाला अखबार बन गया।

14 अक्तूबर 1986 को लखनऊ संस्करण की शुरुआत।

1987

5 जुलाई को पहली बार ऑफसेट विधि से 'रविवासरीय' परिशिष्ट की रंगीन छपाई हुई।

1989

25 मई से हिन्दुस्तान 12 पृष्ठ का अखबार बन गया।

1999

हिन्दुस्तान टाइम्स ने 75वीं वर्षगांठ मनायी।



2004

लाइवहिन्दुस्तानडॉटकॉम वेबसाइट से ऑनलाइन दुनिया में कदम रखा।

2005

'हिन्दुस्तान' पेपर के कंटेंट को रीडिजाइन किया गया। पूरा अखबार रंगीन छपने लगा। सातों दिन अलग-अलग परिशिष्ट आने लगे।

हिन्दुस्तान टाइम्स को मुंबई से लॉन्च किया गया

एचटी मीडिया लि. कंपनी बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध हुई।

2007

'कादम्बिनी' बड़े आकार में छपने लगी।

एचटी मीडिया लि. ने अपना बिजनेस न्यूजपेपर 'मिंट' वॉल स्ट्रीट जर्नल के साथ मिल कर शुरू किया।



2008

एचटी मीडिया कंपनी के ई-वेंचर फायरफ्लाई ने shine.com नाम से पहले जॉब पोर्टल की शुरुआत की। सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट Desimartini.com शुरू हुई। 54242 के साथ मोबाइल स्पेस में भी प्रवेश किया।

2008

90 वर्ष की उम्र में के. के. बिड़ला का निधन हुआ।

शोभना भरतिया ने एचटी प्रमुख के रूप में कार्यभार संभाला।



2008

अंतर्राष्ट्रीय डिजाइन मानकों के अनुरूप अखबार के कंटेंट की रीडिजाइनिंग हुई।

अखबार को युवा जरूरतों से जोड़ते हुए 'तैयारी' नाम से दो पेज दिए गए। उत्तराखंड से अखबार की छपाई होने लगी।

2009

हिन्दुस्तान व अन्य हिन्दी प्रकाशनों को नई कंपनी 'हिन्दुस्तान मीडिया वेंचर्स लिमिटेड' के तहत लाया गया।

2010

पाठकों की जरूरतों को समझते हुए बाइलिंगुअल टेबलॉइड परिशिष्ट 'जानो इंगलिश' की शुरुआत हुई।

2011

12 अप्रैल को पाठकों की जरूरत और उनका हमसफर बनने के लिए एक बार फिर कंटेंट की रीडिजाइनिंग की गयी। 'तरक्की को चाहिए नया नजरिया अखबार' का दर्शन बना। दुनिया के सबसे बड़े डिजाइनर मारियो गार्सिया ने अखबार के कंटेंट को डिजाइन किया।

2011

महिला पत्रिका 'अनोखी' के साथ-साथ 'तन-मन', 'लाइफस्टाइल', 'रियल एस्टेट', 'मूवी मैजिक' और बाल परिशिष्ट 'नंदन' की शुरुआत हुई। 'नई दिशाएं' परिशिष्ट को भी नया रूप दिया गया। इसी वर्ष अनोखी क्लब की शुरुआत हुई, जिसे महिलाएं काफी पसंद कर रही हैं।

युवा और लाइव

युवाओं पर फोकस स्वतंत्र अखबार 'हिन्दुस्तान युवा' 24 मई 2012 को बिहार से प्रारंभ हुआ। 25 अगस्त 2014 से लखनऊ से भी प्रकाशित हो रहा है। 26 जुलाई 2013 से 'लखनऊ लाइव' की शुरुआत हुई। आज यह पटना, लखनऊ, रांची, कानपुर व मेरठ से भी प्रकाशित हो रहा है। यह मुख्य अखबार के साथ निशुल्क मिलता है।

कार्टून

अखबार के पहले नियमित कार्टूनकार शंकर थे। 60 के दशक में रवींद्र के कार्टून 'आजकल' शीर्षक से और फिर 25 जुलाई 1989 से सुशील कालरा के 'ताल बेताल' शीर्षक से छपने लगे। 90 के दशक के अंतिम वर्ष से 'फिलहाल' शीर्षक से सुधीर तैलंग का कार्टून शुरू किया गया। 2000 से राजेंद्र धोड़पकर के कार्टून 'जाहिर है' व 'कार्टून कोना' स्तंभ से आज भी जारी है।

प्रसार व पाठक संख्या

शुरुआत के कुछ समय बाद ही हिन्दुस्तान अखबार की प्रसार संख्या 11 हजार के करीब हो गयी थी। किसी हिंदी अखबार के लिए यह बड़ी बात थी। 60 के दशक तक यह संख्या अस्सी हजार और 90 के दशक में 4 लाख तक पहुंच गयी थी। वर्तमान में पाठक संख्या करीब 1 करोड़ 43 लाख है।


हिन्दुस्तान

सुधारों के लिए बड़े फैसले लेगी सरकार

तरक्की को चाहिए नया नजरिया